मूल्य 18/-
दिसम्बर 95
हिप्नोटिज्म विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
जीवन में सब कुछ प्राप्ति
सम्मोहन के द्वारा ही सम्भव
विश्व प्रसिद्ध बनिये सम्मोहन-
वशीकरण के माध्यम से
अद्वितीय सौन्दर्य सम्मोहन
द्वारा ही सम्भव. . .
भगवान शिव के ६०
सिद्ध सफल
प्रयोग
मात्र ३० दिनों में
सम्मोहनकर्ता
बनें

एक जनवरी और
दो जनवरी की दोपहर तक
सर्वथा मुफ्त : जीवन में पहली बार

2500 वर्षों में पहली बार

नववर्ष साधना शिविर

दिनांक : 01-01-1996 को

नया वर्ष गुरुदेव के संग हो, मस्ती भरा, आनन्द भरा, पुलकन और सिहरन भरा . . . एक अनोखा अन्दाज, एक अनोखा रंग, एक अजीब मस्ती और एक शानदार आलम. . . साथ में ही सभी साधकों को प्रदान की जायेगी

"सिद्धाश्रम राजयोग दीक्षा"

यों तो राजयोग के कई प्रकार हैं, पर "सिद्धाश्रम राजयोग दीक्षा" जीवन का स्वप्न है. . नववर्ष की सौगात है। राजयोग का तात्पर्य राजा की तरह रहना, समस्त दुःखों, विपदाओं से छुटकारा पाते हुए एक ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करना, पूरा वर्ष धन-सम्पदा, सुख-सौभाग्य के सुगन्धित, सुरभित वसन्त में श्वॉस लेना. . . सन् 1996 का प्रत्येक दिन मंगलमय हो, इसीलिए सम्पन्न होगा. . .

"सम्पूर्ण वर्ष मंगलमय प्रयोग"

ऐसा प्रतीत होगा, कि पूरे वर्ष भर प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक पल गुरुदेव साथ ही साथ हैं और यह दिव्यतम साधना सम्पन्न होगी पिछले **2500 वर्षों** में पहली बार . . .और घर जाते समय गुरुदेव की तरफ से एक **अद्वितीय उपहार** भी

साधक निम्न भोजन सामग्री जो शुद्ध घी से निर्मित है में से जो भी खाना पंसद करे उसकी व्यवस्था "फ्री" है . .

SANCKS
Paneer Tikka
Vegetable Pizza
Tandoori Salad
Vagetable Spring Rolls
Sweet & Sour Balls
Masala Vada

SALADS
Tossed Salad
Mixed Green Salad
Russian Salad
Cole Slaw
Aloo Peas Salad
Lobia Rajmah Salad

SOUPS
Veg. Sweet Corn.

PANEER
Shahi Paneer

VEGETABLES
Mutter Kaju Dry Masala
Gobi Kaju Korma
Seasonal Vegetables on Tawa

DALS
Chana Dal With Coconut

CHINESE
Sweet & Sour Vegetables
Vegetable Fried Rice
Haka Noodles

RICE
Navrattan Pulao

DAHI
Dahi Bhalla

BREADS
Stuff Parantha
Roomali Roti
Missi Roti
Pudina Parantha

SWEETS
Ras Malai
Ice Cream
Moong Dal Halwa

EXTRA SNACKS COUNTER
Gole Gappa, Chaat Papri
Coffee

शिविर स्थल : सिटी बेंकट , 17- I, नार्थ वेस्ट एवन्यू, पंजाबी बाग, (पंजाबी बाग क्लब के सामने), नई दिल्ली

समय : प्रातःकाल 01-01-96 को 9 बजे से शाम 7 बजे तक।

विशेष सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

★ क्या आप नया वर्ष का प्रथम दिन गुरुदेव के साथ नहीं मनायेंगे। ★ क्या राजयोग दीक्षा लेने से वंचित रहेंगे। ★ क्या इसके साथ चार दुर्लभ जीवन में पहली बार सम्पन्न होने वाले प्रयोगों में भाग नहीं लेंगे ★★★ फिर तो पूरा जीवन ही व्यर्थ है . . . पर हमें भरोसा है कि एक भी शिष्य इस अवसर से वंचित रहेगा ही नहीं . . . किसी भी हालत में नहीं रहेगा।

नियम : ★ साधना में भाग लेने वाले प्रत्येक साधक को पांच नये पत्रिका सदस्य बनाने जरूरी हैं। ★ केवल साधक और मात्र साधक ही इसमें भाग लेंगे। ★ पति-पत्नी दोनों हों, तो दोनों को पांच-पांच पत्रिका सदस्य बनाने होंगे। ★ साधक-साधिकाओं के अतिरिक्त अन्य किसी का भी प्रवेश निषिद्ध . . . पूर्णतः निषिद्ध है। ★ चाहे शिष्य कितना ही प्रिय हो, निकटतम हो, पर उसे पांच नये पत्रिका सदस्य बनाने तो अनिवार्य है ही, अन्यथा इस दीक्षा में प्रवेश वर्जित है, या 180/- प्रति सदस्य के पांच सदस्यों की धनराशि जमाकरा कर ही प्रवेश पा सकते हैं। साधक की वेशभूषा पहिने, और सम्बन्धित नियम का कड़ाई के साथ पालन होगा ।

अजय कुमार उत्तम 'निखिल'

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

वर्ष 15 अंक 12
दिसम्बर 1995 पृष्ठ 80

प्रधान संपादक
नन्दकिशोर श्रीमाली
सह सम्पादक मण्डल
डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई
संयोजक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
वित्तीय सलाहकार
अरविन्द श्रीमाली
मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : 011-7182248
फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0)
फोन : 0291-32209
फेक्स : 0291-32010

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, सी- 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

विषय सूची

साधना

सद्गुरुदेव

हिप्नोटिज्म

दीक्षा

विशेष

स्तम्भ

यात्रा

प्रार्थना

संमोहनेन भवति परतत्त्वलाभः,
सर्वं चराचर जगद्खलु तद्वशित्वं।
नाना मनोरथफलानि सुनिश्चितानि;
संमोहनाय राड् वै निखिलं कृष्णं नमामि।।

सम्मोहन विद्या से सम्पन्न व्यक्ति सभी आध्यात्मिक और भौतिक सुख को सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकता है, सभी जड़ तथा चेतन जीव मात्र उसके वश में रहता है, उसकी सभी मनोकामना स्वतः पूर्ण होती ही है। सम्मोहन सम्राट गुरुदेव निखिल वर्तमान में कृष्ण की तरह वन्दनीय और सेवनीय हैं।

कस्तूरी कुण्डली बसै . . .

"गुरु" ... शब्द उच्चारण करते ही पूरे शरीर में विद्युत तरंग सी प्रवाहित हो जाती है ... यदि वह ''शिष्य'' हो तो। गुरु शब्द की व्याख्या "गु" एवं "रु" के योग और अंधकार की समाप्ति तक ही सीमित कर दिया गया, पर यह स्पष्ट नहीं किया गया, कि गुरु है कहां ... और वह कौन से अंधकार को दूर करता है? गुरु कहीं नहीं वह तुम्हारे भीतर है, प्रत्येक के; 99% गुरु तो प्रत्येक के अन्दर है, सिर्फ 1% गुरु ही बाहर है ... और वह 1% गुरु जो बाहर है, वह तुमसे तुम्हारी पहिचान कराता है ... वह तो एक दर्पण की भांति है जिसमें तुमने अपनी छवि देखी ... और उसे पाने के लिए दौड़ रहे हो ... तुम्हें दौड़ने की आवश्यकता नहीं और न तो आवश्यक है, कि तुम धनवान हो, संन्यासी हो या साधु हो ... आवश्यकता है उस 1% प्रतिशत गुरु की, जो ज्ञान का एक पुञ्ज है, जिसके ज्ञान-रश्मि के समक्ष रवि-रश्मि भी गौण हो जाती है ... जो हमारे जीवन के अंधकार काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहं ... को नष्ट करता है; ठीक उसी भांति जिस प्रकार जल का प्रवाह शनैः-शनैः चट्टान को काटता जाता है, उसे पता भी नहीं चलता और जल का प्रवाह उसे अपने इच्छित अनुरूप में ढाल लेता है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य के विकारों को प्रेम भाव से शनैः-शनैः नष्ट कर ज्ञान का दीप प्रज्वलित करते हैं ... उस एक प्रतिशत गुरु को अपने अन्दर समाहित करने की आवश्यकता है ... **प्रश्न यह उठता है कि उस ज्ञान की हिमालय रूपी विराटता को अल्प समय में अपने अन्दर कैसे उतारें** . . . उसे उतारा जा सकता है, समाहित किया जा सकता है **'ध्यान' के माध्यम से, साधना के माध्यम से, प्रेम के माध्यम से. . . और उससे भी आसान है, उनकी पादुका की नित्य पूजा अराधना करके** . . . और तब तुम उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हो जिसकी तुम्हें चाह है।

(इसके लिए पूज्य गुरुदेव ने ''नित्य गुरु पूजन'' नाम से 30 मिनट की कैसेट तैयार की है, जिसके माध्यम से आप इस पगडण्डी पर चलकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।)

हम आपके साथ हैं—

- ऑर्डर जोधपुर के पते पर ही भेजिये।
- अब टेलीफोन की व्यवस्था सुधार दी है, आप पत्र की अपेक्षा टेलीफोन पर आदेश दीजिये, जिससे उसी दिन आपकी चाही हुई सामग्री भेजी जा सके।
  जोधपुर : फोन : 0291-32209, 32010
- सामग्री भेजने और आप तक पहुंचने में लगभग 30-40 दिन लग जाते हैं, इसलिये अभी से सामग्री का आदेश टेलीफोन से या पत्र से भेज दें।
- साधना में असफलता मिलने पर निराश न हों, एक बार फिर प्रयत्न करें।
- पत्रिका के बारे में सुझाव, 'साधक साक्षी हैं', स्तम्भ या अन्य पत्रिका से सम्बन्धित पत्र दिल्ली के पते पर भेजें।

: पता :

306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

कुछ लोगों को पत्रिका कार्यालय द्वारा अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए शीर्षक दिया गया – "जीवन का आन्तरिक उल्लास : पूज्यपाद गुरुदेव" इस विषय पर कार्यालय को अनगिनत पत्र प्राप्त हुए और यह निर्णय लेना कठिन हो गया, कि इस अंक में किसके विचारों को प्रकाशित किया जाय, फिर सम्पादक मण्डल ने निर्णय लिया, कि एक-एक कर समय-समय पर सभी लोगों के विचारों को प्रकाशित किया जायेगा। प्रस्तुत है इस अंक में दो विशिष्ट लोगों के विचार–

आज मैं अपने आप से अलग होकर जब अपने जीवन का निरीक्षण करता हूं, तो एक चलचित्र की तरह ही मेरा जीवन मेरी आंखों के सामने मूर्तरूप धारण कर लेता है। आज फिर मैंने अपने बीते हुए दिनों पर नजर डाला, तो पाया कि आज मैं जो कुछ भी हूं पूज्यपाद गुरुदेव के कारण ही तो हूं। मैं जब तक उनसे नहीं मिला था, तब तक तो मैंने यह सोचा भी नहीं था, कि मेरा अपने आप में अलग से भी कोई वजूद है, क्योंकि पूर्व में तो मैं हमेशा वही करता रहा जो मेरे सामने वाले ने कहा, हमेशा सामने वाले की खुशी को ही अपनी खुशी समझता और उसे ही अपने जीवन का उल्लास मान बैठा था।

इस प्रकार मैं जीवन के उल्लास का अर्थ समझ ही नहीं सका था, क्योंकि औरों को उल्लासित करने के प्रयास में मैं अपना आन्तरिक उल्लास भूल बैठा था ...... यही कारण है, कि एक रीतापन, एक अनबुझी सी प्यास का सदैव मुझे एहसास बना रहता था और धीरे-धीरे मैं स्वयं से भागने लगा, अपने आप का सामना करने से डरने लगा, क्योंकि जब भी एकान्त मुझे मिलता, तो मेरे अन्दर से उठी एक करुण चीख मुझे भयभीत कर जाती, अतः मैं दो-चार लोगों के साथ ही रहने का प्रयास करता।

मैंने अपनी यह बात जब दोस्तों को और घरवालों को बतायी, तो उन्होंने इसे उम्र का तकाजा बताकर मेरा विवाह कर दिया ..... और फिर मैं अपने आप को और भी अधिक व्यस्त रखने लगा। मेरी पत्नी ने शायद मेरे मनोभाव को समझ लिया और मुझे समझाने का प्रयास भी किया, लेकिन सभी प्रयास निष्फल हो गये .....

..... और जब भी एकांत होता, वह करुण चीख मुझे भयभीत कर जाती।

तभी एक दिन मैं दिल्ली से बम्बई हवाई जहाज द्वारा यात्रा कर रहा था, कि मेरी बगल की सीट पर आ कर एक व्यक्ति बैठे। मुझे पहले तो उनकी श्वेत वेशभूषा ने आकर्षित किया और फिर उनके व्यक्तित्व ने भी। अपनी आदत के
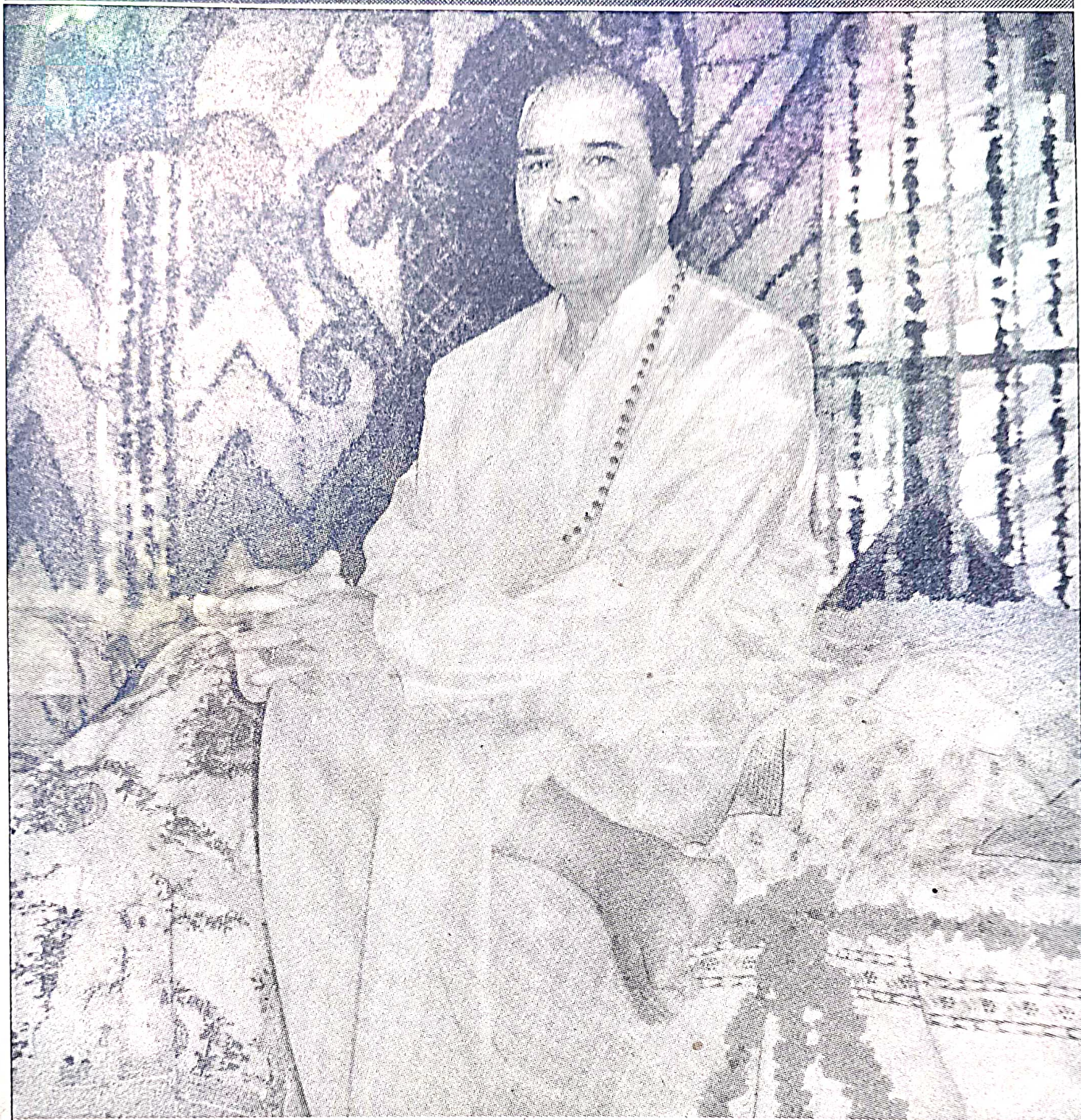
जीवन का आंतरिक उल्लास

पूज्यपाद गुरुदेव

अनुसार ही मैंने उनसे बातचीत करने का प्रयास किया, तो उन्होंने अति सहज और सौम्य शब्दों में मेरी बातों का उत्तर दिया, लेकिन उन्हें जोधपुर तक ही जाना था, जोधपुर आने वाला था, कि मैं बोल पड़ा — 'आपके जाने के बाद मैं अकेला हो जाऊंगा .... डरता हूं अपने आप से मैं।'

मेरी बात सुनकर वे हल्का सा मुस्कराये और बोले — ''तुमने अपने आप को पहचाना ही नहीं, यदि तुम स्वयं को जान लो, तो तुम्हारा भय समाप्त हो जायेगा, प्रयास करो अपने अन्तस् को उल्लासमय करने का, जिस दिन तुम अपने आप को उल्लासित कर दोगे, तुम्हारा भय समाप्त हो जायेगा।''

यह कह कर वे जहाज से उतरे और चले गये, मैं भी कुछ देर बाद बम्बई पहुंच गया, लेकिन उनके शब्द बराबर मेरे मन-मस्तिष्क में गूंजते रहे ..... जिसके परिणामस्वरूप मैं विचारमग्न रहने लगा, क्योंकि अब मैंने 'अपनी' तलाश करनी शुरु कर दी थी।

और उस समय जब मैंने अपने जीवन को, अपने चारों ओर के परिवेश को देखा, तो पाया कि आज तक मैं जो भी खुशी के साधन जुटाता रहा, वे सब कितने व्यर्थ हैं।

— नहीं रोक सका मैं अपने आप को उनसे दोबारा मिलने से, क्योंकि मेरी आन्तरिक चीख का अर्थ मुझे समझ में आने लगा और मैं समझ सका, कि ''मीरा'' क्यों बावरी बन कर महलों से नीचे आकर घूमती फिरी, क्योंकि उसे भी तलाश थी अपने आन्तरिक उल्लास की, तभी तो वह कहती रही —

''जब से तुम बिछुड़े प्रभु मेरो, कबहु न पायो चैन''

— और मैंने निर्णय कर लिया जोधपुर जाने का। जोधपुर पहुंचकर जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से मिला, तो एक असीम आनन्द, एक तृप्ति से परिपूर्ण हो गया; समाप्त हो गया मेरे मन का रीतापन, बुझ गयी मेरे मन की प्यास और शान्त हो गयी मेरे अन्तस् में गूंजती वह करुण चीख।

खिल गया मेरे मन में उल्लास का कॅवल जिसकी सुवास ने मेरे अन्तस् को आप्लावित कर दिया .... और फिर मुझे अपने अकेलेपन से कभी डर नहीं लगा, क्योंकि मैंने पा लिया है अपने जीवन का आन्तरिक उल्लास पूज्य गुरुदेव के रूप में।

— जो भा गये मेरे मन को,
— जो रम गये मेरे हृदय में,
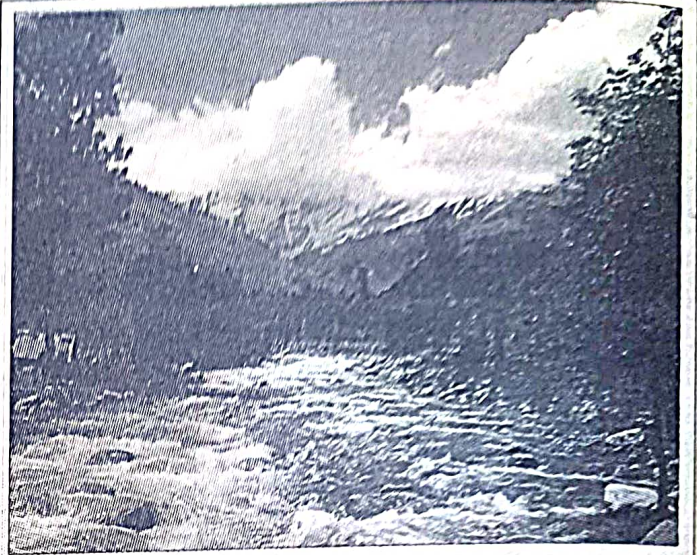
जिस दिन मैंने पूज्यपाद की वाणी पहली बार सुनी .... मेरे हृदय वीणा के सभी तार झंकृत हो उठे और उसी क्षण से मैं गुरुमय हो गया। मैं कोई भी कार्य करता हूं पूर्ण उल्लास के साथ करता हूं, मेरे अन्तस् में गुरुचरणों से प्रवाहित हुई उल्लास-गंगा अविरल बह रही है।

— जो बस गये मेरी प्रत्येक श्वांस में,
— जो छा गये मेरे रोम-रोम पर,
— जो अंकित हो गये मेरे मानस पटल पर।

ऐसा होते ही मेरे हृदय में गुरु के प्रेम-स्पर्श से जो कमल खिला, उसके सुगन्ध में पा लिया मैंने अपनी 'निजता' को ...... और अब मेरे सारे शब्द, मेरा सारा प्रयास अपनी इस सुगन्ध को स्थायी बनाने के लिए होता है, क्योंकि मुझे मेरे प्यारे गुरुदेव ने समझा दिया है, कि इत्र को दूसरों को प्रभावित करने के लिए अपनी छाप दूसरों के हृदय पर डालने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि इत्र जहां भी रखा जाता है, आसपास का पूरा वातावरण सुवासित हो ही उठता है — और तुम्हें भी सिर्फ अपने अन्तस् की सुगन्ध को स्थायी बनाये रखने का प्रयास करना है, जब तक तुम ऐसा कर सकोगे तुम अपने साथ ही साथ सामने वाले के अन्तस् में भी उल्लास का सञ्चार करते रहोगे।

इसीलिए तो मैं सारी चिन्ताएं बिसरा बैठा हूं।

इसीलिए तो आज मैं अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपनी आंखों के सामने स्पष्ट रूप से देखकर विश्लेषण करने में सक्षम हो सका हूं।

— मैंने पा लिया है अमोलक मोल, मैंने समझ लिया है मीरा की वाणी —

''मीरा की तब पीर मिटेगी, जब बैद सांवरिया होय''

— ठीक ही तो कह रही है मीरा — मेरी भी तो अन्तस् की पीड़ा तभी मिटी, जब मैंने वैद्य के रूप में पा लिया अपने प्राणों से भी प्यारे गुरुदेव को।

तभी तो मैं आज यह घोषणा कर रहा हूं, कि जीवन का आन्तरिक उल्लास केवल और केवल मात्र 'पूज्यपाद गुरुदेव' हैं।

आप सब भी तो अपने से दूर जा बैठे हो, एक बार सिर्फ एक बार मेरे कहने पर मेरे प्राणप्रिय का सान्निध्य प्राप्त करके देखो, तो आप सभी यही बात कहने लगोगे, जो मैंने कही है।

— दिवाकर चन्द्रेश, बम्बई

★★★★

वह मधुरिम क्षण, जिसमें उल्लास, आह्लाद, उमंग, जोश मस्ती कितना कुछ भरा था, जिसे पाने के लिये शायद कल्पना भी कल्पना करती, तो उसको सृजित नहीं कर पाती, फिर वे क्षण जब साकार हो उठे तो मैं तो पागल सा हो गया, विश्वास नहीं होता था, भाग्य पर रश्क होने लगा — उसका कैसे वर्णन करूं, कर भी कैसे सकता, क्योंकि वह तो एक अनुभूति थी जिसे सिर्फ एहसास के माध्यम से ही अनुभव कर सकता था और उसे सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है। ऐसे क्षण, जिन क्षणों से विशेष मधुर स्मृति जुड़ जाती है, वे साधारण होते हुए भी विशेष छाप छोड़ जाते हैं और यदि वे क्षण 'पूज्यपाद गुरुदेव' के साथ के क्षण हों, तो जीवन की पूंजी बन जाते हैं, अमूल्य निधि के रूप में, धरोहर के रूप में संजो लिए जाते हैं।

कितना परिवर्तित है आज का दिन उस दिन से जिस दिन मैं गुरुदेव से मिलने आया था, हताश, थका हुआ, रसहीन, ठूंठ सा; सोचा था चलो जीवन तो रीता है, पर रीतापन का एहसास लिये हुए भी भरा हुआ ही था, जिसमें हर प्रकार के विचार थे, तर्क कहें या कुतर्क; हर प्रकार की आलोचनाओं में प्रथम, वहां पहुंच कर भी कैसे खाली हो जाता, उनका सामीप्य बार-बार मेरे अन्दर चोट कर रहा था, मेरे विचारों को भ्रमित कर देता था उनका उत्तर और मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था, कि मेरा भी काट्य है। उनके उत्तरों पर मैं किसी प्रकार का तर्क नहीं दे पा रहा था। प्रश्न थे भी साधारण से।

उन्होंने पूछा — 'क्या करने आये हो?'

मैंने उत्तर दिया — 'मैं तो यूं ही आया हूं।'

तो उन्होंने कहा — 'संसार में तो कोई भी यूं ही नहीं आया है, कोई न कोई प्रयोजन है, फिर तू कैसे यूं ही आया है?'

इतना कह कर वे चले गये और मैं स्वयं के विचारों में उलझता चला गया, वास्तव में उन्होंने सत्य ही तो कहा है, कि मैं बिना प्रयोजन कैसे आ सकता हूं, यह सोच-विचार चल ही रहा था, कि गुरुदेव के प्रवचन की आवाज आने लगी.... और मैं प्रवचन सुनने लगा; वे कह रहे थे — ''तुम्हारा जन्म कोई अलौकिक घटना नहीं है, यह तो एक संयोग मात्र है — कि तुम्हारा जन्म हुआ है, तो कुछ न कुछ लक्ष्य तो होगा ही, कुछ न कुछ प्रयोजन तो है ही।''

ये बातें मैंने कई बार सुनीं, कई जगह पढ़ीं, लेकिन कभी इस तरह से एहसास नहीं किया, कि इस प्रकार की बातें केवल दार्शनिक न होकर, चोट भी कर सकती हैं।

इन्हीं बातों पर विचार करता हुआ मैं सोचता ही चला गया; मेरी तन्द्रा तब टूटी जब प्रवचन से पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद की ध्वनि सुनाई दी वे आशीर्वाद दे रहे थे —

''मैं आपको आशीर्वाद देता हूं, कि आप अपने जीवन के पथ को पहचान कर उस पर तीव्र गति से बढ़ें और अपने लक्ष्य को पूर्णता से प्राप्त कर सकें।''

और मैं इसी आशीर्वाद को सुनता हुआ, पुनः अपने विचारों में खोता चला गया।

मैं स्वयं में अनुभव करने लगा कि वास्तव में परमात्मा ने सृष्टि में कुछ भी तो व्यर्थ नहीं रचा है; अगर मेरा जन्म हुआ है, तो कुछ न कुछ तो अर्थ होगा ही, पूज्य गुरुदेव के शब्द और प्रवचन माला को सुनता हुआ मैं समझ ही नहीं पा रहा था, कि उनके द्वारा जिस आनन्द, उल्लास का वर्णन किया गया है, वह कैसा है? कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

उनके प्रवचनों को समझने के लिए मुझे अपनी तार्किक बुद्धि अलग करनी पड़ी; फिर मैंने अनुभव किया, कि वास्तव में जीवन में किसी चीज को तभी प्राप्त किया

जा सकता है, जब जगह हो तो। वह उल्लास, वह शांति जिसे पाने के लिए मैं अपने आप को ही खोजता रहा, वह तो मिलना संभव ही नहीं हो पा रहा था, क्योंकि मेरे तार्किक विचार मुझे अपने अहं से झुकने ही नहीं दे रहे थे और यही विचार मुझे दूर करते रहे अब तक मुझे मेरे ही लक्ष्य से।

मैं पुनः गुरुदेव से मिला और पूछा – 'आप तो सर्वज्ञाता हैं, आप ही बतायें, कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? कहां मुझे पहुंचना है?'

उन्होंने कहा – ''जिस दिन तुम रिक्त हो जाओगे, उस दिन ही तुम सब कुछ प्राप्त कर लोगे, जो तुम्हारा लक्ष्य है, तुम्हें जहां पहुंचना है और चाहो तो मार्गदर्शक बना लो, जो तुम्हें वहां तक पहुंचा सके।''

मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की – 'गुरुदेव अब आप ही मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुंचा सकते हैं, आप ही मुझे उस क्रिया का ज्ञान करवा सकते हैं, जिससे मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं।' यद्यपि यह मेरे तार्किक स्वभाव के विपरीत हो रहा था, कि मैं किसी व्यक्ति से कहूं, कि वह मुझे ज्ञान दे, क्योंकि अहं तो बड़ी सफाई से तर्क दे देता है, कि यह क्या कर रहे हो, इसकी जरूरत क्या है – क्योंकि वह अत्यन्त कुशल है, स्वयं के अस्तित्व को बचाने में क्योंकि जब उसका समापन होता है, तो अत्यधिक पीड़ा और वेदना का एहसास होता है; जिस प्रकार से सर्प को केंचुल उतारने से वेदना होती है; लेकिन केंचुल उतार कर वह फिर से नयी कोमल, शुद्ध देह प्राप्त कर लेता है; उसी प्रकार अहं की समाप्ति होने पर, व्यक्ति को निर्मल और शुद्ध 'आत्म-देह' की प्राप्ति होती है, और जब पवित्र आत्म-देह प्राप्त हो जाती है तब गुरु उस व्यक्ति को 'दीक्षा' प्रदान कर नव जीवन के लिए मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। दीक्षा का आध्यात्मिक अर्थ है – पुनर्जन्म, नवजीवन देना, पुराने जर्जर विभिन्न प्रकार के कचरे से भरे हुए अन्तस् को साफ कर नयी स्वच्छ जगह

''अपने आप से भागो नहीं, यदि स्वयं से दूर हटोगे फिर तुम कुछ भी नहीं पा सकोगे, भौतिक रूप से पूर्ण होते हुए भी आन्तरिक रूप से रीते रह जाओगे, अपने आप से परिचय कर लो'' – गुरुदेव के प्रवचन के इस अंश ने ही तो बदल दी मेरे जीवन की धारा, विषाद मिटा कर उल्लास के अमृत से सींच दिया मेरे अन्तस् को।

बनाना . . . और यही मेरे साथ हुआ।

मैंने भी अपने तार्किक विचारों को छोड़ा और दीक्षा लेकर उस सम्बन्ध को स्थापित किया, जो मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुंचाने में समर्थ था।

... और उस क्षण स्थापित हुआ सम्बन्ध मुझे असीम शांति में ले गया, मैं चिंता मुक्त हो गया, मेरा मस्तिष्क निर्विचार हो चला और मेरा हृदय पुलकन से आपूरित हो सका; मैं अनुभव कर रहा था, कि वास्तव में आनंन्द क्या है! आह्लाद क्या है!

और उस आनन्द में निमग्न होने की तृप्ति मैं आज भी विस्मृत नहीं कर पा रहा हूं, क्योंकि यही तो वह क्षण था, जब मैं अत्यन्त पुलक के साथ अपनी मस्ती में भावविभोर हो रहा था, एहसास कर रहा था, कि उल्लास क्या है! उल्लास का अर्थ क्या है!

समझ तो आ रहा था, कि वह क्षण सिर्फ मेरा क्षण था, किसी का हस्तक्षेप नहीं था, न मेरे अहं का, न विचारों का; वह मेरा आन्तरिक क्षण जिसे मैं कह सकता था, कि यह मेरे जीवन का उल्लासमय क्षण है, मेरे जीवन का लक्ष्य है, मेरी आंतरिक यात्रा है – मेरे जीवन का वह स्वर्णिम क्षण था, जब मैं 'पूज्य गुरुदेव' की कृपा से अपने जीवन के आन्तरिक उल्लास को समझ सका, उसे एहसास कर सका – मेरे जीवन का वह महत्त्वपूर्ण पक्ष, जो गुरुदेव के साथ कुछ क्षण को ही व्यतीत हुआ है, कितना अमूल्य है, कितना जीवन्त है। अब एहसास करता हूं, कि यहां का आनंद, यहां जीवन जीने का अर्थ है – अहं को मार दिया जाय, अहं को खत्म कर दिया जाय, संसार में जीने से ज्यादा आनंद यहां मरने में आने लगा है 'स्वयं' को छोड़ने में आने लगा है।

– और जब मैंने स्वयं को छोड़ दिया, तो परिपूर्ण हो गया गुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने प्राप्त कर लिया, जीवन का आन्तरिक उल्लास।

– रविशंकर बन्द्योपाध्याय, बंगाल

भगवान सदाशिव के 60 सिद्ध सफल प्रयोग

महाशिवरात्रि का पर्व प्रत्येक के लिए कुछ न कुछ प्राप्त कर लेने का पर्व है। इस दिन तंत्र से सम्बन्धित लोग भगवान सदाशिव की तंत्र के माध्यम से पूजा करते हैं, अघोरियों के इष्टदेव भगवान सदाशिव के अघोर स्वरूप की अघोरी पूजन करते हैं तथा गृहस्थ इस दिन सामान्य विधि-विधान से पूजन कर व्रत आदि सम्पन्न करते हैं। भगवान सदाशिव इस दिन अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं और प्रत्येक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

इसी दिव्य अवसर पर आपके लिए ये साठ सिद्ध सफल प्रयोग प्रस्तुत हैं, जो अचूक हैं, जिनसे आपकी इच्छानुसार कार्य सम्पन्न होगा ही।

विश्वासु मणि मुद्रिका

1. इस मुद्रिका को एक माह तक धारण करने के पश्चात नदी में प्रवाहित करने से व्यक्ति का व्यक्तित्व अत्यन्त सम्मोहक बन जाता है, जिससे उसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है।
2. यह मुद्रिका सौन्दर्य प्रदायक भी है। इसे धारण करने से व्यक्ति के सौन्दर्य में निखार आ जाता है।

   इस मुद्रिका को महाशिवरात्रि वाले दिन 5 बार '**ॐ नमः शिवाय**' का जप कर धारण करें और उसे 21 वें दिन नदी में प्रवाहित कर दें।
3. यदि किसी को अपना विश्वास दिलाना है, तो इस मुद्रिका पर 23 दिन तक निम्न मंत्र का 11 बार जप करें—

मंत्र

।। ॐ शं शिवात्मने नमः ।।

फिर नदी में विसर्जित कर दें, तो आप उसे अपना विश्वास दिलाने में समर्थ होंगे।

न्यौछावर— 75/-

चौरंगी गुटिका

1. इस गुटिका को धारण करने वाले व्यक्ति में वाक् शक्ति स्वतः प्रभावी हो जाती है। इस गुटिका को

शिवरात्रि 17-02-96 को तो है ही पर शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव से सम्बन्धित प्रयोग फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पक्ष एकादशी तक सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार इस वर्ष शिवरात्रि पर्व 12-02-96 से 29-02-96 तक है। और जो इन दिनों में इन प्रयोगों में से कम से कम 30 प्रयोग भी कर लेता है, वह तो पूर्ण शिवमय हो ही जाता है, अद्भुत सौभाग्यशाली, अद्वितीय कुबेरवत् . . .

शिवरात्रि के दिन मात्र 5 बार गुरु मंत्र जप करके 24 घंटे तक धारण कर होलिका की अग्नि में डाल दें।

2. यदि शत्रु विरोध कर रहे हों, तो यह गुटिका शत्रु का नाम लेकर नदी में प्रवाहित करने पर वे शांत हो जाते हैं।
3. इस गुटिका को अपने पास रख कर व्यक्ति जिस किसी कार्य के लिए जायेगा, उसमें वह अवश्य ही सफल होगा। इस गुटिका को काम पर जाते समय रास्ते में ही किसी चौराहे पर गिरा दें।

न्यौछावर – 84/-

जड़कुल

1. जड़कुल के सामने शिवरात्रि के दिन अपने शत्रु का नाम लेकर किसी निर्जन स्थान पर डालने से शत्रुभय समाप्त हो जाता है।
2. यदि किसी के ऊपर 'ऊपरी बाधा' का प्रकोप है, तो उसके सिर के चारों ओर तीन बार घुमा कर जड़कुल को किसी पीपल के वृक्ष के नीचे दबाने से ऊपरी बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।
3. जड़कुल के सामने जिसका वशीकरण करना हो, उसका नाम लेकर आक के पौधे के नीचे दबाने से वह व्यक्ति वशवर्ती हो जाता है।

न्यौछावर – 63/-

कालेन्द्री

1. कालेन्द्री पर 21 बार '**ॐ नमः रुद्रात्मने**' का 11 दिन तक जप करने से मानसिक आनन्द की अनुभूति होती है। ग्यारह दिन बाद इसको नदी में प्रवाहित कर दें।
2. आध्यत्मिक क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए कालेन्द्री पर 51 बार निम्न मंत्र का जप करके किसी शिव मंदिर में रख दें।

मंत्र

।। ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः।।

3. यदि किसी साधना में सफलता नहीं मिल रही है, तो उस साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए

कालेन्द्री को हाथ में लेकर 'गुरु मंत्र' "**ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः**" का 11 बार जप करें, फिर इसे उस साधना को सम्पन्न करते समय साथ में रखें और साधना सामग्री के साथ ही नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 135/-

जोगरूपा

1. जोगरूपा को किसी मंदिर में तुलसी के पौधे के सामने रख कर 7 बार निम्न मंत्र का जप करके मंदिर में चढ़ाने पर घर में शांति रहती है।

   मंत्र

   ।। ॐ शं सौख्याय ते नमः ।।
2. यदि घर में कलह का वातावरण निर्मित हो रहा हो, तो जोगरूपा तोड़कर नदी में प्रवाहित करने पर घर में शांति स्थापित होती है।
3. यदि कार्यालय में आपको तनाव की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है, तो इस गुटिका पर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें।

   मंत्र

   ।। ॐ शं सर्व शिवाय नमः ।।

   सोमवार के दिन ऑफिस में अपने साथ रखें और उसी दिन किसी चौराहे पर डाल दें।

न्यौछावर– 45/-

केरविणी

1. यह विद्यार्थियों के लिए अति श्रेयस्कर है, इस पर ध्यान को एकाग्र करते हुए पांच मिनट तक '**ॐ**' का गुंजरण करें, 11 दिन ऐसा करने के बाद इसे किसी निर्जन स्थान पर डाल दें। मानसिक एकाग्रता बढ़ती है।
2. शवासन करते समय यदि मस्तिष्क निर्विचार नहीं हो रहा हो, तो केरविणी को हाथ में लेकर इस मंत्र "**ॐ निं निरञ्जनाय शिवाय नमः**" का 21 बार जप करने से यह मस्तिष्क को निर्विचार करने में सहायक सिद्ध होती है। इसका प्रयोग पांच बार करने के बाद नदी में विसर्जित कर दें।
3. अनिद्रा के रोगी यदि इसे सिराहने रखकर लेटें और 28 दिन तक पांच बार '**ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ**' मंत्र का जप करें, फिर घर से दूर पश्चिम दिशा में फेंक दें, लौटते समय मुड़ कर न देखें, तो यह रोग समाप्त हो जाता है।

न्यौछावर– 50/-

सिफला

1. तीन सिफला को लेकर '**ॐ त्रिगुणात्मने नमः**' मंत्र का 5 बार जप कर दक्षिण दिशा में फेंक दें और पीछे मुड़ कर देखें नहीं, तो इससे शत्रु बाधा से राहत मिलती है।
2. दो सिफला को लेकर लाल कपड़े में बांध कर चौराहे पर रात्रि के समय रखने से घर में लक्ष्मी आती है।
3. यज्ञादि करते समय पांच सिफला से आहुतियां डालने पर धन, धान्य, सम्मान आदि की प्राप्ति होती है।

न्यौछावर – (एक सिफला) 25/-

कुंडला

1. यदि बार-बार गर्भपात की स्थिति बन रही है, तो गर्भिणी को 25 दिन तक कुंडला धारण करायें, 26वें दिन इसे नदी में प्रवाहित कर दें, गर्भ ठहरता है।
2. प्रसव में तकलीफ हो, तो कुंडला को प्रसवासन्न स्त्री के चारों ओर तीन बार घुमा कर तिराहे पर फेंक दें, प्रसव आसान होगा।
3. यदि स्त्री गर्भधारण में सक्षम है, परन्तु फिर भी गर्भधारण नहीं हो रहा है; तो '**ॐ शं सं प्रियाय शिवाय नमः**' मंत्र का 21 बार कुंडला के सामने जप करके इसे किसी निर्जन स्थान पर मिट्टी में दबा दें, तो वह गर्भ धारण कर सकेगी।

न्यौछावर– 116/-

मनमोहिनी मुद्रिका

1. यदि कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा है, तो मनमोहिनी मुद्रिका के सामने उस कार्य का ध्यान कर 11 बार निम्न मंत्र का जप कर, इसे साथ में रखकर ले जायें और रास्ते में पड़ने वाले किसी नदी, तालाब, नहर

या मंदिर में डाल दें।

मंत्र

।। ॐ शं सर्व सिद्धये नमः ।।

2. कोई आपके मन को भा गया है, लेकिन वह आपकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा है, तो उसका नाम एक लाल कपड़े पर लिखकर यह मुद्रिका उसमें बांधें और उसे किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।
3. स्वयं में आकर्षण उत्पन्न करने के लिए इस मुद्रिका के सामने 11 बार '**ॐ शं स्व संमोहनाय शिवाय नमः**' मंत्र का जप करें। होलिका दहन के समय यह मुद्रिका अग्नि में डाल दें।

न्यौछावर– 90/-

गौरजा

1. यदि किसी लड़की का विवाह नहीं हो रहा है, तो गौरजा पर 21 बार निम्न मंत्र का जप करते हुए 21 लाल पुष्प समर्पित करें, फिर इसे जल में प्रवाहित कर दें या शिव मंदिर में चढ़ा दें–

मंत्र

।। ॐ गं गिरिजा प्रियायै नमः ।।

2. इच्छित वर प्राप्ति के लिए गौरजा पर 5 बार इस मंत्र का जप करते हुए पीले कनेर के पुष्प चढ़ाने पर इच्छित वर की प्राप्ति होती है–

मंत्र

।। ॐ शं ईप्सितं वरं देहि देहि ।।

3. वर को अपने मनोनुकूल करने के लिए उत्तर दिशा की ओर मुख कर किसी शिव मंदिर में बैठकर 101 बार जप करें, मंत्र जप के समय गौरजा को दायें हाथ की मुट्ठी में दबा लें–

मंत्र

।। ॐ पं परमीक्षितं कुरु कुरु स्वाहा ।।

मंत्र जप के पश्चात गौरजा को मंदिर में चढ़ा दें।

न्यौछावर– 60/-

रत्न सारला

1. यदि आप शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं, लेकिन फिर भी आपको कमजोरी का एहसास हो रहा है, तो रत्न सारला पर इस मंत्र का 11 बार जप करके इसे किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

।। ॐ पं पौरुषप्रदाय शिवाय ते नमः ।।

2. यदि आप रत्न सारला के समक्ष 51 बार 7 दिन तक निम्न मंत्र का जप करें, तो आप फिर से नवयौवन की स्फूर्ति प्राप्त करने लगेंगे। अगले दिन इसे आप नदी में प्रवाहित कर दें–

मंत्र

।। ॐ कं कामात्मने नमः ।।

3. यदि आपमें उमंग, जोश और उत्साह की कमी है, तो रत्न सारला पर 21 बार '**ॐ शिव शक्ति रूपाय नमः**' मंत्र का जप करते हुए 21 लौंग चढ़ायें, फिर रत्न सारला व लौंग को नदी में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से आप अपने अन्दर उत्साह का अनुभव करने लगेंगे।

न्यौछावर– 125/-

पारद मुद्रिका

1. पारद मुद्रिका को तीन माह तक धारण करने से आपका शरीर आकर्षक बनता है। तीन माह के पश्चात् किसी को दान में दे दें।
2. पारद मुद्रिका के सामने '**ॐ नमः पारदेश्वराय विभवाय नमः**' मंत्र का 11 बार जप कर, दायें हाथ की किसी भी उंगली में 17 दिन तक पहनने से रोग मुक्ति होती है। 18 वें दिन शनि का दान लेने वाले को दे दें।
3. पारद मुद्रिका पहनने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्मोहक हो जाता है, तथा उसके प्रभाव में आने वाले व्यक्ति उससे प्रभावित होते ही हैं। इसे आप 45 दिन तक धारण कर, किसी भिखारी को 46 वें दिन दान में दे दें।

न्यौछावर–80/-

एकमुखी रुद्राक्ष (मधुरूपेण)

1. इस रुद्राक्ष को शिवरात्रि के दिन भगवान सदाशिव का पूजन कर धारण करने वाले व्यक्ति के जीवन में धन, धान्य की कमी नहीं रहती है। सवा माह तक धारण करने के पश्चात् शिव मंदिर में चढ़ा दें।
2. व्यापार में उन्नति के लिए एकमुखी रुद्राक्ष के सामने
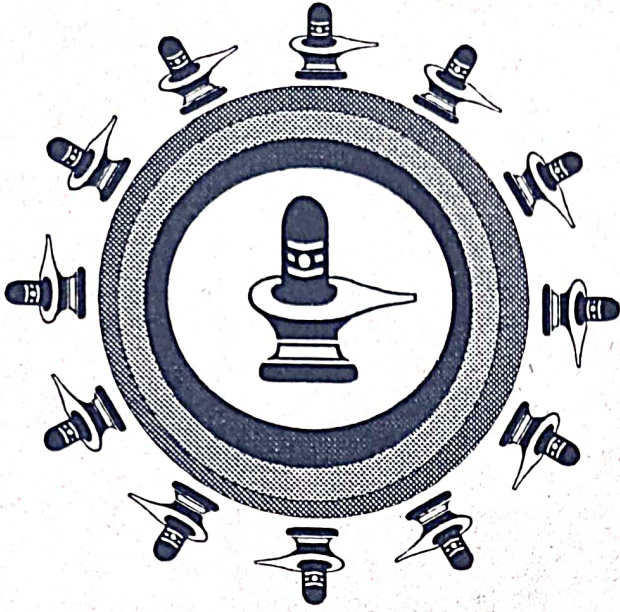
21 बार '**ॐ ऐं ऐं सर्व व्यापार वृद्धये फट्**' मंत्र का जप करें। इसके बाद किसी नदी में प्रवाहित कर देने से व्यापार में प्रगति होती है।

3. एकमुखी रुद्राक्ष पर महामृत्युंजय मंत्र का 11 बार उच्चारण कर उस पर जल चढ़ायें—

मंत्र

।। ॐ रं रुद्रात्मने नमः ।।

वह जल पूरे घर में छिड़कें तथा उस रुद्राक्ष को किसी शिवलिंग पर चढ़ाने से घर में आरोग्यता बनी रहती है।

न्यौछावर— 101/-

लघु नारियल

1. लघु नारियल को घर में स्थापित कर इसका पूजन कर 21 दिनों तक निम्न मंत्र का नित्य पांच मिनट तक जप करें। घर में समृद्धि प्राप्त होती है। प्रयोग समाप्ति पर 22वें दिन लघु नारियल को नदी में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

।। ॐ शं साम्बाय शिवाय नमः ।।

2. लघु नारियल को लाल कपड़े में लपेट कर तिजोरी में निम्न मंत्र का 31 बार जप कर रखें। होलिका दहन वाले दिन इसे होलिकाग्नि में डाल दें, तो घर में लक्ष्मी का स्थायित्व सम्भव होता है।

मंत्र

।। ॐ शं सर्व प्रियाय देवाय नमः ।।

3. लघु नारियल के सामने '**ॐ अन्नपूर्णायै शिवायै नमः**' मंत्र को 5 बार पढ़कर अन्न भंडार में 11 दिनों तक रखें और 12वें दिन इसे किसी खेत में डाल दें, तो घर में अन्नपूर्णा का वास होता है।

न्यौछावर — 35/-

महोदा

1. यदि किसी स्त्री के पति का ध्यान किसी अन्य स्त्री के प्रति आकर्षित लग रहा है, तो वह महोदा के समक्ष निम्न मंत्र का 7 बार जप कर, इसे तोड़कर किसी निर्जन स्थान पर डाले। ऐसा करने से पति का ध्यान परस्त्री से हटने लगता है।

मंत्र

।। ॐ शं स्वात्मप्रियाय शिवाय नमः ।।

2. पति को अपने अनुकूल करने के लिए महोदा को एक कागज पर पति का नाम लिख कर रखें, फिर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें और उसे नदी में प्रवाहित करने पर, पति अनुकूल होने लगता है।

मंत्र

।। ॐ गं गिरिजात्मने नमः ।।

3. यदि घर में आप का सम्मान नहीं हो रहा है, तो आप महोदा किसी देवी मंदिर में चढ़ा दें, चढ़ाने से पूर्व 18 बार '**ॐ शं सर्व सम्मानाम फट्**' मंत्र का जप करें, तो सम्मान प्राप्ति संभव।

न्यौछावर— 80/-

नवनाथ गुटिका

1. इस गुटिका का पूजन कर, उस के सामने नित्य 51 बार निम्न मंत्र का जप करने पर व्यक्ति में विवेक और बुद्धि का संचार होता है। एक माह बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

।। ॐ भं भवात्मने नमः ।।

2. यदि किसी को अत्यधिक क्रोध आता है, तो वह इस गुटिका को यह भावना देते हुए, कि मैं अपना क्रोध इसके साथ ही छोड़ रहा हूं, होलिका की अग्नि में समर्पित कर दें, तो उसका क्रोध उसके नियंत्रण

यह योजना मात्र ३० दिनों के लिए है. . .
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का
एक उपहार
निश्चित साधना सिद्धि गुटिका 2" X 2"
दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं. . . उन्हें प्रचारित व प्रसारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, इत्र स्वयं अपनी उपस्थिति का आभास दिला देता है. . : वैसे ही यह विशेष यंत्र जहां रहता है, वहां धन का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है. . . धन का आगमन अपना मार्ग स्वतः बना लेता है. . . फिर यह सौभाग्य आपके द्वार आया है . . . निर्णय आपको करना है. . .
वर्ष १९९५ की सदस्यता प्राप्त कर . . . यदि आप सदस्य हों, तो अपने मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बनावें और प्राप्त करें मुफ्त यह यंत्र उपहार स्वरूप. . . आप सिर्फ पोस्टकार्ड भर कर भेज दें. . . बाकी का कार्य हमारा . . .
वार्षिक सदस्यता शुल्क-180/-
डाक खर्च अतिरिक्त-24/-
सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोनः 0291-32209, फेक्सः 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

में आ जाता है।

3. किसी व्यक्ति का जीवन यदि संयमित नहीं हो रहा है, तो वह या अन्य दूसरा कोई व्यक्ति, इस गुटिका को लाल रंग के कपड़े पर अष्टगंध से जिस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जा रहा है, उसका नाम लिखकर, होलिका दहन जहां हो रहा है, उसकी अग्नि मे डाल दे तथा पीछे मुड़कर न देखे, तो उसके जीवन में परिवर्तन आने लगता है।

न्यौछावर— 62/-

वैश्रत्य

1. वैश्रत्य के माध्यम से वह स्वयं के बारे में होने वाली घटना का संकेत प्राप्त कर सकता है। यदि वह इस पर 100 बार '**ॐ क्लीं क्लीं फट्**' मंत्र का जप कर इसको जला दे तो।
2. इस पर 21 बार निम्न मंत्र का जप कर काली मिर्च के पांच दानों के साथ नदी में प्रवाहित करने पर छिपे शत्रु भी परास्त होते हैं।

मंत्र

।। ॐ मं महेश्वराय नमः ।।

3. इसके माध्यम से दूर बैठे व्यक्ति से कार्य करवाया जा सकता है, यदि इस गुटिका पर 7 बार '**ॐ क्रीं सर्वकारणाय नमः**' मंत्र का जप कर इसे दक्षिण दिशा में फेंक दें तो।

न्यौछावर— 86/-

कौतुकी

1. कौतुकी को सिराहने रखकर सोने पर स्वप्न में अगले दिन क्या घटित होने वाला है, इस बात के संकेत मिलते हैं। किन्तु इसका प्रयोग सिर्फ दो बार ही कर सकते हैं। प्रयोग के बाद नदी में विसर्जित करें।
2. कौतुकी पर 21 बार मंत्र जप कर स्वप्न में लॉटरी का नम्बर या आकस्मिक धन प्राप्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। अगले दिन इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

।। ॐ सं स्वप्नराजाय ते नमः ।।

3. यदि कौतुकी पर 7 बार '**ॐ सर्व निकृत्ति निवारणाय फट्**' मंत्र का जप कर नदी में प्रवाहित कर दें, तो बुरे स्वप्न आने खत्म हो जाते हैं।

न्यौछावर— 105/-

अबोला

1. यदि आपका कार्य नहीं हो रहा है, तो अबोला के सामने 16 बार निम्न मंत्र का जप कर इसे अपने साथ ले जायें और जिससे अपना कार्य करवाना चाहते हैं, उसके सामने जायें, तो वह बिना किसी विरोध के आपका कार्य करेगा। एक बार प्रयोग कर अग्नि में जला दें।

मंत्र

।। ॐ सं सर्व साधनात्मने शिवाय नमः ।।

2. इसके सामने जिस व्यक्ति को वशीकृत करना है, उसका ध्यान कर, यदि 19 बार निम्न मंत्र पढ़कर श्मशान में फेंक दिया जाय, तो उस व्यक्ति का वशीकरण हो जाता है।

मंत्र

।। ॐ सर्व संमोहनाय फट् ।।

3. इस पर यदि आप 21 बार मंत्र पढ़कर कुंकुम चढ़ा दें और घर से कहीं दूर स्थान पर जमीन में दबा दें, तो आप पर यदि किसी प्रकार का टोटका हो तो समाप्त होगा।

।। ॐ ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ॐ ।।

न्यौछावर— 92/-

रुद्रोहा

1. तीन रुद्रोहा को पहनने से हाई ब्लड प्रेसर वाले व्यक्ति का ब्लड प्रेसर नियंत्रित रहता है।
2. पांच रुद्रोहा को हृदय तक लम्बे धागे में धारण करने से व्यक्ति में तेजस्विता और बल आता है; 11 दिनों के बाद इसको नदी में प्रवाहित कर दें।
3. शिवलिंग पर '**ॐ नमः शिवाय**' का जप करते हुए 5 रुद्रोहा चढ़ाने से भगवान सदाशिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

न्यौछावर— 55/- प्रत्येक

यह नव वर्ष की पर्व-साधना का अवसर है

भारतीय सभ्यता और साधना की जन्म स्थली को यदि हिमालय की गोद कहा जाए, तो संभवतः कोई अनुचित कथन नहीं होगा। सुविशाल हिमालय पर्वत की छाया तले बैठकर ही हमारे ऋषि-मुनियों ने चिंतन-मनन किया, इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। कालांतर में यहीं से जीवन और ज्ञान की जो धारा बही, वही गंगा एवं यमुना नदी के किनारे-किनारे आर्य सभ्यता के रूप में स्थापित हुई — यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है।

यही कारण है, कि हमारा सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य प्रकृति प्रेम से ही भरा हुआ है और उसी की जो सूक्ष्म स्मृतियां आज तक प्रत्येक भारतवासी के मन में हैं, वे उसे सहज ही हिमालय की उपत्यकाओं, गुहाओं, कंदराओं एवं वनों की ओर आकर्षित करती ही रहती है। हिमालय एवं हिमालय के चरण तले स्थित समस्त भूभाग हमारे लिए भूमि का एक टुकड़ा ही नहीं वरन् हमारे पूर्वजों का निवास स्थान, चिंतन-मनन की भूमि होने के कारण यज्ञ स्थल के समान ही पवित्र और श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाने योग्य है।

यह तथ्य कि साधनाओं का जन्म मुख्य रूप से हिमालय की तराई वाले प्रदेश में ही हुआ, इसका प्रबल प्रमाण यह है, कि किसी भी हिंदू के उत्सव पूर्ण जीवन का दीपावली के उपरांत एक प्रकार से अवसान हो जाता है, जो पुनः माघ माह में पड़ने वाले पर्व मकर संक्रान्ति से जाग्रत हो जाता है।

यद्यपि इन तीन माह में भी वे ऋषि-मुनि सर्वथा प्रसुप्त नहीं हो जाते थे वरन् आध्यात्मिक जीवन से संबधित, कुण्डलिनी जागरण से संबंधित उच्चकोटि की गहन क्रियाएं करते ही रहते थे। हिमाच्छादित प्रदेशों में रहने के कारण कार्तिक शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ कर प्रायः माघ की अमावस्या तक उनका जीवन प्राकृतिक विसंगति से भरा हुआ होता था तथा माघ माह के शुक्ल पक्ष के आरम्भ के साथ ही साथ शीत की भीषणता में कमी आने से पुनः उनका उल्लासमदता का मूल स्वभाव भी जाग्रत हो उठता था।

इसी तथ्य को इस प्रकार से भी देखा जा सकता है, कि उन्होंने वस्तुओं के जो भेद किए उसमें से अधिकांश शीत ऋतु के ही विभिन्न भेदों से सम्बन्धित हैं, यथा — ग्रीष्म, वर्षा, हेमंत, शिशिर, शरद, एवं वसंत। इनमें से चार भाग

अर्थात् हेमंत से वसंत तक क्या शीत ऋतु के ही विभिन्न चरण नहीं?

ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था, कि जब प्रचंड शरद ऋतु के उपरांत भगवान सूर्य के दर्शन हों, तो उनमें नवजीवन और अह्लाद का संचार हो। यद्यपि ऊपर मैंने ऋतुओं के अनुसार भेद किए हैं, किंतु **हमारे पूर्वज जो मुख्यतः प्रकृति पूजक ही थे, उनकी गणना सूर्य की गति से होती थी तथा वे अपनी विशिष्ट गणना पद्धति से यह पूर्वानुमान कर लेते थे, कि कब सूर्य का मकर राशि में संक्रमण होगा और वही अवसर उनके लिए नव वर्ष का होता था।**

किंतु इन सभी बातों से यह निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए, कि वे कोई सर्वथा जड़ एवं आसमान के तारों को देखकर निष्कर्ष निकाल लेने वाले कोई अज्ञानी व्यक्तित्व थे; जैसा कि पाश्चात्य 'विद्वानों' ने उन्हें चरवाहा एवं वेदों को 'गरेड़ियों के गीत' कह कर निन्दित किया है और उनकी यही छवि प्रस्तुत की है। यदि वे जड़ व्यक्तित्व होते, तो सूर्य के संक्रमण के आधार पर दिवस न निर्धारित करते वरन् उन्हीं 'विद्वानों' की भांति 31 दिसम्बर की रात्रि ही नव वर्ष निर्धारित कर पशुत्व प्रदर्शन कर 'हैप्पी न्यू इयर' मना लेते। भले ही उस समय प्रचंड शीत पड़ रही हो या हिमपात हो रहा हो।

इसी विभेद के कारण, स्वयं को प्रकृतिमय बना देने के कारण ही साधनाओं में सौम्यता होती है और इसी कारणवश यदि हम मकर संक्रान्ति को अपना नव वर्ष मानें, तो कोई अनुचित बात भी नहीं। मैं तो यह धारणा भी प्रस्तुत करना चाहता हूं, कि क्या यह संभव नहीं कि प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार मकर संक्रान्ति को मनाए जाने वाले हर्ष एवं उल्लास के वातावरण से अनुप्राणित होकर ही ईस्वी संवत नहीं रचा गया होगा। दस-पन्द्रह दिवस के परिवर्तन से कोई मूलभूत अंतर तो नही पड़ जाता, यद्यपि यह बात अवश्य है, कि भारत में 'हैप्पी न्यू इयर' मनाने और बौखलाने की कोई परम्परा पूर्व में नहीं रही। जो देश इस मानव देह को छोड़ कर जाने वाले जीव को भी संस्कार पूर्वक विदा देता है, वह उन्माद में विश्वास रख ही नहीं सकता।
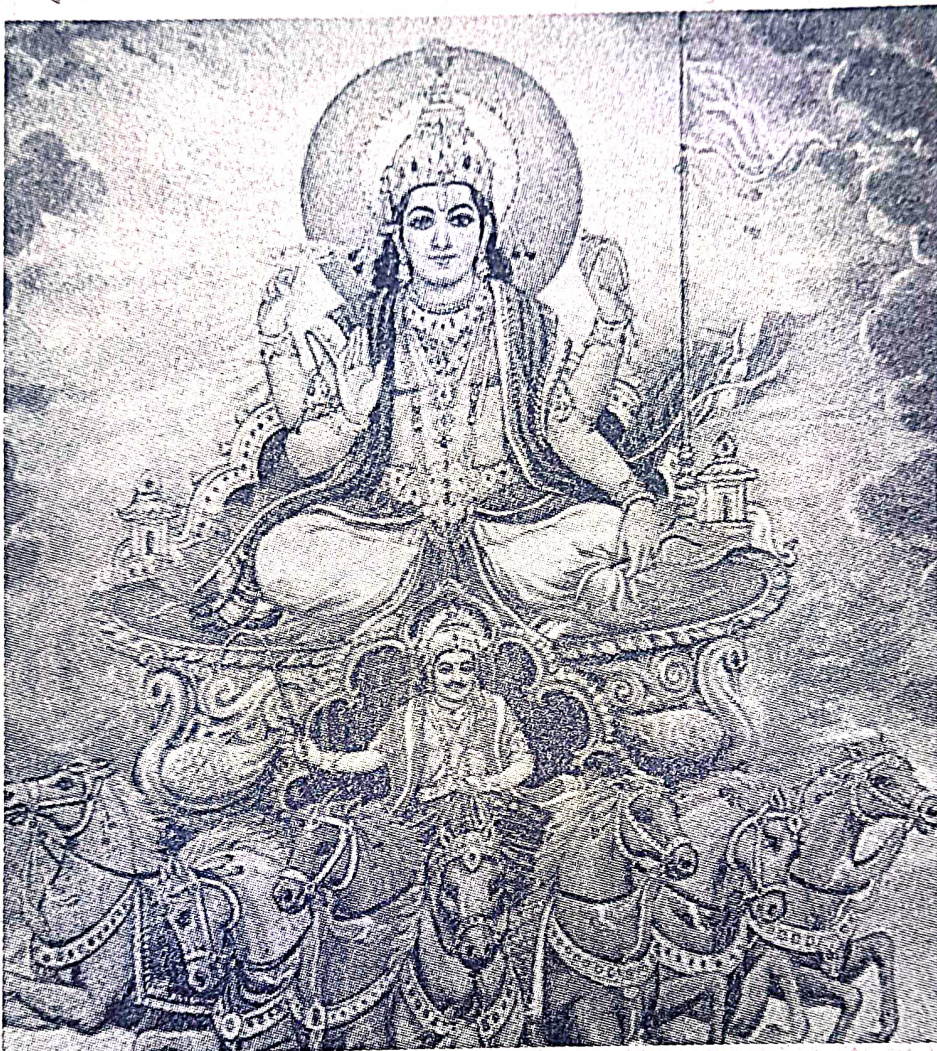
इसी कारण वश मैं यह दृढ़ता पूर्वक कहना चाहता हूं, कि हमारा नव वर्ष तो मकर संक्रान्ति का पर्व होता है। साधकों को यह जिज्ञासा और आपत्ति हो सकती है, कि नव वर्ष का प्रारम्भ भारतीय परम्परा में चैत्र नवरात्रि से माना गया है; मैं उनका विरोध नहीं कर रहा, क्योंकि यदि चैत्र नवरात्रि नव वर्ष का प्रारम्भ है, तो मकर संक्रान्ति उसके स्वागत की तैयारियों का पर्व। क्या जिस अवसर पर हम कुछ नवीन प्रारम्भ करते हैं वह भी पर्व नहीं होता? इसे एक उदरमना भारतीय व्यक्ति की तरह धारण करने पर बात स्पष्ट हो सकती है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने हमारे ऋषि-मुनियों की 'गणना-चिन्तन' के क्रम को मुखरित करते हुए यह स्पष्ट किया था, कि वास्तव में मकर संक्रान्ति का पर्व केवल शरद ऋतु के उपरांत आने वाली सुखद ऊष्मा के स्वागत का ही अवसर नहीं है वरन् साधना पर्व भी है, क्योंकि इस दिवस

को सूर्य ब्रह्माण्ड में ऐसी स्थिति पर होता है, जिससे साधक किसी भी साधना के द्वारा उसकी तेजस्विता को अपने प्राणों में पूर्णता से उतार सकता है। सूर्य का भारतीय चिंतन में केवल एक ग्रह के रूप में अथवा ज्योतिषीय ढंग से ही महत्त्व नहीं है वरन् इसे साक्षात् प्राण व आत्मा का ही मूर्तिमंत स्वरूप माना गया है; जिस प्रकार चन्द्रमा को मन का प्रतीक कहा गया है।

वैज्ञानिक जिस सूर्य को अब Solar Energy के अक्षय स्रोत के रूप में देख कर कृतज्ञ हो रहे हैं, भारतीय चिंतन उसे युगों पूर्व ऊर्जा के स्रोत या बिजली बनाने के कारखाने के रूप में न देखकर साक्षात् जीवन दाता के रूप में वंदित करता आ रहा है।

उपनिषद् में दृष्टव्य है, कि भगवान् सूर्य से किंचित गुह्य रूप में भी याचना की गयी है, कि वे उसे (अर्थात साधक को) केवल अपनी प्रखर रश्मियों से दग्ध ही न करें वरन् उसके भीतर समाहित होकर साधक को तेजवान भी बनायें; उपरोक्त स्तुति में 'ज्योति को पुञ्जीभूत' करने का यही अर्थ है; क्योंकि सूर्य का तेज कभी शांत नहीं हो सकता, किंतु साधक द्वारा उसे समाहित कर लेने के उपरांत वह 'शांत' हो सकता है, यों तब साधक का व्यक्तित्व भी सूर्यवत प्रखर हो जाता है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर सूर्य साधना का लोक व्यवहार में सदा से महत्त्व रहा है। अंतर केवल इतना है, कि जहां सामान्य व्यक्ति केवल पूजन के द्वारा अपनी श्रद्धा भावना भगवान श्री सूर्य को निवेदित करते हैं, वहीं साधक उनके वरदायक प्रभाव को किसी विशिष्ट साधना के द्वारा अपने शरीर में उतारने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन के विविध पाप-दोष एवं जड़ताएं समाप्त हो सकें।

सूर्य की साधना का महत्त्व एक छोटे से उदाहरण से ही समझा जा सकता है, कि जिस प्रकार एक छोटी-सी खिड़की खोलने पर कमरे का अंधकार पूरी तरह से समाप्त हो जाता है तथा उजाले का संचार हो जाता है, उसी प्रकार उचित साधना के द्वारा एक छोटी-सी खिड़की खोलने भर से ही जीवन की दरिद्रता, जड़ता, आलस्य, मलिनता और चिंता आदि का अंत होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

क्या आप अपने नव वर्ष का प्रारम्भ इसी रूप में नहीं करना चाहेंगे?

मकर संक्रान्ति के पर्व को यदि 'प्राणश्चेतना के पर्व' की संज्ञा दी जाए, तो सर्वाधिक उचित होगा और यह भी सत्य है, कि जब तक जीवन में प्राणश्चेतना का प्रवाह नहीं होता, तब तक न तो व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है, न सुखी और न ही आध्यात्मिक। इन अर्थों में मकर संक्रान्ति की साधना चतुर्विध प्रभाव प्रदान करने में समर्थ है, जो मूलतः सूर्य साधना ही है।

साधक को यह साधना सम्पन्न करने के पूर्व ताम्रपत्र पर अंकित **'सूर्य यंत्र'**, एवं द्वादश (12) **'लघु नारियल'** का प्रबन्ध पहले से ही कर लेना होगा। साधना दिवस की प्रातः (जो इस वर्ष 14/1/96 को पड़ रहा है) साधक स्नान आदि से शुद्ध होकर लाल वस्त्र धारण कर, सूर्योदय से काफी पहले लाल आसन पर पूर्वमुख होकर बैठें। अपने सामने लाल वस्त्र पर तांबे के पात्र में यह चैतन्य सूर्य यंत्र स्थापित करें तथा इसके चारों ओर द्वादश (12) लघु नारियलों को गोल घेरे के रूप में स्थापित करें। ये द्वादश नारियल द्वादश माहों के प्रतीक हैं। इन सभी समाग्रियों का पूजन रक्त चंदन (अथवा कुंकुम) एवं अक्षत से करें। यदि रक्त वर्ण के पुष्प उपलब्ध हो सकें, तो उनका भी प्रयोग करें। इसके उपरांत दीपक प्रज्वलित कर अपने सम्पूर्ण परिवार की सुख-शांति, रोग एवं दारिद्र्य नाश हेतु भगवान आदित्य से प्रार्थना कर, निम्न मंत्र का कम से कम द्वादश (12) बार उच्चारण करें, जिससे वर्ष के सभी द्वादश माह निर्विघ्नता से व्यतीत हो सकें।

आदित्य मंत्र

।। पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य रश्मीन्समूह तेजो यत्र रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसाव सो पूरुषः सोऽहमस्मि।।

यदि साधक धैर्य पूर्वक इस मंत्र की एक माला मंत्र जप (अर्थात 108 बार उच्चारण) कर सके, तो अत्युत्तम माना गया है।

अपने पूर्वजों द्वारा प्रणीत किसी भी साधना में मुहूर्त विशेष पर भावपूर्वक संलग्न होने पर उनका भी सूक्ष्म रूप से आशीर्वाद मिलता ही है। पाश्चात्य पद्धति से नव वर्ष तो कुछ घंटों के कोलाहल से मनाया जाता है, जबकि अपनी परम्परागत पद्धति को अपना कर पूरे वर्ष को ही उल्लासमय बनाया जा सकता है। ऋषियों ने इसी कल्याणमयी भावना से ओत-प्रोत होकर इन पद्धतियों की रचना की थी।

साधना की समाप्ति पर सभी सामग्रियां जल में विसर्जित कर दें तथा उदित होते हुए नव वर्ष के सूर्य को कुंकुम, अक्षत, पुष्प मिश्रित जल से अर्घ्य दें।

साधना-सामग्री : न्यौछावर – 250/-

दीक्षा ग्रहण करना जीवन की समस्याओं के समुद्र पर छलांग लगा कर उसे पार करना है।

मन, वचन कर्म द्वारा जो पाप दोष हो चुके हैं अथवा हो रहे हैं, उन्हें नष्ट करने की क्रिया 'दीक्षा' है। जिस प्रकार विभिन्न धातुओं से मिश्रित स्वर्ण को तपाने पर स्वर्ण अलग हो जाता है, ठीक वैसे ही दीक्षा रूपी अग्नि में तपकर साधक स्वर्ण की तरह कांतिमान बनता है।

संसार का कोई भी कार्य बिना जानकारी के या बिना गुरु के सफल नहीं हो सकता। गुरु का दूसरा नाम ही ज्ञान है, जिसके द्वारा हम उन्नति के मार्ग पर गतिशील हैं। गुरु ही हाथ में मशाल लेकर शिष्य को लक्ष्य तक निर्विघ्न पहुंचाने में सहायक हैं, इसीलिए गुरु का हमारे जीवन में विशेष स्थान है, विशेष महत्त्व है। जिनके जीवन के पुण्योदय होते हैं, वे ही गुरु का साहचर्य तथा उनसे प्राप्त ज्ञान को अपने हृदय में आत्मसात कर पाते हैं।

गुरु-शिष्य के इस पवित्रम सम्बन्ध स्थापन का प्रारम्भ दीक्षा है। केवल और केवल गुरु ही इस क्रिया को सम्पन्न कर शिष्य के अपूर्ण जीवन को पूर्णता प्रदान करने में सहायक बनते हैं। प्राचीन काल में जितने भी ऋषि-मुनि हुए हैं, देवता हुए हैं, उन सभी ने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए, अपने जीवन को अमृतमय बना देने के लिए किसी न किसी गुरु से दीक्षा प्राप्त किया ही है ... और तुम भी कर सकते हो, यदि तुम्हें इस जीवन में ही सद्‌गुरु प्राप्त हो जायें तो।

तुम्हें चाहिए, कि ऐसे सद्‌गुरु से दीक्षा प्राप्त कर इस जीवन को धन्य कर सको, जिससे कि तुम्हें बार-बार मल-मूत्र युक्त जीवन न भोगना पड़े, एक कैदी की तरह यह जीवन व्यतीत न करना पड़े, तुम निर्द्वन्द्व, निर्मुक्त परमाकाश में विचरण कर सको; जो जीवन की श्रेष्ठता है, उसे प्राप्त कर सको, क्योंकि यही जीवन की पूर्णता का आधार है।

और जीवन की यह श्रेष्ठता तुम्हें गुरु प्रदत्त दीक्षा द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, जब गुरु अपनी तपस्या का अंश प्रदान कर तुम्हारी देह को, तुम्हारी आत्मा को शुद्ध एवं पवित्र कर पूर्णरूप से चैतन्य कर सकेंगे, तभी तुम्हारा जीवन उच्च एवं दिव्य हो सकेगा।

दीक्षा का अर्थ :

दक्ष होना, हर दृष्टि से पूर्ण होना, सर्वश्रेष्ठ होना, अद्वितीय होना; यही वास्तविक अर्थ है, जिसे पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा गया है। शिष्य के अज्ञान, मल आदि का नाश दीक्षा के माध्यम से ही सम्भव है, निर्देशानुसार बार-बार दीक्षा के इस उपक्रम को करते रहना चाहिए, जिससे कि आत्मा का शुद्धीकरण हो सके। **दीक्षा प्राप्त करना तो जीवन का परम सौभाग्य है, मुरझाये हुए चेहरे को भी फूल की तरह खिला देने वाली तथा उमंग, प्रसन्नता, आह्लाद का संचार कर देने वाली मात्र दीक्षा ही है; दीक्षा परम ज्ञान को देने में समर्थ है।**
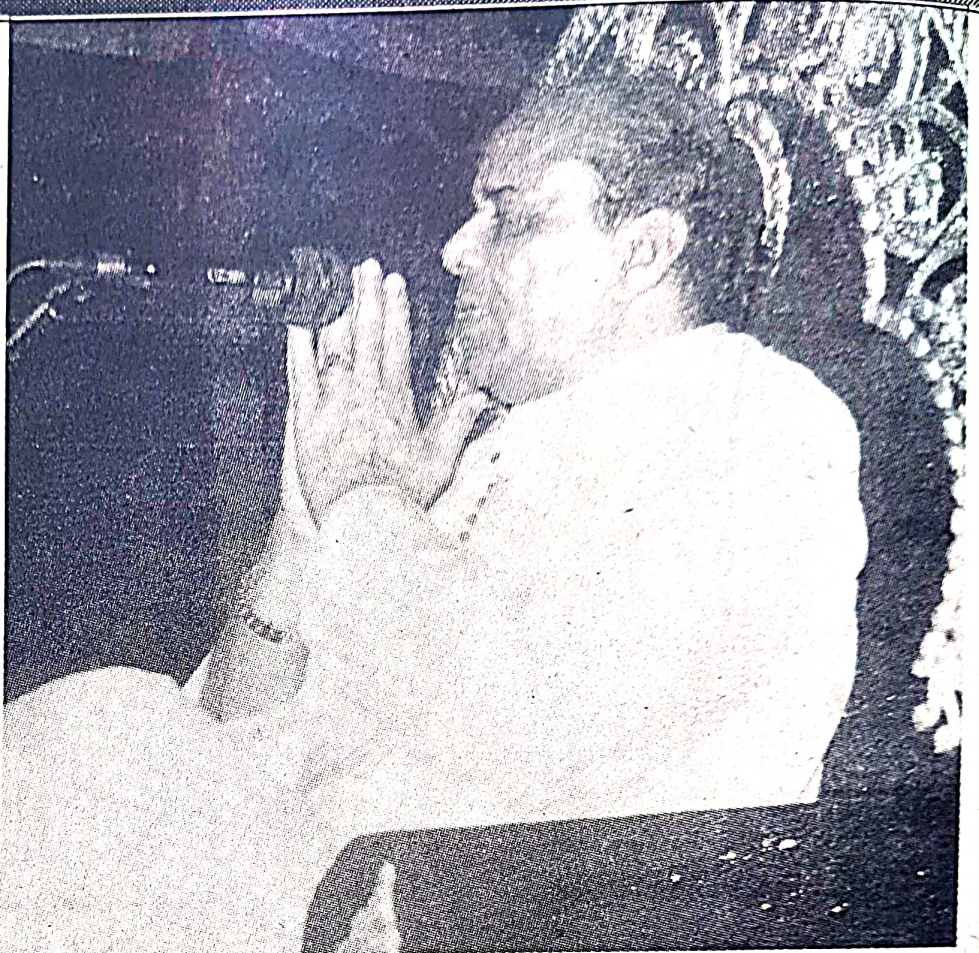
लाभ :

1. युग परिवर्तन के इन क्षणों में साधना और तपस्या से भी ज्यादा महत्त्व दीक्षा का है, इससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है।
2. दीक्षा तो वह गहना है, जिसे धारण कर अपने सौन्दर्य को द्विगुणित किया जा सकता है और जीवन में आनन्द रस की प्राप्ति की जा सकती है।
3. दो अक्षर का यह सामान्य सा प्रतीत होने वाला शब्द अपने आप में सम्पूर्णता को समेटे हुए है।
4. दीक्षा वह सुरक्षा कवच है, जिससे जीवन को भयमुक्त किया जा सकता है।
5. मनुष्य के अन्दर असीमित शक्तियां निहित होती हैं, जिसका वह दस प्रतिशत ही उपयोग कर पाता है; यही कारण है, कि वह मानसिक तनाव का शिकार हो जाता है, किन्तु दीक्षा मानव शरीर के अन्दर निहित शक्तियों का परिचय देने, चैतन्यता प्रदान करने तथा भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने की विशिष्ट एवं उच्चतम क्रिया है।
6. शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु

दीक्षा से उपयोगी उपाय अन्य कोई नहीं है।

7. सुख, सौभाग्य, शांति, समृद्धि एवं आनन्द को प्राप्त करने का दीक्षा से सर्वश्रेष्ठ उपाय अन्य कोई नहीं है।
8. सभी प्रकार के दैहिक, दैविक एवं भौतिक कष्टों को दीक्षा के माध्यम दूर किया जा सकता है।
9. दीक्षा जीवन के अज्ञान रूपी अन्धकार को स्वर्णिम प्रभात में परिवर्तित कर देने का मार्ग है।
10. दीक्षा पशुत्व से मानवत्व और मानवत्व से देवत्व प्रदान करने की क्रिया है।
11. जीवन के हर क्षेत्र में 'विजयश्री' की उपाधि से अलंकृत करने की श्रेष्ठतम क्रिया है।
12. शव से शिव बनाने की क्रिया है।
13. कल्पना को वास्तविकता में बदल देने की शक्ति है, जैसा चाहें वैसा हो जाय—यही लक्ष्य प्राप्ति का साधन है।
14. समस्त प्रकार की इच्छाओं, आवश्यकताओं और मनोकामनाओं की पूर्ति का एकमात्र माध्यम दीक्षा ही है।
15. दीक्षा एक सफल जीवन की कुंजी है।

दीक्षा प्राचीन काल से अब तक

गुरु और शिष्य का यह सम्बन्ध प्राचीन काल से ही चला आ रहा है, युग की परम्पराओं के अनुसार मान्यताएं भिन्न हो जाती हैं, किन्तु अर्थवत्ता वही रहती है। दीक्षा तो गुरु का एक अनुग्रह है अपने शिष्य पर, गुरु अनुकम्पा के वे विशेष क्षण होते हैं, जब वे अपने तप की पूंजी को अपने स्पर्श और आशीर्वचन के माध्यम से शिष्य को बहुत कुछ प्रदान कर देते हैं।

यदि पूर्व युग को देखा जाय, तो भगवान राम ने विश्वामित्र से दीक्षा ली और वे पुरुषोत्तम कहलाये। श्रीकृष्ण ने सांदीपन के आश्रम में रहकर उनसे दीक्षा के विभिन्न क्रमों को प्राप्त किया और वे 'पूर्ण पुरुष' कहलाये; इस प्रकार गुरु और शिष्य के बीच ज्ञान की अजस्र धारा का प्रवाह प्रत्येक युग में रहा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग दर्शक बन गया, परन्तु धीरे-धीरे भौतिकता के अन्धकार में लिप्त प्राणि ने इसे व्यर्थ का जान लिया और वह इस प्रकाश से वंचित हो गया, परिणाम स्वरूप मानव जीवन पहले की अपेक्षा अधिक कष्टसाध्य और कठिन हो गया, जहां चारों तरफ दुःख, दैन्यता और विषाद के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रह गया। मानव जीवन नीरस हो गया, क्योंकि उन्हें ऐसे गुरु प्राप्त नहीं हुए, जो उनके जीवन को प्रवाह दे सकें, आत्मशक्ति व प्राण शक्ति को जाग्रत कर उनके जीवन की नीरसता को, विषाद को दूर कर सकें।

प्राचीन काल में दीक्षा के माध्यम से साधना व तपस्या को पूर्णता प्रदान कर ही हमारे ऋषि-मुनि, महर्षि, योगी-यति सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त कर अपने जीवन को भव्यता प्रदान कर धन्य हो सके।

..... और तुम भी कर सकते हो, यदि तुम्हें सही गुरु मिल जायें और तुम उनकी आज्ञानुसार दीक्षा प्राप्त कर उनके चरणों में अपने को समर्पित कर सको ... फिर तुम्हें चौरासी लाख योनियों में भटकने की आवश्कता नहीं पड़ेगी ... बार-बार जन्म-मरण के इस चक्रव्यूह में बंधना नहीं पड़ेगा ... मल-मूत्र युक्त जीवनयापन नहीं करना पड़ेगा ... और तब तुम्हारी जीवन रूपी नौका आनन्द सागर में हिचकोले लेती हुई, पूर्ण शांति और तृप्ति प्रदान कर सकेगी ... जो जीवन का प्रयोजन है; तभी तुम जीवन को जीवंतता से जीने में पूर्ण समर्थ हो सकोगे।

समय एक बार फिर बदला और इस युग ने एक सक्षम, सुयोग्य एवं पूर्ण सामर्थ्यवान व्यक्तित्व प्रदान किया। ''डॉ0 श्रीमाली'' ऐसे ही 'पूर्ण पुरुष' हैं जो ज्ञान के सागर हैं, जिनसे विस्तृत ज्ञान-गंगा में अवगाहन कर जीवन को आनन्द से सरोबार किया जा सकता है; जीवन के संगीत को सुना जा सकता है, और जीवन को उच्चता के शिखर पर निर्विघ्न पहुंचाते हुए पूर्णता को प्राप्त किया जा सकता है, जो मानव जीवन की श्रेष्ठानुभूति है, आनन्दानुभूति है।

पूज्य गुरुदेव जी तो वापिस इस युग को चेतना दीक्षा के माध्यम से अपना तपस्यांश देकर चैतन्यता प्रदान कर रहे हैं। लुप्त होती विद्या को पुनर्जीवित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आने वाली पीढ़ियां भी उनके इस योगदान को सराहेंगी और उनके बताये मार्ग पर गतिशील हो अपने जीवन को धन्य अनुभव करेंगी, क्योंकि गुरुदेव इस युग में भी श्रीकृष्ण के समान ही सोलह कला पूर्ण पुरुष का निर्माण करने में समर्थ हैं।

समस्याओं के निदान का एकमात्र हल — दीक्षा

इस मशीनरी युग में पग-पग पर बाधायें, अड़चनें तो आती ही रहती हैं, जिनका सामना मनुष्य को न चाहते

जीवन की शून्यता को भरने का तथा बहुत कुछ पाकर भी कुछ जो शेष रह जाय, उस कसक को समाप्त कर देने का माध्यम है 'दीक्षा', जिसका तात्पर्य है निपुण हो जाना और जीवन को पूर्ण कर देना।

हुए भी करना पड़ता है ... इनसे छुटकारा दीक्षा द्वारा ही मिल सकता है।

प्रत्येक मनुष्य को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों को प्राप्त कर लेने की कामना रहती ही है, जिनके माध्यम से वह अपने जीवन को संचालित करता है, परन्तु इस जन्म के या पूर्व जन्म के दोषों के फलस्वरूप मनुष्य को जीवन में दुःखों को भोगना ही पड़ता है, यही कारण है, कि उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

किंतु समस्याओं का कोई अंत नहीं है, एक को दूर करते ही दूसरी आ खड़ी होती है और दूसरी को हटाते ही तीसरी ... इस प्रकार अपने प्रयत्नों से तो मनुष्य इनसे निजात पाने में असमर्थ है ... परन्तु 'दीक्षा' समस्याओं के निदान का श्रेष्ठ हल है, क्योंकि शिष्य में क्या कमी है, इसका पता गुरु को ही होता है .. और दीक्षा के माध्यम से 'गुरु' शिष्य के ललाट पर आज्ञा चक्र में स्थित उस विशेष बिन्दु को स्पर्श कर अपनी ऊर्जा द्वारा उसके दोष को, न्यूनता को, अशुद्धता को समाप्त कर उसे सफलता प्रदान करते हैं।

दीक्षा प्राप्त कर व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक कैसी भी समस्या हो दूर करने में समर्थ हो जाता है; तब सफलता उसके चरण छूने लगती है। दीक्षित व्यक्ति जीवन के सभी आयामों को स्पर्श करता हुआ मानव जीवन की श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेता है, जो गुरु की देन है। जब साधनाओं में असफल हों, तो दीक्षा ही एकमात्र सहारा है।

दीक्षा का तो तात्पर्य ही यह है, कि "जो तुम नहीं प्राप्त कर सको, गुरु तुम्हें दें।" कई बार ऐसा होता है, कि बार-बार साधना, मंत्र जप करते रहने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती और जब इसमें सिद्धि व सफलता प्राप्त नहीं होती, तो, जीवन रुक सा जाता है, नीरस, बेजान और अधूरा सा हो जाता है, ऐसे में गुरु अपने ज्ञान-चक्षुओं के माध्यम से यह देख लेते हैं, कि शिष्य में न्यूनता कहां पर है, जिसके कारण उन्नति के मार्ग में अड़चनें आ रही हैं और शिष्य अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहा है, जब गुरु यह देख लेते हैं, तो दीक्षा के माध्यम से उस बिन्दु को स्पर्श कर सम्बन्धित न्यूनता को समाप्त कर देते हैं ... और उसे अध्यात्म पथ पर उन्नति की ओर अग्रसर कर देते हैं।

यदि किसी साधना में बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो, तो योग्य गुरु के माध्यम से उससे सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त कर जीवन में सफलता अर्जित की जा सकती है। यह साधनाओं में सिद्धि प्रदान करने का एकमात्र उपाय है, जो जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

दीक्षा द्वारा गुरुदेव तो आपकी समस्याओं का 80 प्रतिशत समाधान कर ही लेते हैं, शेष आप मंत्र जप करें।

गुरु दीक्षा के द्वारा शिष्य को अधोगामी से ऊर्ध्वगामी जीवन प्रदान करने की ओर संलग्न होते हैं और उसे 80 प्रतिशत साधनात्मक सफलता तो दीक्षा के माध्यम से अपनी साधनाओं, अपनी तपस्याओं, अपने कठिन परिश्रम के बल पर अर्जित की गई शक्ति को शिष्य के अन्दर प्रवाहित कर प्रदान कर देते हैं, फिर उसे तो मात्र 20 प्रतिशत ही परिश्रम करना शेष रह जाता है और यदि वह दीक्षा में प्राप्त मंत्र का जप गुरु द्वारा बताये गये निर्देशानुसार सम्पन्न कर लेता है, तो वह पूर्ण एवं श्रेष्ठ मानव कहलाने का अधिकारी हो जाता है।

दीक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है, कि दीक्षा हमारे जीवन के ऊर्ध्वमुखी विकास की प्रदर्शिका है, शिव से सायुज्य प्राप्त होने का विधान है, लक्ष्य तक पहुंचाने का मार्ग है और वहां तभी पहुंचा जा सकता है जब गुरु का आत्मदान और शिष्य का आत्म समर्पण, गुरु कृपा और शिष्य की श्रद्धा का एकीकरण हो।

सद्गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त करना तो जीवन का अहोभाग्य है।

साधना सफलता

हर माह की तरह इस माह भी आपको इंतजार होगा उन छोटे-छोटे प्रयोगों का, जो आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हैं, अपने व्यक्तित्व को निखारने और परखने के माध्यम हैं, जो जीवन में एक नई उमंग, नई चेतना प्रदान करने वाले हैं, उन्नति, सफलता और श्रेष्ठता प्रदायक हैं।

आइये! देखें, इस बार क्या कुछ सफलता प्रदान करा रहा है साधना का यह प्रवाह, जो मन को पल्लवित और प्रफुल्लित कर देने वाला है। जीवन में आई न्यूनताओं को दूर करने का साधन है यह 'साधना सफलता', जिसके बल पर कम समय और कम व्यय में व्यक्ति परिपक्व व पूर्ण बन सकता है। यदि वह चाहे तो . . .

आप अनिन्द्य सुन्दरी बनी रह सकती हैं

सृष्टि में जो कुछ है, वह बहुत ही सुन्दर और अद्वितीय है; सुन्दरता ही सृष्टि का आधार है, आज तक जितने भी काव्य लिखे गये हैं उनमें सौन्दर्य की छटा बिखरी हुई है, तो कौन नहीं चाहेगा ऐसे सौन्दर्य को अपने में आत्मसात करना, डूबना। प्रत्येक जीव-जन्तु सौन्दर्य प्रिय है, पक्षी पेड़ों पर कलरव करते हुए, कोयल कूकती हुई और नारी अपने पूर्ण यौवन से लदी हुई साक्षात् सौन्दर्य की प्रतिमा कही जाती है।

सौन्दर्य के बिना तो जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती, परन्तु आज सौन्दर्य मात्र एक कल्पना ही रह गया है, उसका वास्तविक रूप तो जैसे लुप्त सा हो गया हो, लोग सौन्दर्य क्या होता है — उसे ही भूल गए हैं। यदि आज से पूर्व के युग को देखा जाय, तो हमारे पूर्वज, ऋषि-मुनि सौन्दर्य प्रेमी थे और सौन्दर्यवान बनने, अपने व्यक्तित्व को चार चांद लगाने तथा ऐसे यौवन से अपने आप को पूर्णतया आपूरित करने के लिए उन्होंने क्या कुछ नहीं किया; वर्षों-वर्षों तक प्रयास करके जिस ज्ञान को संचित किया, वह जीवन के लिए वरदान स्वरूप ही है।
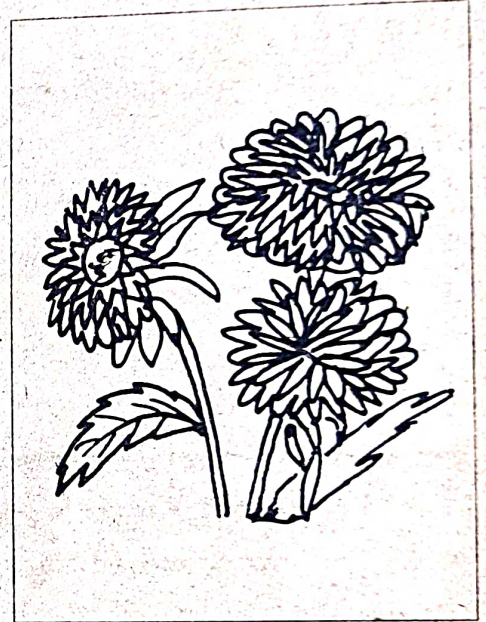
कुरूप को भी सौन्दर्यवान बना देने की कला में दक्ष थे वे, जो पूर्ण कायाकल्प करने की सामर्थ्य प्राप्त कर चुके थे; क्योंकि वे इस तथ्य को भली प्रकार से जानते थे, कि सौन्दर्य है, तो जीवन है वरना जीवन अर्थहीन ही है।

परन्तु आज पुरुष से भी ज्यादा नारी का रुझान ही इस ओर अधिक देखा गया है, तो क्यों न उनकी आशा को, उनके स्वप्न को साकार कर दिखायें और यह बता दें, कि

हमारे पूर्वजों की थाती, जिसे उन्होंने परिश्रम से उसे संजोया है, चमत्कारिक है, अद्‌भुत है, अद्वितीय है।

ऐसी नारियों के लिए ही है यह अद्वितीय प्रयोग, जो यौवन को, रूप सौन्दर्य को चौगुना कर देने के लिए आतुर हैं और इसके प्रति पूर्णतया सजग हैं; इस महत्त्वपूर्ण प्रयोग को कर वे स्वयं अपने आप को टकटकी लगाये देखने के लिए विवश हो उठेंगी।

सबसे पहले प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो जायें, फिर 'शक्तिचक्र' को एकटक देखने का प्रयास करें। खान-पान के साथ-साथ शुद्ध चिन्तन-मनन बनाये रखने का प्रयास करें। फिर आप **'सौन्दर्य प्रिया मुद्रिका'** को किसी भी पूर्णिमा के दिन धारण कर मन में यह भावना रखें, कि मैं अप्सरा के समान ही सौन्दर्य की स्वामिनी बनती जा रही हूं; 30 दिन पश्चात् गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

आप अपने में आश्चर्यजनक परिवर्तन महसूस करने लगेंगी और धीरे-धीरे अनिन्द्य सौन्दर्य की अधिकारी हो जायेंगी।

न्यौछावर– (सौन्दर्य प्रिया मुद्रिका) 50/-

परिवार को बिखरने से बचाइये, इस प्रकार . . .

जब परिवार में कलह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और एक-दूसरे के मन नहीं मिलते, तो उस परिवार की खुशियां समाप्त होने लग जाती हैं, परिवार बिखरने लगता है, टूटने लगता है . . . किसने चाहा है ऐसा वातावरण, जो तहस-नहस कर दे जीवन को, अत्यन्त दुःख होता है उन क्षणों में, बड़े ही वेदना के क्षण होते हैं वे जो जीवन का अधःपतन कर देने वाले हैं।

पर यदि आप चाहें, तो इस नारकीय जीवन को समाप्त कर स्वर्णिम आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, जो दुःख के क्षणों को भुला देगा और जीवन में सुख का साम्राज्य स्थापित करने में समर्थ होगा . . . तो करना है यह प्रयोग, जो अचूक फलदायी सिद्ध होगा।

पहले प्रातःकाल शुद्ध मन से गुरु चित्र के सामने अगरबत्ती व घी का दीपक लगाकर 11 माला गुरु मंत्र की जपें–

गुरु मंत्र

।। ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

फिर लोटे में जल लेकर सूर्य को अर्घ्य देते हुए जल की सात बार प्रदक्षिणा करें। नित्य इस क्रिया को करने के बाद प्रभाव आप स्वयं ही अनुभव करने लगेंगे। 21 दिन का यह लघु प्रयोग अपने में असीमित क्षमताओं को समेटे हुए है।

आपकी पर्सनॉलिटी चुम्बकीय बन सकती है, यदि आप इसे आजमायें तो . . .

जीवन में यदि उन्नति, सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करनी है, तो सबसे पहले अपने आप में उस शक्ति को जाग्रत करना होगा, जो दूसरों का दिल जीत ले और सामने वाला आपके सामने अपने आप को शक्तिहीन, तेजहीन, हारा हुआ महसूस करने लगे . . . और जब ऐसा होगा, तो आपको कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी, स्वतः ही सभी कार्य सम्पन्न होते चले जायेंगे, जो आपके लिए एक आश्चर्य ही होगा . . . क्योंकि व्यक्तित्व के प्रभाव को देखकर ही उसके महत्त्व का बोध होने लगता है। साधना-सफलता इस बार ऐसा ही अनूठा उपाय अपने आप में समेटे है, जो सामान्य व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बना दे . . . पर तब, जब आप करेंगे थोड़ा सा प्रयास, जो जीवन को श्रेष्ठ बना देने में लाभदायक होंगे . . .

ज्यादा कुछ नहीं करना है, न तो कोई व्यायाम करने की आवश्यकता है और न ही कृत्रिम उपायों का सहारा लेने की, आप को तो करना है 15 मिनट तक **'ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ'** मंत्र का जप, वह भी 'सम्मोहन माला' से और देखना है, 15 दिनों के अन्दर ही वह आकर्षण जो एक चुम्बक की भांति ही असरदार होगा, तब लाखों की भीड़ भी आपकी बात का समर्थन करेगी।

न्यौछावर (सम्मोहन माला)–150/-

''योग संयोग इत्युक्त्वा जीवात्मपरमात्मनोः''

जीवात्मा और परमात्मा के पूर्ण योग अर्थात् पूर्ण सम्मिलन को ही योग कहते हैं।

''विष्णु पुराण'' में वर्णित यह तथ्य अत्यन्त गूढ़तम रहस्यों को अपने भीतर समेटे हुए है। ''पाणिनीय व्याकरण'' के अनुसार ''युज्'' धातु से ''योग'' शब्द बना है। युज् का अर्थ है – संयोजन, मिलन, संयोग, कार्य प्रवीणता, संयमन और समाधि।

विभिन्न धर्म शास्त्रों में जो योग की परिभाषा दी गई है, उसके प्रायः दो अर्थ लगाये जाते हैं – 1. जोड़ना और 2. मन की स्थिरता। प्रत्येक ग्रन्थकार ने अपने-अपने बौद्धिक स्तर के अनुसार योग को परिभाषित किया है, किसी ने चित्तवृत्तियों के निरोध को योग मान लिया, तो किसी ने इसे मोक्ष प्राप्त कराने वाले धर्म व्यापार की क्रिया समझ लिया, लेकिन सम्यक्तः कोई भी योग को परिभाषित करने में सफल नहीं हो सका।

वैदिक साहित्य में योग का विवरण बहुत गहनता से किया गया है, ऋग्वेद में, उपनिषदों में, ब्रह्मसूत्र में योग के बारे में विस्तृत विवेचन मिलता है तथा आर्य साहित्य का विशिष्ट ग्रन्थ तो पूर्णतः योग पर ही आधारित है। योग के महत्त्व को देखते हुए तंत्र क्षेत्र में भी योग को विशेष अंग माना गया है।

शास्त्रों में पढ़कर योग साधने की ओर अग्रसर तो हुआ जा सकता है, किन्तु पूर्णतः योग क्षमता प्राप्त हो सके, इसके लिए किसी मार्गदर्शक की नितांत आवश्यकता होती ही है, जो यह निर्धारित कर सके, कि सामने वाले व्यक्ति के लिए योग की कौन सी पद्धति ज्यादा उपयुक्त होगी।

योग शास्त्रों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हुआ, कि 'राजयोग' एक ऐसी विद्या है, जिसके द्वारा मनः शक्तियों को नियंत्रित कर इच्छानुसार फल प्राप्त किया जा सकता है।

राजयोग जीवन का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य होता है, जो कि 'ब्रह्मपात' का महत्त्वपूर्ण विधान होता है। इससे जीवन की जितनी ऊर्ध्वगामी वृत्तियां होती हैं, जिसकी वजह से मनुष्य ऊंचा उठता है, उनकी प्राप्ति होती है। इन वृत्तियों को दो भागों में विभक्त करते हैं –

- **भौतिक वृत्तियां – धन, मान, यश, पद, प्रतिष्ठा, सौभाग्य, ऐश्वर्य, जीवन की पूर्णता और मनोकामना ये सब भौतिक उच्च वृत्तियां हैं।**
- **आध्यात्मिक वृत्तियां – कुण्डलिनी जागरण, क्रिया योग, सहस्त्रार जागरण, सिद्धाश्रम प्राप्ति – ये सब आध्यात्मिक उच्च वृत्तियां हैं।**

ऐसी कोई विद्या, ऐसी कोई विधा अभी तक स्पष्ट नहीं है, जिससे दोनों वृत्तियां एक साथ मिल सकें, क्योंकि लोगों के पास इतना समय नहीं है, कि वे साधना सम्पन्न कर सकें।

अतः आज के व्यस्ततम युग में अत्यधिक आवश्यक है, एक ऐसी क्रिया और एक ऐसे सक्षम गुरु की जो शिष्य को ''राजयोग'' प्रदान कर सकें। एक प्रकार से राजयोग 'पूर्णत्व दीक्षा' है, उदात्ततम 'शक्तिपात' है, 'जीवन के गूढ़तम तत्त्वों की विवेचना' है, एक ही झटके से शिष्य को 'पूर्णता तक पहुंचाने की श्रेष्ठ क्रिया' है।

ऐसा ही राजयोग ऋग्वेद में वर्णित है और जितने भी उच्चकोटि के उपनिषद् हैं, उसमें भी राजयोग का संक्षिप्त विवरण है। वस्तुतः इस बात को सभी ऋषि-मुनियों ने स्वीकार किया है, कि राजयोग के सदृश संसार में अन्य कोई क्रिया नहीं है। राजयोग से व्यक्ति एक ही छलांग में संसार-समुद्र को पार कर सकता है, एक ही क्रिया से पूरे जीवन के आनन्द को प्राप्त कर सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि राजयोग प्राप्त कैसे हो?

राजयोग इतनी गूढ़तम क्रिया है, जिसका ज्ञान प्रत्येक गुरु को नहीं होता है, कोई-कोई विरला गुरु ही राजयोग सम्पन्न करा सकता है, परन्तु वह भी राजयोग कोई पांच या दस वर्षों में एक बार ही सम्पन्न करवाता है। वह चाहे एक शिष्य को सम्पन्न करावे, चाहे एक हजार शिष्यों को; पर ऐसे गुरु का आज के युग में मिलना कठिन ही नहीं असंभव भी है। कहने को तो सैकड़ों लोग कह सकते हैं, कि राजयोग दीक्षा या प्रयोग सम्पन्न करवाया जा सकता है या करवा दूंगा, लेकिन वास्तविक राजयोग क्या है, यह तो विवेकानन्द जी भी भली-भांति समझ नहीं पाये, फिर भी उन्होंने पूर्णता के साथ विवेचन किया और उसके माध्यम से लोगों को मालूम चला, कि वास्तव में राजयोग कितनी श्रेष्ठतम क्रिया है।

इस प्रकार की श्रेष्ठतम क्रिया किसी पुरुष को प्राप्त हो जाती है या किसी स्त्री को प्राप्त हो जाती है, तो उसका तो पूरा जीवन ही अपने आप में धन्य हो जाता है, क्योंकि राजयोग प्राप्त होना ही जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्ति है, विजय प्राप्ति है, पुरुषार्थ प्राप्ति है, यौवन प्राप्ति है, सिद्धाश्रम प्राप्ति है, कामना पूर्ति है, भोगेच्छा पूर्ति है, सम्पूर्ण जीवन का कायाकल्प है, वृद्धावस्था को यौवन में परिवर्तित करने की क्रिया है और साथ ही 'सहस्त्रार' जो कि हमारे मस्तिष्क के ऊपरी भाग में है, उसको खोलने के लिए अद्वितीय दीक्षा विधान है।

ऐसी ही सिद्धाश्रम राजयोग दीक्षा 'एक जनवरी' को पूज्य गुरुदेव ने प्रदान करने का निश्चय किया है और यह तो कुछ पल का काम है, इससे कुछ क्षण में ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। तभी तो पूर्ण विधि के साथ पूज्य गुरुदेव नववर्ष के अवसर पर यह क्रिया सम्पन्न करवा रहे हैं। (देखिये कवर का II पेज)

यद्यपि उन्होंने इस प्रकार का प्रयोग जीवन में कभी सम्पन्न करवाने के लिए सोचा ही नहीं, कराना तो बहुत दूर की बात है। यह उनके जीवन में, शिष्यों के जीवन में एक नया मोड़ है, एक परिवर्तन है, कि इस प्रकार का अवसर प्राप्त हो रहा है। जो बहुत भाग्यवान होंगे, वे ही इस अवसर का लाभ उठाकर इस अद्वितीय दुर्लभ, अनिर्वचनीय, श्रेष्ठतम 'सिद्धाश्रम राजयोग दीक्षा' को प्राप्त कर जीवन के आनन्द को पूर्णता के साथ प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे। वास्तव में एक प्रकार से देखा जाय, तो कई-कई जन्मों के पाप-कर्मों को धोकर पूर्ण शुद्ध होने की क्रिया राजयोग के माध्यम से ही सम्भव है और उससे भी बड़ी बात यह है, कि एक भिखारी भी राजयोग प्राप्त करके राजा के समान जीवन व्यतीत कर सकता है।

सम्पन्न होना अलग बात है, राजा की तरह जीवन व्यतीत करना अलग बात है। एक व्यक्ति सम्पन्न होकर भी घर के कलह से, बीमारी से, तनावों से, समस्याओं से, मुकदमेबाजी से, अड़चनों से, कठिनाई से और सैकड़ों ऐसे कारण हैं जिससे वह चाह कर भी आनन्दयुक्त जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है .... और अगर वह चाह कर भी ऐसा जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, तो वह सारा धन, चाहे वह करोड़पति ही हो, व्यर्थ है; क्योंकि धन का उपयोग उसके जीवन में नहीं हो पा रहा है और इसके उपयोग के लिए यह जरूरी है, कि तन से, मन से जीवन की पूर्णता प्राप्त करते हुए राजा की तरह जीवन व्यतीत किया जा सके। हम जीवन में जो चाहें, वह प्राप्त हो सके, हमारे जीवन में किसी चीज का अभाव न रहे, इसलिए यह रंक को राजा की तरह जीवन प्रदान करने की क्रिया है, यह सामान्य व्यक्ति को अद्वितीय व्यक्तित्व बनाने की क्रिया है, यह पुरुष को देव पुरुष, युग पुरुष, चेतना पुरुष बनाने का सोपान है। वास्तव में राजयोग पूरे शास्त्रों का निचोड़ है, एक बूंद को समुद्र बना देने की क्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति वह प्राप्त कर सकता है, जो कुछ उसके ज़ीवन का लक्ष्य है, अभीष्ट है।

पूज्य गुरुदेव इस युग के अद्वितीय, अधिकृत विद्वान हैं, योग्यतम आचार्य, योग्यतम व्यक्तित्व हैं। अत्यन्त प्रार्थना पर उन्होंने नव वर्ष के अवसर पर यह सौभाग्य अपने शिष्यों को देने का निश्चय किया है, जो हमारे जीवन की श्रेष्ठतम स्थिति है। मुझे विश्वास है, कि ज्यादा से ज्यादा शिष्य इस दिव्यतम क्रिया को प्राप्त कर सकेंगे और अपने जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ऊर्ध्वागामी वृत्तियों को पूर्णतः हस्तगत कर सकेंगे। ❁

महाशिवरात्रि

इच्छित कामना सिद्धि प्रयोग

महाशिवरात्रि पर्व पर गुरु अपने महेश्वर स्वरूप में अपने शिष्यों का हित संवर्द्धन करते हैं। उनके समीप रहने वाले साधकों को उनकी तेजस्विता तो प्राप्त होती ही है, किन्तु किसी कारणवश यदि कोई साधक अपने गुरु तक नहीं पहुंच सके तो सद्गुरु अपनी मानसिक तरंगों को उस तक विस्तारित कर अपनी तेजस्विता प्रदान करते ही हैं; उनकी तेजस्विता को पूर्णतः आत्मसात करने के लिए ही तो प्रस्तुत है यह अतिगोपनीय एवं दुर्लभ साधना-विधान . . .

महाशिवरात्रि अत्यन्त पुण्यदायक उत्सव पर्व है। यह उत्सव पर्व इसलिए कहा गया है, क्योंकि इस दिन भगवान शिव का विवाह आद्याशक्ति पार्वती से हुआ था। इस दिन भगवान शिव की आराधना करने वाले या उनसे सम्बन्धित पूजन या साधना करने वाले साधक पर भगवान शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर उसे इच्छित फल प्रदान करते हैं।

शिवरात्रि, जो कि देवताओं के देव महादेव से सम्बन्धित रात्रि है, इस दिन इस प्रयोग को करने से जन्म-जन्म की दरिद्रता का नाश होता है तथा जीवन के समस्त अभाव, कष्ट, दुःख, दैन्य, पीड़ा और अकाल मृत्यु को समाप्त करने में यह समर्थ है। यह रात्रि तो भोग और मोक्ष प्रदायक रात्रि है। इस दिन भगवान शिव की जिस रूप में आराधना की जाय, वे उसी रूप में प्रसन्न होकर उसे फल प्रदान करते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में व्यतीत होने वाला अवसर साधक के जीवन का परम सौभाग्य होता है। ऐसा सौभाग्य प्राप्त कर व्यक्ति अपने-आप को साधनात्मक मार्ग पर अग्रसर कर आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही सम्पदाओं का स्वामित्व स्वतः प्राप्त कर लेता है।

यदि ऐसा सुअवसर पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में व्यतीत हो, तो उस साधक का परम सौभाग्य ही होता है, जिससे वह स्वयं को साधनात्मक मार्ग पर अग्रसर कर लेता है और अपने जीवन को आध्यात्मिक और भौतिक, दोनों सम्पदाओं से युक्त बनाता है।

लेकिन किन्हीं कारणोंवश जो साधक या इच्छुक व्यक्ति इस महत्त्वपूर्ण कालखण्ड का पूज्यगुरुदेव के सान्निध्य में उपयोग न कर पायें या शिविर में भाग न ले पायें, तो उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने ऐसे साधकों के लिए विशेष रूप से साधना सामग्री पैकेट तैयार करवाया है, जो महाशिवरात्रि पूजन व प्रयोग से सम्बन्धित है, जिससे साधक घर में ही शिव पूजन सम्पन्न कर शिव कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

लेकिन साधकों और शिष्यों को चाहिए, कि वे इस सुअवसर को पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में ही व्यतीत करें, फिर गुरु तो सभी रूपों में स्थापित हैं, क्योंकि—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

इस पृथ्वी पर गुरु ही वह प्रत्यक्ष देव हैं, जो अपने आप में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों स्वरूपों को समेटे हुए हैं, तो फिर उनके सान्निध्य में इस महत्त्वपूर्ण अवसर का उपयोग करने का सौभाग्य हाथ से नहीं खोना चाहिए।

गुरु, शिवरात्रि पर्व पर शिव स्वरूप में विद्यमान रहते ही हैं— और शिव का एक स्वरूप भोलेनाथ का है, तो दूसरा औघड़दानी स्वरूप भी है, तभी तो वे अपनी इच्छा से न जाने कब क्या दे दें, यह कोई नहीं जान सकता है; क्योंकि उन्होंने तो भस्मासुर जैसे दानव को भी उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे अमर होने का वरदान दे दिया, फिर ऐसे कृपालु देव न जाने किस क्षण क्या दे दें, कुछ नहीं कहा जा सकता। अतः हम शिष्यों को तो हर क्षण अपनी झोली फैलाये खड़े रहना ही है, जिससे हमारे जीवन में आकस्मिक रूप से हमारी इच्छानुसार परिवर्तन आ सके।

महाशिवरात्रि पर्व पर जो साधक, शिष्य और पाठक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में साधना करने का अवसर प्राप्त कर लेंगे, उनके भाग्य का तो कहना ही क्या है, किन्तु जो वहां उपस्थित न हो सकें, उनके लिए पूज्यपाद गुरुदेव ने **''इच्छित कामना सिद्धि प्रयोग''** हेतु पैकेट तैयार कराया है, जो भगवान शिव के दिव्य चेतस मंत्रों से चैतन्य किया गया है। इस पैकेट में आपको प्राप्त होगी निम्न सामग्री—

- **ज्योतिर्मय तेजस शिवलिंग**
- **रुद्राक्ष**
- **सिद्धिदायक फल**
- **कार्य सिद्धत्व गुटिका।**

इस पैकेट में दी गई साधना सामग्री के द्वारा प्रयोग सम्पन्न कर आप अपनी उस मनोकामना को, उस इच्छित फल को प्राप्त कर सकेंगे, जो साधारणतः प्राप्त होना कठिन दिख रहा था।

पूजन तथा पैकेट से सम्बन्धित प्रयोग विधि हम पत्रिका के फरवरी 96 के अंक में प्रकाशित करेंगे, जिससे दी गई विधि के द्वारा आप सफलता तथा सरलता पूर्वक पूजन सम्पन्न कर सकेंगे।

आप लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ही महाशिवरात्रि की पूजन विधि को ऑडियो कैसेट द्वारा भी आप लोगों तक पहुंचाने की व्यवस्था की गयी है, जिससे आप लोग भगवान शिव के श्लोक तथा मंत्रों का स्पष्ट उच्चारण जान सकें और उच्चारण सम्बन्धी गलती से पूर्णतः सुरक्षित हो सकें।

आप आज ही अपना ऑर्डर जोधपुर के पते पर लिख कर भेजें अथवा टेलीफोन नं. 0291—32209 पर पत्रिका कार्यालय में नोट करा दें, जिससे समय पर आपको पैकेट व कैसेट प्राप्त हो सके।

प्रयोग पैकेट— 240 रु.
ऑडियो कैसेट— 30 रु.

सम्मोहन के ३० महत्त्वपूर्ण दुर्लभ हीरक सूत्र

सम्मोहन का अर्थ होता है– 'स्व' का 'मोहन' अर्थात् स्वयं को मोहित करना। प्राचीन काल में ऋषियों का इस साधना को करने के पीछे उद्देश्य होता था, कि अपने आपको साधकर, अपने आप को मोहित कर, अपने को बाह्य वृत्तियों से काट कर ईश्वर साधना में संलग्न कर देना। बाद में यह सम्मोहन साधना एक चिकित्सा प्रणाली के रूप में भी विकसित हुई, जिसके माध्यम से व्यक्ति को मानसिक सुशांति प्रदान किया जाने लगा। यह चिकित्सा प्रणाली कोई भी सीख सकता है और सफल हो सकता है।

आज के युग में जटिलताएं इतनी अधिक बढ़ गईं हैं, कि व्यक्ति हर दम तनाव में रहने लगा है; परिस्थितियां इस प्रकार से बन जाती हैं, कि वह अपनी परेशानियां ऑफिस या दुकान से घर तक ले आता है और बाद में भी वही सोचता रहता है और स्वयं पर से नियंत्रण खोता ही चला जाता है, उसकी इन परिस्थितियों को देखते हुए, हम सम्मोहन के 30 अद्वितीय दुर्लभ सूत्र दे रहे हैं, जिसके माध्यम से वह स्वयं को सम्मोहित कर नियंत्रित कर सकता है और धीरे-धीरे तनावमुक्त हो सकता है। तनावमुक्त व्यक्ति ही दूसरों को तनावमुक्त कर सकता है, क्योंकि यह विज्ञान 'स्वयं' से आरम्भ होता है।

पूर्ण रूप से सम्मोहन कर्त्ता बनने के लिए व्यक्ति तभी समर्थ हो सकेगा, जब वह नियमित रूप से इन सूत्रों

को अपनाए, फिर वह अपनी दैनिक समस्याओं, घर, परिवार व कार्यालय की कठिनाइयों को सुलझा सकने में समर्थ होगा।

आपको सिर्फ 30 दिन तक इन सूत्रों को नियमित रूप से 10 मिनट देना होगा! आप किसी भी महीने की पहली तारीख से लेकर 30 तारीख तक इन सूत्रों को अपने जीवन में उतारने के बाद एक सफल सम्मोहन कर्त्ता बन जायेंगे।

इन सूत्रों को अपनाने के लिए व्यक्ति को हल्के रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए तथा उसके चेहरे पर ताजगी और प्रसन्नता झलकनी चाहिए। उसका पहनावा सुरुचिपूर्ण हो, जिससे उसको देख कर लोगों को आकर्षण महसूस हो। प्रस्तुत है यह क्रम जिसे सम्पन्न कर आप पूर्ण रूप से सफल सम्मोहन कर्त्ता बन जायेंगे—

एक तारीख : अपने दोनों हाथों को सामने की ओर फैला दें और इस बात का ध्यान रखें कि दोनों हथेलियां जमीन की ओर हों तथा हाथ पूरी तरह से तने हुए हों, इसके बाद आप धीरे-धीरे श्वास लीजिये और श्वास बाहर निकालिये। ऐसा 10 मिनट तक करें।

दो तारीख : अपने दोनों हाथों को सीधे सामने फैलाकर कुछ समय तक खड़े रहिए और उसके बाद धीरे-धीरे दोनों हाथों को सिर की ओर ऊपर ले जाइये, जब हाथ पूरी तरह से ऊपर की ओर तन जायें, तब सांस सामर्थ्यानुसार फेफड़ों में भर लीजिये और फेफड़ों में जितनी भी वायु है, उसे पूरी शक्ति से बाहर फेंकिये। इस बात का ध्यान रखिए कि आपको सांस निकालते समय पूरा जोर लगाना है और सांस धीरे-धीरे अन्दर लेना है।

तीन तारीख : अपने दोनों हाथों को फैला दें, हथेलियां आमने-सामने रहें, साथ ही साथ अपनी अंगुलियों को पूरी तरह से खोल दें। इसके बाद आप सांस को तेजी से अन्दर लें, धीरे-धीरे सांस बाहर निकालें।

चार तारीख : दोनों हाथों की हथेलियों को आमने सामने रखते हुए अपने सीने के सामने
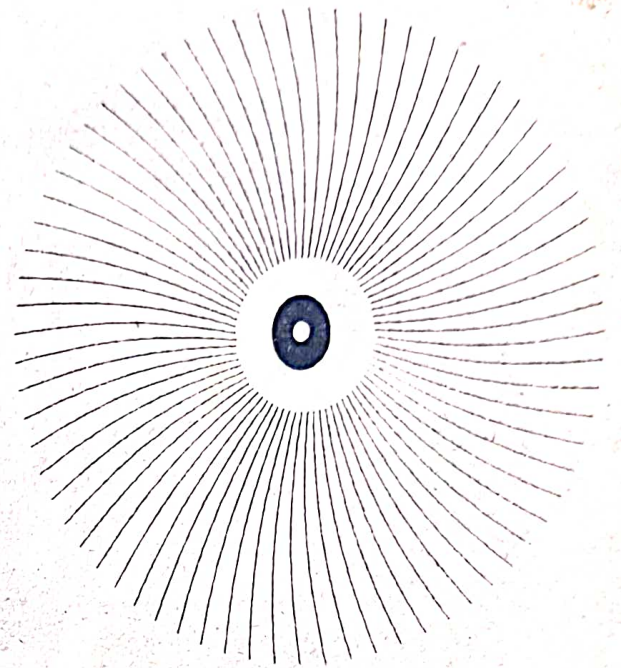
फैला दें और फिर दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर एक-दूसरे में फंसा दीजिये और फिर जितनी ताकत से सांस को अन्दर खींच सकें, उतनी ही ताकत से सांस को बाहर निकालिये।

पांच तारीख : दोनों हाथों की अंगुलियों को एक-दूसरे में फंसा कर आकाश की ओर जितनी ऊंचाई की ओर उठा सकें, उठाइये और फिर गहरी सांस लीजिये तथा छोड़िये।

छः तारीख : आंखों को दायीं तरफ घुमायें, फिर बायीं तरफ घुमायें। ऐसा 16 बार करें। सांस को नियंत्रित रखें।

सात तारीख : आंखों से ऊपर की ओर देखें, फिर नीचे की ओर देखें। ऐसा 16 बार करें।

आठ तारीख : आंखों से चारों ओर देखने का प्रयत्न करें अर्थात् गोल-गोल घुमायें, ताकि आपकी आंखें वह क्षमता ग्रहण कर सकें, जिससे कि आप स्वयं को मोहित कर सकें, इसे 16 बार करें।

नौ तारीख : भौंहों के बीच में देखने का प्रयास करें। यह क्रिया दो से पांच मिनट तक करें।

दस तारीख : अपने से तीन फीट की दूरी पर

सुखमय, आनन्दमय जीवन के क्षणों में जब विष घुल जाता है और समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . . यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाय
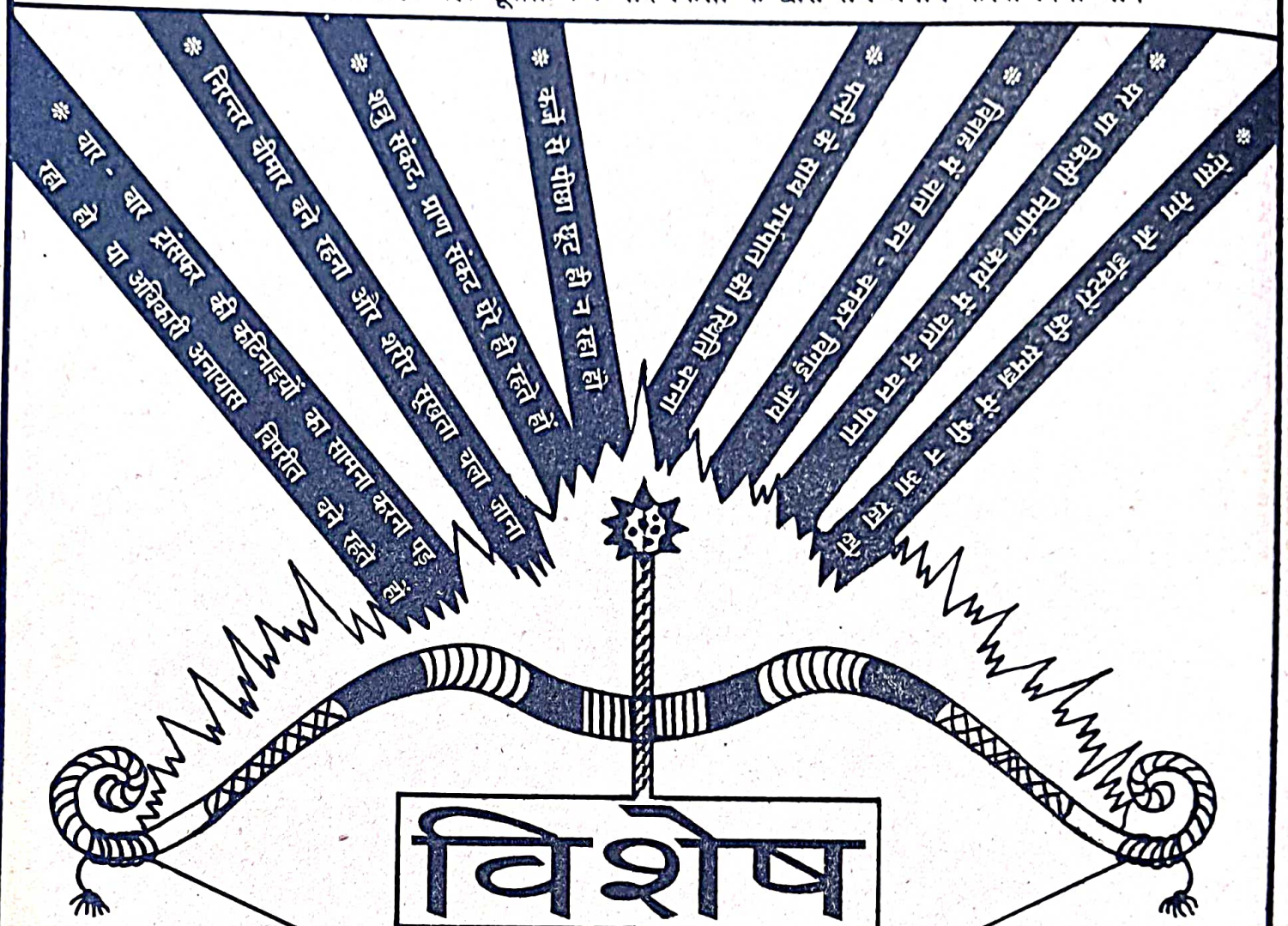
या फिर झगड़े- झंझटों में बार-बार फंस जाना, मुकदमेबाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **मंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।** संस्थान के योग्य विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्रसिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - 11000/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209,फेक्सः 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

शक्तिचक्र स्थापित करें, उस पर त्राटक करें जब तक आप की आंखों में आंसू न आ जाय, फिर आंखें बन्द कर बैठ जायें।

ग्यारह तारीख : सम्मोहन का प्रमुख सूत्र है, कि आपका मन निर्विचार बने। अत: गुरु ध्यान के माध्यम से अपने मन को निर्विचार करने की प्रक्रिया अपनायें।

बारह तारीख : सम्मोहन कर्त्ता अपनी वाणी को प्रभावाशाली बनाने के लिए जीभ को दोनों किनारों से मोड़ कर नली की तरह बनायें और जीभ को बाहर निकाल कर यथासम्भव तेजी से सांस लें और छोड़ें। यह क्रिया 15-20 बार करें।

तेरह तारीख : सम्मोहन कर्त्ता को अपनी वाणी में उतार-चढ़ाव और चेहरे के माध्यम से भाव प्रदर्शन करने की कला भी आनी ही चाहिए। अपनी वाणी के उतार-चढ़ाव और चेहरे के भाव प्रदर्शन के लिए वह शीशे के सामने खड़ा होकर इसका अभ्यास करे तथा मुंह में खूब हवा भर ले और हाथ से दबाव देकर निकाल दे। यह क्रिया 16 बार करें।

चौदह तारीख : सम्मोहन कर्त्ता को "सम्मोहन दीक्षा" लेनी चाहिए और उससे सम्बन्धित मंत्र जप करना चाहिए। यह क्रिया कोई मनोरंजन की वस्तु नहीं है, इसे पूर्ण मनोयोग से करना चाहिए। इस दिन आप पद्मासन लगाकर पूर्ण एकाग्रता से गुरु मंत्र कर 25 माला जप करें।

पन्द्रह तारीख : सम्मोहन के क्षेत्र में कई बार व्यक्ति सम्पूर्ण क्रियाओं को करने के बाद भी सफल नहीं हो पाता है, क्योंकि वह अन्तर्मन और बाह्य मन को जोड़ने में असफल हो जाता है। जब व्यक्ति अपने अन्तर्मन और बाह्य मन को जोड़ने में सफल होता है, तभी वह पूर्ण रूप से सफल सम्मोहन कर्त्ता बन पाता है। अन्तर्मन और बाह्य मन को एक साथ जोड़ने का उपाय है, गुरु चित्र पर त्राटक का अभ्यास 10 मिनट तक।

सोलह तारीख : ध्यान की गहनता में बिम्ब धारण। सम्मोहन तो अणुओं का संयोजन और वियोजन ही है। इन्हीं अणुओं को संयोजित करने पर उसका सम्मोहक व्यक्तित्व निर्मित होता है। इस दिन अपने बिम्ब को अपनी बंद आंखों के समक्ष लाने का प्रयत्न करें।

सत्रह तारीख : सम्मोहन विज्ञान का आधार है 'आत्म विश्वास' और 'इच्छा शक्ति' इस को जब व्यक्ति संगठित कर सामने वाले पर अपने विचारों का संप्रेषण करने में सक्षम हो जाता है, तभी वह इस क्षेत्र में अग्रसर हो सकेगा। इसके लिए आप 'दीप त्राटक' का 5-10 मिनट तक अभ्यास करें।

अठारह तारीख : स्वयं को आजमाइये, सम्मोहन पहले स्वयं पर ही करें और यह भावना दें, कि आपका मन निर्विचार हो रहा है और इसके साथ ही यदि आपका मन पूर्ण रूप से निर्विचार हो रहा है, तो समझिये कि आपका प्रयोग सफल हो रहा है।

उन्नीस तारीख : आइने के सामने बैठ कर स्वयं को यह भावना दें, कि आप निद्रा में जा रहे हैं और अगर मात्र दो या तीन बार यह भावना देने पर आपको नींद आने लगे, आपकी पलकें भारी होने लगें, तो निश्चय ही आप एक सफल सम्मोहन कर्त्ता बनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

बीस तारीख : आप किसी पार्टी में जायें या लोगों के समूह में, तो वहां अपने परिचित को उसकी पीठ की ओर देखते हुए यह भावना दीजिये, कि वह आपकी तरफ घूमे और देखे; अगर वह ऐसा करता है, तो आपका प्रयोग सफल रहा है।

इक्कीस तारीख : आप अपने ही शहर में रहने वाले किसी मित्र को यह भावना दें, कि वह तुरंत अभी इसी क्षण आपसे फोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करे; आप देखेंगे, कि वह आपको फोन करता है और कहता है, कि न जाने क्यों मेरा मन बार-बार तुम्हारी ओर खिंच रहा था।

बाइस तारीख : सम्मोहन कर्त्ता को चाहिए कि वह अपने व्यवहार में संयम स्थापित करे, ताकि जब वह माध्यम पर सम्मोहन करे, तो माध्यम को अविश्वास न हो। उसका चरित्र निर्विवाद रूप से उच्चकोटि का होना चाहिए, जिससे मात्र उसकी आंखें ही नहीं अपितु पूरा शरीर ही सम्मोहन से पूर्ण हो जाय। आज आप किसी परिचित के चित्र पर ध्यान एकाग्र कर उसे अपने पास आने की भावना दें, यदि वह आता है, तो आप सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

तेईस तारीख : आप किसी ऐसे माध्यम को लें, जो आपको जानता हो तथा आपके प्रति उसे पूर्ण रूप से विश्वास हो। उस माध्यम की आंखों में देखते हुए आज्ञा दें और देखें कि वह आपकी आज्ञा का पालन कितनी देर में कर रहा है।

चौबीस तारीख : अगले दिन माध्यम के सामने चाबी का गुच्छा या कांच की गेंद हिलाते हुए उसे अपनी आज्ञा प्रेषित करें। यदि वह पालन करता है, तो आपका प्रयोग सफल रहा।

पचीस तारीख : माध्यम को धीरे-धीरे गहन निद्रा में ले जायें तथा फिर उसे वापस उस नींद से बाहर लायें, अगर वह बाहर नहीं आ रहा है, तो सम्भव है, कि वह अपनी स्वाभाविक नींद ले रहा है। ऐसे में घबड़ाने की जरूरत नहीं। आपका प्रयोग सफल रहा है।

छब्बीस तारीख : माध्यम को फिर से गहन निद्रा में ले जायें और उससे प्रश्न करें; अगर वह उत्तर देता है, तो आपका प्रयत्न सफल हो रहा है।

सत्ताइस तारीख : दोनों भौंहों के बीच अंगूठे से दबाव डालकर उसकी आंखों में आंखें डालकर गम्भीर एवं आदेशात्मक स्वर में आज्ञा दें। वह आज्ञा का पालन करेगा।

अट्ठाइस तारीख : जब आपका माध्यम सामान्य अवस्था में हो, तो उसके किसी अंग को देखकर यह भावना दें, कि वह आपके पीछे-पीछे आये। यदि वह ऐसा कर रहा है, तो आप सफल हो रहे हैं।

उन्तीस तारीख : माध्यम यदि मानसिक रूप से परेशान है, तो उसे किसी ऐसे स्थान पर बैठायें, जहां पर वह पूर्ण रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस करे, फिर उसे भावना दें, कि उसे कोई मानसिक परेशानी नहीं है और वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है। माध्यम को असहज न होने दें, उसे पूर्ण रूप से सहजतापूर्वक ही सम्मोहन की भावना दें।

तीस तारीख : सम्मोहन की पूर्ण सफलता का गूढ़ रहस्य है 'गुरु मंत्र का जप'; आप प्रतिदिन समयानुसार चार या सोलह माला गुरु मंत्र का जप अवश्य करें।

ये सूत्र सम्मोहन के क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को सफल सम्मोहन कर्त्ता बनाने के लिए सक्षम हैं। इन सूत्रों के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को इतना आकर्षक बना लेगा, कि पत्थर हृदय भी आपके वश में हो जायेगा, क्योंकि यह क्रिया है, अपने आप में सम्पूर्ण आकर्षण किरणों को समाहित करने की। जिस प्रकार किसी लेंस पर सूर्य की किरणों को एकत्रित कर उसकी तीव्रता से कागज भी जला सकते हैं, उसी प्रकार से व्यक्ति अपनी समस्त शक्ति, ऊर्जा को केन्द्रीभूत कर अपनी आंखों के माध्यम से प्रेषित कर सम्मोहन करने में सक्षम हो जाता है, अपने साथ ही किसी को भी मोहित करने में, किसी को भी आकर्षित करने में।

यह सम्पूर्ण प्रक्रिया जो मात्र तीस दिनों की है, अगर साधक पूर्ण एकाग्रता से सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह इकत्तीसवें दिन एक सफल सम्मोहन कर्त्ता बन जायेगा। ❋

नववर्ष के अवसर पर

प्रबल सिद्धिदायक राजयोग दीक्षा

और कई प्रयोग भी

मैं इस दुर्लभ राजयोग दीक्षा हेतु नववर्ष का प्रथम दिन पूज्यपाद गुरुदेव के साथ मनाना चाहता हूं, इसके लिए पांच पत्रिका सदस्यों के नाम व संबंधित शुल्क 180 x 5 = 900/- + 30/- डाक व्यय कुल 930/- मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा जोधपुर के पते पर भेज रहा हूं (या सदस्य नहीं बना पा रहा हूं तो 930/-) का ड्राफ्ट या मनीऑर्डर भेज रहा हूं।

1. नाम : ______________________________

   पूरा पता : ______________________________

   ____

2. नाम : ______________________________

   पूरा पता : ______________________________

   ____

3. नाम : ______________________________

   पूरा पता : ______________________________

   ____

4. नाम : ______________________________

   पूरा पता : ______________________________

   ____

5. नाम : ______________________________

   पूरा पता : ______________________________

   ____

मेरा नाम व पूरा पता ______________________________

____

____

नोट : आप इसे भर कर ड्राफ्ट जो "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, और जोधपुर में देय हो, इसे लिफाफे में डालकर जोधपुर पता — मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज0) के पते पर अभी भेज दें, मनीऑर्डर भेजा हो तो उसकी रसीद इस पन्ने पर चिपका कर भेज दें। और पन्ना भी पत्रिका से काटकर भेज दें या इस पन्ने की जेरॉक्स अथवा प्रतिलिपि बनाकर भेज दें, यदि आपके मित्र या पत्नी या अन्य कोई सदस्य भाग लेना चाहें तो इस पन्ने की फोटोस्टेट कॉपी (जेराक्स) बना कर भर कर धनराशि के साथ जोधपुर के पते पर भेज दें तभी हम आपकी उच्चस्तर की व्यवस्था व राजयोग से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था कर पायेंगे। अगर यह सब किसी कारणवश सम्भव न हो तो यहां आने पर भी धनराशि जमाकर आप लोग भाग ले सकते हैं।

अब परिवार के सदस्यों को अकाल मृत्यु, रोग, कष्ट पीड़ा से पूर्णतः मुक्ति प्राप्त हो सकती है, क्योंकि इससे तेजस्वी मंत्र तो इस सम्बन्ध में अन्य कोई है ही नहीं ......

काल पर विजय प्राप्त करना पौरुषता है - यह तो उस व्यक्ति के समान है, जिसके सिर पर आगे बाल हैं किन्तु जो पीछे से गंजा है, यदि निश्चित एवं विशिष्ट क्षण को पहिचान कर उसके आगे से बाल पकड़ लिए जायें, तो व्यक्ति काल पर विजय प्राप्त कर लेता है; यदि नहीं, तो पीछे से झपट्टा मारने पर भी उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

काल को वश में करना कोई सरल कार्य नहीं है, बिरले ही होते हैं, जो ऐसा कर पाते हैं - विश्वामित्र, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य, शंकराचार्य, बुद्ध, राम, कृष्ण आदि ऐसी ही दिव्य विभूतियां हुईं, जो महापुरुष कहलाये, जिनमें काल के भाल पर कुछ भी लिख देने की क्षमता आ गई थी। वे भी दो हाथ, दो पैर वाले ही व्यक्ति थे और हमारी ही तरह हाड़-मांस के पुतले, किन्तु अपने विचारों से, अपने चिन्तन से, अपनी धारणा से अपनी पौरुषता के बल पर वे सामान्य से देव पुरुष बन गये ..... वे क्षण को चूके नहीं, उसकी महत्ता को युग के सामने प्रतिपादित कर आने वाली पीढ़ियों के लिए उदाहरण बन प्रस्तुत हुए ... जब वे ऐसा कर सके, तो आप भी इस योग्य बन सकते हैं; आवश्यकता है, उस गूढ़ चिन्तन को, उस धारणा को गहराई से समझने की और उसे अन्दर उतारने की।

काल पर विजय प्राप्त करने का अर्थ है - मृत्यु-भय, भूत, भविष्य, वर्तमान को जान लेना, ब्रह्माण्ड में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाना, जीवन के उन पाप-दोषों से मुक्ति प्राप्त हो जाना, जो कि जीवन का अंत कर देते हैं ... और यह "काल विजय

काल विजय प्रयोग

ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म कणों से सम्पर्क स्थापित कर घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाना कोई सामान्य बात नहीं ... वे तो बिरले ही होते हैं, जो काल पर विजय प्राप्त कर पाते हैं .... 'काल पुरुष दीक्षा' के उपरांत एक सामान्य सा व्यक्ति भी 'काल पर विजयी' बनने में समर्थ हो सकता है, इस मानव जीवन को सार्थक कर सकता है।

आप सोच रहे होंगे, कि क्या सामान्य मानव के लिए यह सम्भव है, कि वह आपके भूत, भविष्य, वर्तमान का लेखा-जोखा भली प्रकार से प्राप्त कर सके और अघटित एवं असंभव घटनाओं की जानकारी पहले से ही ज्ञात कर सके?

तो उत्तर होगा "हां" परन्तु मनुष्य बनकर नहीं, अपितु उससे कुछ ऊपर उठकर उसे साधक की श्रेणी में आना होगा ..... और उससे भी पहले शिष्य बनाना होगा, तभी वह काल पर विजय प्राप्त करने का अधिकारी हो सकता है। इसके लिए उसे सबसे पहले योग्य गुरु से "काल पुरुष दीक्षा" प्राप्त करनी होगी। फिर वह काल विजय प्रयोग को सम्पन्न करे, तभी सफलता प्राप्त हो सकती है या फिर गुरु के आशीर्वचनों से भी ऐसा हो सकता है, कि बिना दीक्षा लिए ही उसे सिद्धि प्राप्त हो जाय।

काल विजय प्रयोग तो गृहस्थ व्यक्ति के लिए सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र है, जो यमराज को भी पीछे हटाने की सामर्थ्य रखता है, फिर मृत्यु-भय कैसा? और

प्रयोग" इन्हीं अघटित और असम्भाव्य घटनाओं को अपने में समेटे है, जिनका मनुष्य को पूर्वाभास भी नहीं होता और वह विभिन्न विघटनकारी तत्त्वों से जूझता हुआ अंत में मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

जब भय नहीं है, तो वह जीवन अपने-आप में श्रेष्ठ है, उच्च है — जहां न कोई रोग है, न कोई शोक है, केवल आनन्द घन की वर्षा से ही पूरा जीवन आप्लावित होने लगता है, क्योंकि जीवन अत्यधिक सुख, शांति और समृद्धि पूर्ण बन जाता है।

यह जीवन का श्रेष्ठतम प्रयोग है, जिसे सिद्ध कर स्वयं की ही नहीं, अपितु परिवार व समाज की समस्याओं का भी निराकरण सरलता से किया जा सकता है और जड़वत मनुष्य में प्राणों का प्रस्फुटन कर उनके रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य, भय, पीड़ा आदि अनेकों समस्याओं एवं कठिनाइयों का समाधान प्राप्त किया जा सकता है, फिर किसी प्रकार

की कोई चिंता नहीं व्याप्ती, फिर तो चेहरा बाल सूर्य की लालिमा की तरह ही दमकने लग जाता है .... जब ऐसा हो, तो क्यों न इस प्रयोग को कर ''काल विजयी'' की उपाधि से अलंकृत हुआ जाय, जिससे कि यह मनुष्य जीवन सार्थक हो सके।

जहां दुःख है न पीड़ा, जहां न रोग है न शोक और जहां न मृत्यु-भय है, वही सही अर्थों में जीवन है। जिसे योगियों ने जीया, संन्यासियों ने जीया, ऋषियों-मुनियों ने जीया, राम और कृष्ण ने जीया ..... और आप भी जी सकते हैं, क्योंकि समस्त कष्टों के नाश के लिए इससे तेजस्वी मंत्र तो इस सम्बन्ध में और कोई नहीं .... जो आपको समस्याओं से मुक्त कर सके, तो क्यों न हमेशा-हमेशा के लिए उनसे मुक्त हो, आनन्द पूर्ण जीवन की अभिवृद्धि की जाय।

प्रयोग विधान :

1. सर्वप्रथम '**काल पुरुष दीक्षा**' ग्रहण करें, फिर इसके पश्चात् '**काल विजय यंत्र**' और '**विजया माला**' जो विश्वामित्र संहिता के काल ज्ञान मंत्रों से आपूरित हो, प्राप्त कर लें।
2. यह रात्रिकालीन प्रयोग है।
3. 27/1/96 को यह प्रयोग करें अथवा किसी भी माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को भी कर सकते हैं।
4. पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
5. पीला आसन हो और स्वयं भी पीले वस्त्र धारण कर गुरुनामी दुपट्टा ओढ़ा हुआ हो।
6. साधक शांतचित्त हो गुरु का ध्यान करें और आवाहन करें, कि वे साधना की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान करने वहां उपस्थित हों, ऐसी भावना कर उनके लिए पुष्प का आसन लगा दें। यह आसन आप बाजोट पर स्वच्छ पीला वस्त्र बिछाकर लगायें। तथा गुरु चित्र और यदि गुरु यंत्र हो, तो उसे भी बाजोट पर स्थापित कर दें।
7. इससे पूर्व सुपारी को चावल की ढेरी पर स्थापित कर गणपति का स्मरण अवश्य करें, क्योंकि वे सुख-लाभ के प्रदाता हैं और गणनायक माने जाते हैं, उनके बिना तो कोई भी पूजा-विधान पूर्ण हो ही नहीं सकता, फिर मौली को वस्त्र की भावना देकर चढ़ा दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से भगवान गणपति का पूजन करें।
8. फिर हाथ में जल लेकर संकल्प लें और यंत्र को भी अपने हाथ पर रखें अपने नाम व गोत्र का उच्चारण कर, अपने कार्यसिद्धि की प्रार्थना करते हुए जल को जमीन पर छोड़ दें और काल विजय यंत्र को गुरु चित्र या यंत्र के सामने चावल की एक ढेरी बनाकर स्थापित कर दें।
9. गुरु चित्र या गुरु यंत्र और काल विजय यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से पूजन करें।
10. फिर विजया माला को अपने दाहिने हाथ में लेकर बायें हाथ से उसे ढक लें और निम्न मंत्र का 10 मिनट तक उच्चारण करें –

मंत्र

।। ॐ कं कालवशित्वं कं फट् ।।

11. अब माला को पूजा स्थान में रखें और इसी प्रकार यंत्र को लेकर 10 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें।
12. गुरु आरती करें।

मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् माला व यंत्र को पन्द्रह दिन के पश्चात् 16 वें दिन जल में विसर्जित कर दें।

यह प्रयोग अपने-आप में अद्वितीय है, जिसे सिद्ध करने पर सामान्य सा साधक भी त्रिकालदर्शी बन जाता है और आने वाली समस्याओं और कष्टों से पहले से ही सावधान हो जाता है, फिर जीवन में संकट आने से पूर्व ही उसका समाधान मिल जाता है, जीवन रोग-शोक से रहित, मृत्यु-भय से मुक्त हो जाने पर वह ''काल पुरुष'' की उपाधि प्राप्त कर लेता है। इस प्रयोग के माध्यम से ही बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अध्यात्म-पथ पर उच्चता के शिखर तक पहुंच सके और कालज्ञानी कहलाये ... और आप भी हो सकते हैं .... और यही पूज्य गुरुदेव की इच्छा भी है, कि आप सामान्य से विशिष्ट व्यक्ति बन सकें।

साधना सामग्री न्यौछावर– 295/-

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली **''गुरुधाम''** में ही **पूज्य गुरुदेव** या **शास्त्री जी** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम 5 से 8 बजे** के बीच सम्पन्न होती है और यदि श्रद्धा, विश्वास हो, तो उसी दिन साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)

12 दिसम्बर 95 — **हनुमान सिद्धि साधना**

अपने उपासक को समस्त विपत्तियों से मुक्त कराने वाले श्री हनुमान की साधना सिद्ध हो जाय, तो प्रत्येक प्रकार के शत्रुओं का जीवन से समापन होता ही है।

17 दिसम्बर 95 — **छिन्नमस्ता प्रयोग**

भगवती छिन्नमस्ता के विविध प्रयोगों में से चुनकर इस दिवस विशेष पर व्यक्ति को ऐसे रोगों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रयोग कराया जायेगा, जिसका निदान उसे सहजता से सुलभ नहीं हो पाता।

23 दिसम्बर 95 — **समस्त बाधक ग्रह दोष निवारण प्रयोग**
(विशेषतः शनि एवं मंगल शांति सिद्धि प्रयोग)

ग्रहों की स्थितियों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता ही है, उनके विपरीत प्रभाव से असाध्य कष्टों और समास्याओं का सामना करना पड़ता है; आवश्यकता है उनके विपरीत प्रभावों को समाप्त करने की . . . उसी से सम्बन्धित यह गोपनीय प्रयोग।

29 दिसम्बर 95 — **नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग**
(नव वर्ष साफल्य प्रयोग के साथ)

रूप, लावण्य और मादकता की पराकाष्ठा लिये . . . जिसका साहचर्य जीवन में उमंग, जोश और प्रसन्नता प्रदान करता है . . . और साथ ही प्रदान करती है . . . धन, सम्पदा, प्रेम, ऐश्वर्य . . . और साधना मार्ग में मार्गदर्शन भी करती है . . जिसकी साधना से पूरा जीवन सुखमय बनता है।

इस दिवस पर नव वर्ष के सुआगमन के लिए भी प्रयोग सम्पन्न कराया जायेगा, जिससे आपका पूरा (सन् 1996) वर्ष अत्यन्त सुख, आरोग्यता, सम्पन्नता तथा आपसी स्नेह और प्रेम से परिपूर्ण बना रहे।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे—

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- वार्षिक शुल्क तथा 24/- रुपये डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/- इस प्रकार कुल शुल्क (204/- + 180/- = 384/-) जमा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **''संजीवनी यंत्र''** दिया जायेगा व उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं एक वर्ष की सदस्यता और दुर्लभ 12 अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको **''संजीवनी यंत्र''** उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या एक पत्रिका सदस्य व 12 पुराने दुर्लभ अंक हैं।

नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

सिंहावलोकन

पत्रिका जगत की सिरमौर

मंत्र-

सन् 1995 में प्रकाशित सभी बारह
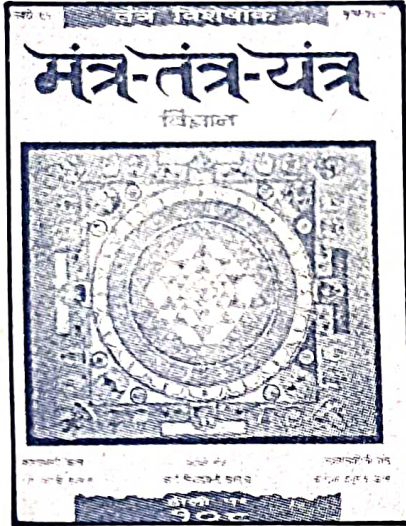
तंत्र विशेषांक

महाशिव रात्रि विशेषांक

होली विशेषांक

विशिष्ट सि
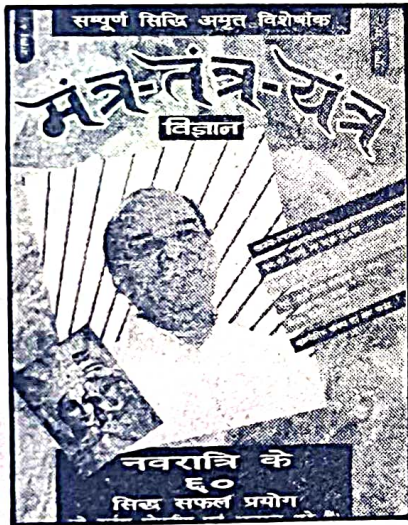
सम्पूर्ण सिद्धि अमृत विशेषांक
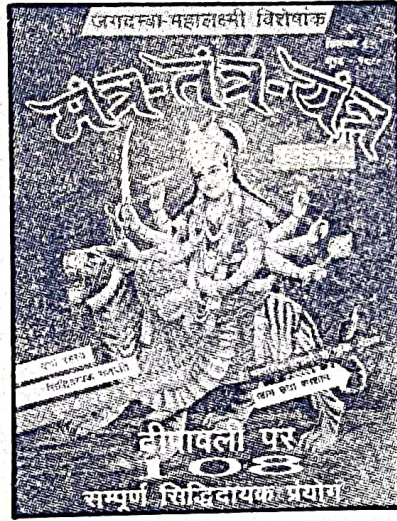
जगदम्बा-महालक्ष्मी विशेषांक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के प्रेमी पाठकों
अपने घर का सदस्य बना लिया है, के
की तरह मान कर वे अपनी समस्त मु
करते हैं . . . और जब यह रहस्य प्रेमी
खुला तो सभी में एक होड़ सी मच ग
करने के लिए . . . फिर देरी किस ब
इस सम्बन्ध में पत्र प्राप्त हुए पत्रिका

हिप्नोटि

: उपहार :

गुरुदेव के जीवन की श्रेष्ठतम साधनाओं में से कुछ दुर्लभ साधनात्मक रहस्यों का संग्रह ऑडियो कैसेट में

"विश्व की श्रेष्ठतम साधनायें"

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के सन् 1995 के बारहों अंक आप पढ़ें और अपने सभी सम्बन्धियों को भी अवश्य पढ़ायें। सन् 1995 के बारह अंकों का पूरा सेट प्राप्त करने के लिए आप पत्रिका कार्यालय को अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिख भेजें, 150/- की वी.पी.पी. से आपके पास पूरा सेट और उपहार सुरक्षित रूप से भेज दिया जायेगा।

यह योजना केवल मात्र महाशिवरात्रि तक के लिए ही है।

वं अध्यात्म जगत की एकमात्र पारिवारिक पत्रिका

तंत्र-यंत्र विज्ञान

ों को प्राप्त करने के लिए पत्रिका के प्रेमी पाठकों के मध्य प्रतिस्पर्धा

विशेषांक
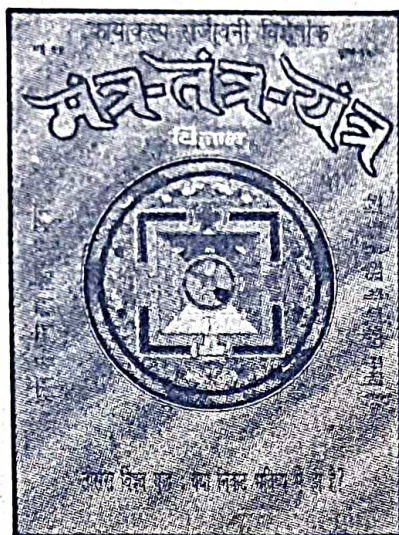
कायाकल्प संजीवनी विशेषांक
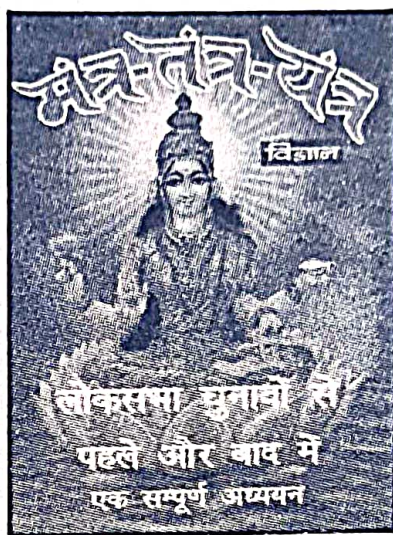
मनोकामना सिद्धि विशेषांक
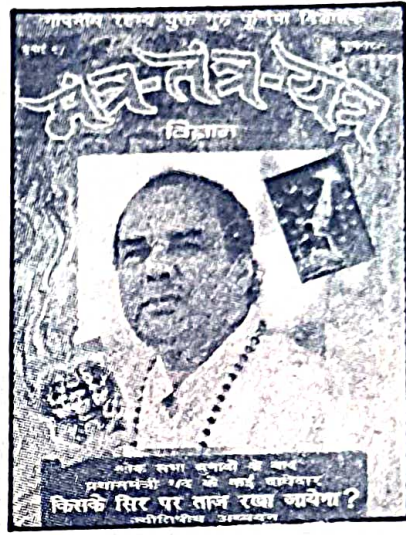
गुरु पूर्णिमा विशेषांक

पिछले 15 वर्षों से इस पत्रिका को
मात्र सदस्य ही नहीं घर के मुखिया
लों का हल इसके निर्देशन में प्राप्त
कों के रिश्तेदारों और मित्रों के सामने
सन् 1995 के सभी अंकों का संग्रह
की . . . और हजारों की संख्या में
लिय को . . .
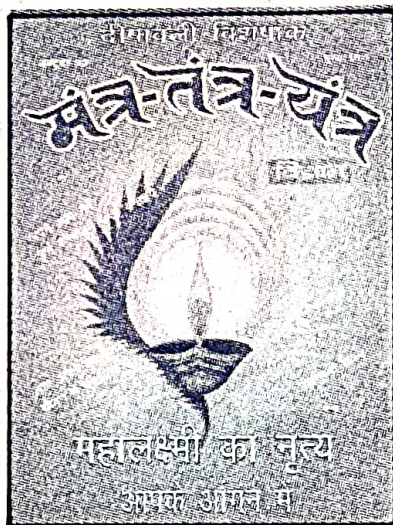
दीपावली विशेषांक

रहस्य-रोमांच विशेषांक

शेषांक

आप सभी को अपने पत्र का उत्तर आपकी ही पत्रिका के द्वारा प्राप्त हो, इसीलिए तो प्रस्तुत है यहां सन् 1995 के सभी अंकों के आवरण पृष्ठ का चित्र, जिससे आप अपनी जिज्ञासा को तब तक शांत रख सकें जब तक कि आपको यह पूरा सेट प्राप्त नहीं हो जाता है . . . आप सभी पाठकों की बुद्धि का हम 'लोहा मानते हैं', क्योंकि आपने सिर्फ वर्तमान की ही चिन्ता नहीं की है, अपितु अपने भविष्य, अपने बच्चों को भी यह अमूल्य उपहार धरोहर के रूप में देने का निश्चय कर लिया है, जिससे उनका भी भविष्य अत्यन्त सम्पन्नता, सुख-ऐश्वर्य व आनन्दयुक्त व्यतीत हो। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के प्रबुद्ध पाठकों की मांग पर ही तो प्रस्तुत है यह अति विशिष्ट योजना।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010
: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

आप अपने अनुभव जिसे आप संयोग न समझ कर दैविक कृपा, साधना में हुए अनुभव या दीक्षा प्राप्ति से जो लाभ हुए उन्हें लिखकर अपने फोटो के साथ 'सिद्धाश्रम', 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 के पते पर भेजें, लिफाफे के ऊपर ''साधक साक्षी हैं'' अवश्य लिखें।

साधक साक्षी हैं

जब मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हुई

मैं पेशे सरकारी नौकरी करता हूं। लगभग 5000 रु. प्रति माह वेतन मिलता है।

34 साल की उम्र तक नरक रूपी जीवन यापन करने के बाद सौभाग्य से दिनांक 21/11/94 को दिल्ली गुरुधाम में ''परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी'' का दर्शन पाया।

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा लेने के लिए मैं तैयार हो कर बैठा था, सद्गुरुदेव के अमृत रूपी वचनों की वर्षा हो रही थी — 'बस अब ठीक हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा।' गुरुदेव ने अपने श्रीचरणों से दो बार मुझ पर प्रहार करके ऐसा दुर्लभ शक्तिपात किया, जो कि गुरुदेव बहुत कम लोगों पर किया करते हैं।

कुण्डलिनी जागरण मंत्र का नियमित रूप से जप करता हूं। एक दिन ऐसा लगा, कि मेरी रीढ़ की हड्डी झनझना गई। शरीर के सभी अंगों में कुछ चलने का आभास होता है। **अब तो भूत काल, वर्तमान काल और भविष्य काल का स्पष्ट दर्शन होता है, जैसे हम टीवी पर चित्र देखते हैं। भविष्य में घटने वाली विशेष घटनाओं का तो पहले से ही पता चल जाता है।**

मेरे सामने जितनी समस्याएं खड़ी थीं, उतनी तो शायद ही किसी के पास हों। मगर गुरुदेव की कृपा से एक-एक करके 98 प्रतिशत समस्या पर काबू पाया, अब 2 प्रतिशत समस्याओं का निराकरण होना बाकी है। मुझे पूरा विश्वास है, उन पर भी मैं पूरी सफलता प्राप्त करूंगा।

अब मुझे इस दुनिया में सद्गुरुदेव के अलावा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। गुरुदेव की यादों में खोया रहता हूं; क्योंकि—

किसी काम की थी नहीं, न कौड़ी न देह।
सद्गुरुदेव किरपा करी, भई अमोलक देह।।

चन्द्रसेन नेगी
रिकांग पिओ, किन्नौर

काश! गुरुदेव मेरे जीवन में पहले आये होते . . .

मैं धार्मिक प्रवृत्ति की नारी हूं। मेरा पूरा परिवार भी धर्म में आस्था रखता है, परन्तु मेरी स्थिति मेरे पतिदेव के देहान्त के समय (4 मार्च 1990) से अच्छी नहीं थी, बस किसी तरह गुजारा चल जाता था। कभी-कभी तो एक रुपये के लिए भी तरस जाती थी।

परन्तु परमात्मा एवं गुरुदेव जी की कृपा से एक दिन मेरी पुत्री कु. गुलाब धनलाल पारथी अपनी सहेली के यहां से 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका की एक प्रति घर ले आयी। मैंने उसका अध्ययन किया और दिसम्बर 94 में मैं पत्रिका परिवार की सदस्य बनी।

गुरुदेव के आदेशानुसार **'तांत्रोक्त गुप्त मनोवांछित सिद्धि यंत्र' को पूजा स्थान में स्थापित कर 'लाल हकीक माला' से गुरुदेव द्वारा भेजे गये मंत्र का जप करना प्रारम्भ किया। मेरी पुत्री भी गुरु मंत्र जप एवं साधना करती है।** गुरुदेव ने मुझे स्वप्न में दर्शन दिया और प्रायः दर्शन देते रहते हैं।

मेरी पुत्री गोदिया में बी.एस.सी. प्रथम वर्ष में (गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करने से पूर्व) पांच बार असफल हुई, परन्तु गुरु साधना के पश्चात् बी.एस.सी. में उत्तीर्ण हुई और एम.बी.बी.एस. में एडमिशन मिल गया। अब वह 57.8 प्रतिशत अंक लेकर एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष में उतीर्ण हो गई।

करीब चालीस हजार का ऋण मेरे ऊपर था, दिसम्बर-94 से लक्ष्मी साधना मैंने शुरु की एवं जनवरी

से जुलाई तक सात माह में मैं पूरी तरह से ऋण मुक्त हो गई। पुत्री को भी सफलता मिल गई। मेरा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। मानसिक तनाव से ग्रसित थी, वह भी ठीक हो गया। मैंने 'सुकेशी लक्ष्मी' का जप किया पिछले रविवार को, इससे मुझे बहुत लाभ हुआ; मेरे जितने भी विरोधी थे, उनका भी व्यवहार नम्रतापूर्ण हो गया है।

यह पूर्ण रूप से विश्वसनीय सत्य है, कि साधना से सिद्धि निश्चित है एवं उसका फल भी अवश्यगामी है। गुरुदेव जी यदि आप मेरे परिवार को मेरे पतिदेव के देहान्त के पूर्व मिल गए होते, तब मेरे पति को अवश्य ही जीवनदान मिल जाता, यह मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरे परिवार पर एवं पूरे संसार के गरीबों पर आपकी हमेशा छत्रछाया बनी रहे, यही मैं आपसे प्रार्थना करती हूं।

श्रीमती धन्नूबाई धनलाल पारथी
बालाघाट, म.प्र.

गुरु मंत्र द्वारा असंभव कार्य भी सम्भव

मैं रायपुर वार्ड, कोटा निवासी कन्हैया लाल सोनी 43 वर्षीय एक मध्यम वर्गीय व्यापारी था, मगर गुरुदेव जी जिसके सिर पर आपका आशीर्वाद भरा हाथ होता है, वह भौतिक और आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में उन्नति करता है। आज मैंने यह भली-भांति अनुभव कर लिया है, कि आपसे जुड़ने के बाद दीक्षाओं और गुरुमंत्र की साधना से मुझे जो नाम, यश और वैभव मिला है, वह दूसरा कोई व्यक्ति नहीं दे सकता।

एक वर्ष पहले मैंने गैस एजेन्सी लेने का सपना देखा था, सोचा था कि कपड़े के व्यापार के साथ-साथ गैस एजेन्सी भी मिल जाती, तो मैं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और व्यापार में स्थायित्व वाला हो जाता; परन्तु यह गैस एजेन्सी की मान्यता प्राप्त करना मेरे लिए असंभव कार्य था, क्योंकि रायपुर संभाग में गैस कनेक्शन पाने वालों की बहुत लम्बी लाइन है, जिसमें पहुंचे हुए सिफारिशी व्यक्तियों को ही कनेक्शन मिल पाता है। **मेरे लिए तो आपकी शक्ति, दीक्षा और मंत्र ने उस समय उस पहुंच से अधिक कार्य किया, जब 'आल सलेक्शन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)' द्वारा एल.पी.जी. से रायपुर में 18/4/93 को मुझे चुना गया।**

मुझे गैस एजेन्सी के लिए जब मान्यता प्राप्त हुई, तब अपने आप पर विश्वास नहीं हुआ। आज मैं अपनी खुशी व्यक्त करते हुए आपसे यह अनुरोध करता हूं, कि पूज्य गुरुदेव जी मैं अपने गैस वितरक केन्द्र का उद्घाटन आपके श्रीचरणों द्वारा कराना चाहता हूं, आप छत्तीसगढ़ के किसी भी शिविर में जब भी पधारें, मेरा करबद्ध निवेदन है, कि महालक्ष्मी स्वरूप अपने चरण-कमल मेरी दुकान में रखने की कृपा करें तथा अपना करुणामय वरदहस्त हमेशा मेरे मस्तक पर बनाये रखें।

कन्हैया लाल सोनी
वार्ड-कोट, रायपुर (म.प्र.)

किं करिष्यति वै यमः

मैं अपने भाई से मिलने गरियाबंद गया हुआ था, वहां से वापसी पर कोबरा-राजिम के बीच जिस वाहन (जीप) में मैं सफर कर रहा था, उसका पिछला दायां चक्का (पहिया) चलती हुई वाहन में से निकल कर 150 फीट लुढ़कते हुए चला गया। उस समय हमारे वाहन की गति 60 से 80 किलोमीटर के मध्य थी। **इस स्थिति में हमारा वाहन 100 फीट से ज्यादा तीन पहिये के सहारे चलता रहा और वाहन में एक साइड को झुकाव भी नहीं हुआ।** वाहन में डिस्क (जहां पहिया लगा होता है) वहां खड़-खड़ की आवाज सुनकर सहयात्री जो पीछे बैठे थे, उन्होंने देखकर, ड्राइवर को बताया, कि वाहन का एक चक्का निकल चुका है। गाड़ी की रफ्तार को कम करके गाड़ी को रोका गया, मैं सामने बैठा था।

वहां से उतर कर जब गाड़ी की स्थिति को देखा, तो मेरे अन्तर्मन ने 'जय गुरुदेव' के शब्दों के साथ, पूज्य गुरुदेव का स्मरण कर विचार मग्न होकर कहा, कि – **'पूज्य गुरुदेव की कृपा दृष्टि से मैं और आप सभी बच गए',** फिर मैं सकुशल अपने घर तिल्दा पहुंचा। पूज्य गुरुदेव की कृपा हम पर सदा ही बनी रहे, ऐसी ही आकांक्षा के साथ।

दिलीप देवांगन
तिल्दा

यदि आपको गलतफहमी है कि आप तनावग्रस्त हैं, तो . . . अपने मानसिक तनाव को पूर्ण रूप से समाप्त करिये इन 21 सहज, सरल उपायों से

कर्म की क्रियाशीलता ही मनुष्य को तनाव मुक्त एवं तनावग्रस्त बनाती है, क्योंकि उसके द्वारा किये गये कार्य ही उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। यदि वह अच्छा कार्य करता है, तो वह प्रसन्नचित्त बना रहता है और यदि बुरे कार्य करता है, तो वह उसके दुःख, वेदना और मन की असंतुष्टि का कारण बन उसे तनावग्रस्त कर देते हैं, मन की संतुष्टि ही तनाव रहित होना है।

विचारों पर हुआ आक्रमण ही तनाव के बीज को आरोपित करने वाला होता है। घटित-अघटित घटनाओं के क्रम में तनाव की जड़ें मनुष्य के अन्दर तेजी से फैलती ही हैं, आवश्यकता है उसे फैलने से रोकने की, उसकी जड़ों को काटने की, जिससे कि वे जीवन की गति को रोक न सकें। निरन्तर गतिशील बने रहना, उन्नति के मार्ग पर तेज रफ्तार से आगे बढ़ना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है, जो मानव जीवन को उर्ध्वमुखी बना देने की क्रिया है।

कब, क्या परिस्थितियां निर्मित हों, इसका अनुमान
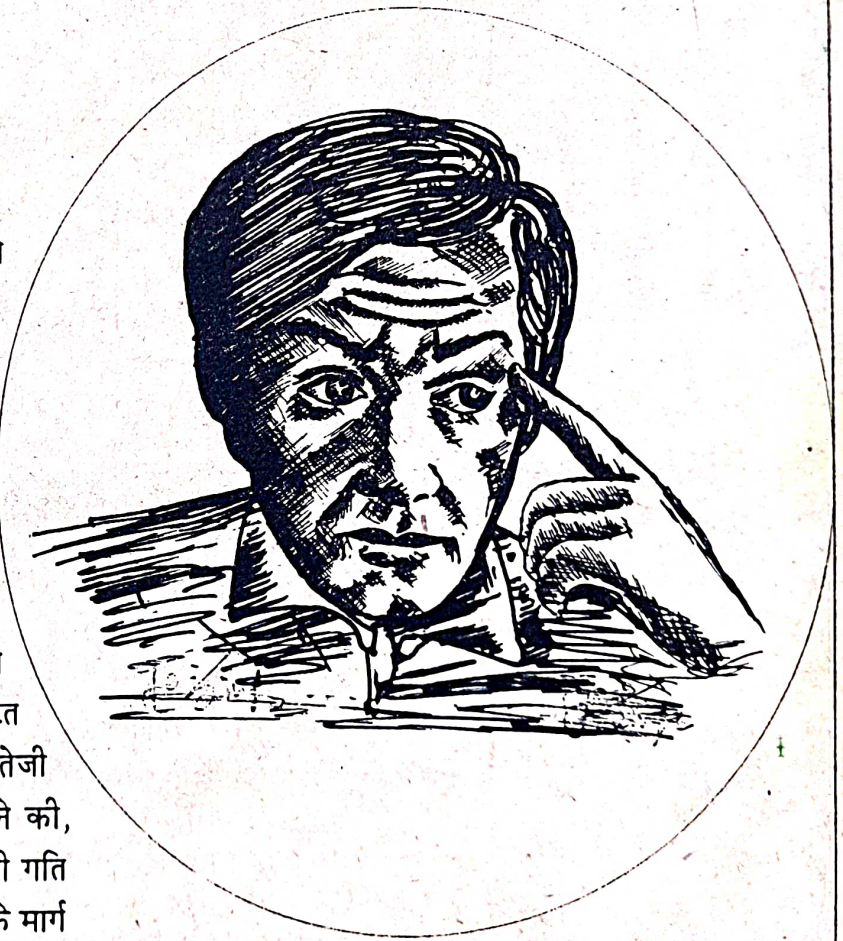
ईश्वर या गुरु के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है, तभी वह सभी तनावों से रहित है, वस्तुतः गुरु या ईश्वरीय चिन्तन-मनन को जीवन का आधार, जीवन की सफलता, जीवन का सौभाग्य कहा जाता है।

इसलिए शास्त्रों में, पुराणों में गुरुमय हो जाने की बात स्पष्ट रूप से कही गई है। सभी चिन्ताओं से मुक्त हो, जीवन को उत्सवमय बना देने की क्रिया तभी सम्भव हो पाती है, जिस क्षण व्यक्ति अपने आप को तनाव रहित अनुभव करता है, वह क्षण उसके जीवन का उत्सव ही होता है . . . परन्तु अपने प्रयासों से यह स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाती, कि हम तनाव रहित रह सकें, अतः गुरु-आज्ञा के अनुरूप ही आचरण कर अपने जीवन को ढाल लेना जीवन की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है। हमारे पूर्वजों ने भी इसी तथ्य को स्वीकार किया और उसे क्रियान्वित किया।

आपको भी यदि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को उत्सवमय बनाना है, तो इन निम्नलिखित 21 सहज, सरल उपायों को अपने जीवन में उतारना ही होगा, तभी विचारों में प्रबलता, कर्म की गतिशीलता, कर्मठता, दृढ़ता और प्रसन्नता का सागर मन को आह्लाद प्रदान कर सकेगा।

आइये! जीवन की सफलता, जीवन की उच्चता को प्राप्त करने के लिए इन दृष्टिकोणों को देखने और समझने का प्रयास करें व उन्हें अपने जीवन में उतारें, जिससे कि यह मानव जीवन उपयोगी सिद्ध हो सके –

1. यदि थोड़े से चने रात्रि में किसी पात्र में भिगोकर रख दिये जायें और प्रातःकाल उनको शुद्ध जल से धोकर खा लिया जाय, तो व्यक्ति को मानसिक बल तो प्राप्त होता ही है, साथ ही वह पूरे दिन तरोताजा बना रहता है।
2. मनुष्य को मानसिक तनाव से मुक्त करने के लिए ब्रह्म मुहूर्त में नित्य उठकर स्नान आदि दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर 4 माला गुरु मंत्र "**ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः**" का जप '**स्फटिक माला**' से अवश्य करना चाहिए। (न्यौछावर– 300/-)
3. सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है, कि अपने चेहरे पर हर क्षण मुस्कराहट को बनाये रखें, क्योंकि जैसा भाव, चिन्तन आप अपने मन पर आरोपित करने का प्रयास करेंगे, वैसे ही फल की आपको प्राप्ति भी होगी।
4. जीवन के उतार-चढ़ाव में अपने आप को संयमित बनाये रखना एक कठिन कार्य है– दुःख-सुख, आशा-निराशा, रात-दिन का प्रभाव मानव के मन को प्रभावित करता ही है, यदि ऐसे क्षणों में वह अपने आपको चिन्ताग्रस्त अनुभव करता है, तो उसे '**शीलाभ गुटिका**' को अपने गले में अवश्य धारण करना चाहिए, तुरंत प्रभावकारी इस गुटिका का फल फलित होता ही है। (न्यौछावर– 50/-)
5. शवासन में लेट जायें और 20 मिनट तक उसी अवस्था में निम्न मंत्र का मानसिक जप करें, लाभदायक सिद्ध होगा –

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः ।।

6. ध्यान मुद्रा में बैठ जायें और अपने शरीर को ढीला छोड़ दें, लगभग 10-15 मिनट के बाद जब विचारों का संवेग शांत होने लग जाय, तो धीरे-धीरे अपने भीतर उतरने का प्रयास करें– बाहर से भीतर की ओर यात्रा करना जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करना है, जहां जाकर विचार शुद्ध, निर्मल और पवित्र हो जाते हैं।
7. आपाधापी से भरे इस जीवन में मनुष्य के पास इतना समय नहीं होता, कि वह अपनी दैनिक चर्या में से एक घंटा पूजा-पाठ, ईश्वर चिंतन आदि में लगाये, उसे तो कम से कम समय में और कम व्यय में ऐसे उपाय की खोज रहती है, जो शीघ्र लाभदायक सिद्ध हो सके। ऐसे लोगों के जीवन को उच्चता की ओर गतिशील करने के लिए ही तो है यह '**प्रोद्युत यंत्र**', जिसको अपने पूजा कक्ष में स्थापित कर, उसका कुंकुम, अक्षत, धूप व दीप आदि से पूजन कर अपनी इच्छा को उसके सामने व्यक्त कर देने से वह शीघ्र फलदायी सिद्ध होता ही है। (न्यौछावर– 110/-)
8. ब्रह्म मुहूर्त में 2 या 3 किलोमीटर तक जरूर टहलना चाहिए, जिससे कि तरोताजा हवा हमारे शरीर व मन को भी तरोताजा बनाये रख सके।
9. ऊषा काल में शरीर को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने के लिए व्यायाम अत्यन्त आवश्यक है और यदि व्यायाम करते समय उससे सम्बन्धित बीज मंत्र का जप पूर्ण आस्था से किया जाय, तो शरीर और मन दोनों का स्वास्थ्य चिर स्थायी बना रहता है। हमने 'अक्टूबर-95 की पत्रिका में अपने पाठकों को इस सम्बन्ध में जानकारी दी थी, जो 'बुढ़ापे' को कोसों दूर भगाने के

उपाय' नामक लेख में प्रस्तुत की गई है, यदि लेख में वर्णित सातों आसनों को व्यक्ति अपने जीवन का अंग बना ले, तो उसकी प्रसन्नता के क्या कहने!

10. शुद्ध चिन्तन ही आत्म तृप्ति का आधार है, जिससे कि विचारों की जड़ें मजबूत होती हैं। यदि विचारों को अपने मनोनुकूल बना लिया जाय, तो कोई तनाव रह ही नहीं सकता, पर इसके लिए करना होगा ऊषाकाल की स्वर्णिम मधुर बेला में यह विशिष्ट लघु प्रयोग।

    स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध भावना से पूर्ण एकाग्र चित्त होकर 25 मिनट तक '**सुवर्णा माला**' से "**ॐ क्लीं क्लीं फट्**" मंत्र का जप करने पर अनुकूलता प्राप्त होने लगती है। (न्यौछावर– 120/-)

11. यदि किसी कार्य को करने में अनुकूलता प्राप्त नहीं हो रही है, तो '**वाञ्छा गुटिका**' को पूर्ण श्रद्धा भावना और विश्वास के साथ धारण करें, सफलता स्वतः ही अर्जित होने लगती है। (न्यौछावर – 74/-)

12. शुद्ध एवं सात्विक भोजन का जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उचित आहार-विहार ही शुद्ध आचार-विचारों की उत्पत्ति में सहायक होता है, इसीलिए संतुलित खान-पान सफल जीवन के लिए आवश्यक है।

13. रात्रि को तांबे के बर्तन में जल भर कर दो गिलास जल नित्य सुबह पियें, जिससे कि शारीरिक स्वस्थता बनी रह सके।

14. प्रातःकालीन बेला में जब सूर्य की किरणें पूरी तरह से चारों ओर अपने प्रभाव को द्विगुणित करने का प्रयास कर रही हों, तब तांबे या स्टील के किसी पात्र में जल लेकर पहले 5 मिनट तक '**अक्षोभ्या माला**' पहन कर निम्न मंत्र का जप करें—

    मंत्र

    ।। ॐ क्लीं क्लीं ऐं क्लीं क्लीं फट् ।।

    फिर अपने मन में किसी इच्छा के पूर्ण होने की कामना करते हुए 7 दिन तक "**ॐ सूर्याय नमः**" मंत्र का मानसिक जप करते हुए 7 बार जल की प्रदक्षिणा करें। (न्यौछावर– 85/-)

15. अपने विचारों को दृढ़ता प्रदान करने के लिए तथा मन को नियंत्रित करने हेतु ब्रह्म मुहूर्त में "**ॐ ह्रीं ॐ**" का '**धृता माला**' से 10 मिनट तक जप करें। (न्यौछावर– 140/-)

16. 6 घंटे की नींद ही मानव के लिए पर्याप्त है, किन्तु देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

17. ध्यानावस्था में 15 मिनट तक '**मनवना गुटिका**' को अपने बाजू में धारण कर "**ॐ श्री ह्रीं ॐ**" मंत्र का जप करें, अनुकूल सिद्ध होगा। (न्यौछावर– 50/-)

18. अकस्मात घटित दुर्घटनाओं के दुष्प्रभाव से बचने के लिए '**सुदर्शना माला**' को अपने गले में धारण कर लेना कष्टों से मुक्ति का उपाय है। (न्यौछावर– 180/-)

19. अपने आत्म विश्वास को टूटने न दें।

20. अहं की अवधारणा ही मानसिक संताप को जन्म देती है, उसे दूर करने का प्रयास करें।

21. क्रोध, भय, संशय, घृणा, लोभ, द्वेष, ईर्ष्या जैसे विकार ही मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं, जो उसके तनाव का मुख्य कारण बनते हैं, इन्हें व्यक्ति स्वयं के प्रयासों से दूर नहीं कर पाता और इनको झेलता हुआ, कष्टप्रद जीवन बिताने पर लाचार हो जाता है।

    यदि आप चाहें, तो इन्हें दूर कर सकते हैं। आप '**विद्रवा माला**' से "**ॐ श्रीं क्लीं नमः**" मंत्र का 11 माला हर गुरुवार के दिन जप करें। (न्यौछावर– 175/-)

यदि उपरोक्त प्रयोगों को अपनाया जाय, तो कैसा भी तनाव हो, व्यक्ति मुक्ति पा लेता है, उसमें कार्य करने की क्षमता पहले से दोगुनी-चौगुनी बढ़ जाती है, चेहरे पर प्रसन्नता की लकीरें स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं, मन में संतुष्टि का अनुभव होने पर वह पूर्ण रूप से अपने आपको तनाव रहित अनुभव करने लगता है।

हिप्नोटिज्म के आठ आसन जो सम्पूर्ण जीवन को रोग रहित बनाने में समर्थ हैं।

तीसरा आसन

चौथा आसन

पहला आसन
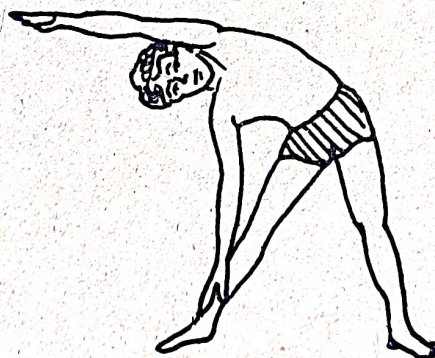
दूसरा आसन
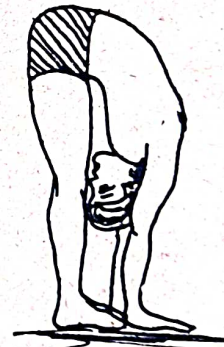
पांचवां आसन

सम्मोहन विज्ञान केवल मात्र विज्ञान ही नहीं है वरन् यह विभिन्न विशिष्ट ज्ञान के समायोजन से बना हुआ है, इसके माध्यम से 'चिकित्सा' भी की जा सकती है; इसके द्वारा अन्तर्मन और बाह्यमन को संयोजित कर मन की एकाग्रता को भी प्राप्त किया जा सकता है।

सम्मोहन एक प्रकार की 'योग विद्या' भी है, जिसमें पूर्णता प्राप्त करके व्यक्ति का व्यक्तित्व अत्यधिक निखर जाता है। वह भीड़ में रहते हुए भी भीड़ से अलग दिखाई देता है। उसके शरीर की चुम्बकीय शक्ति बढ़ जाती है, उसका स्वास्थ्य भी उत्तम हो जाता है, उसके चेहरे से ओजस्विता झलकने लगती है, उसका आभा मण्डल स्पष्ट होने लगता है, उसकी वाणी में गम्भीरता और गरिमा का अहसास होता है। हिप्नोटिज्म के क्षेत्र में सफल होने के लिये जो आसन अपनाये जाते हैं, उनसे न केवल व्यक्ति सफल हिप्नोटिस्ट बनता है वरन् अपने जीवन को रोग रहित बनाने में भी समर्थ होता है। यह विद्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी पूर्ण रूप से खरी

छठा आसन

सातवां आसन

आठवा आसन

उतरती है। जिस तनाव को, मानसिक अशांति को विज्ञान दूर नहीं कर पाता उन तनावों को हिप्नोटिज्म द्वारा समाप्त कर शांति प्रदान किया जा सकता है।

'हिप्नोटिज्म' को अपनाना कोई अनुचित कार्य नहीं है, बल्कि यह तो मार्ग है भौतिकता से स्वयं को खींच कर अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करने का; अशांति से शांति की ओर जाने का; यह एक प्रक्रिया है अन्तर्मन और बाह्यमन को जोड़ने का।

इसी हिप्नोटिज्म की प्रक्रिया को योग के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, **यहां पर कुछ आसन दिये जा रहे हैं, जो व्यक्ति के विकार को समाप्त कर उसे निर्विकार बनाने में सहायक हैं। ये आसन न केवल उसे हिप्नोटिज्म के क्षेत्र में पूर्ण करते हैं, बल्कि उसके स्वास्थ्य को भी बनाये रखने में सहायक हैं।**

योग द्वारा सम्मोहन के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने की क्रिया किसी श्रेष्ठ गुरु के निर्देशन में ही करनी चाहिये, जिससे कि यदि आप कहीं गलती पर हों, तो गुरु उसे सुधार कर आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचने की क्षमता प्रदान कर सकें। इन आसनों को नित्य करने से व्यक्ति अपने लक्ष्य को शीघ्रता से प्राप्त कर लेता है।

पहला आसन –

इस आसन में एक जगह स्थिर रहते हुए दौड़ें, इस प्रक्रिया के दो प्रक्रम हैं, दोनों प्रक्रम एक दूसरे के पूरक हैं, दोनों आसन कम से कम 5-5 मिनट तक करें –

(1) एक ही स्थान पर स्थिर दौड़ते हुए अपने घुटनों को वक्ष से लगाने का प्रयास करें।

(2) स्थिर दौड़ दोड़ते हुए अपनी एड़ियों से कमर को छूने का प्रयास करें।

इस आसन को करने से व्यक्ति की शारीरिक क्षमता में वृद्धि होती है तथा उसके पूरे शरीर में एक चेतना, एक स्फूर्ति और ताजगी का एहसास होने लगता है। इस आसन को करने से साधक की आन्तरिक शक्ति जाग्रत होकर उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

दूसरा आसन –

दोनों पांवों के बीच दो फीट का अन्तर रखकर खड़े होइये। दोनों भुजाओं को कन्धे के पार्श्व में धरती के सामानान्तर सांस भरते हुए उठाइये। 30 सेकण्ड रुकने के बाद सांस छोड़ते हुए दायें पार्श्व में झुकिये ताकि दाईं हाथेली दाईं एड़ी को छू सके। कुछ देर रुकने के बाद सीधे खड़े हो जाइये, इसी प्रकार बायीं ओर भी करें; इस प्रक्रम को कम से कम 15 बार करें।

इस आसन से साधक में सम्मोहन के लिये उपयुक्त क्षमता आती है, क्योंकि इसको नियमित रूप से करने से वह कभी भी मोटा नहीं होगा तथा उसका शरीर एक आकर्षक अनुपात में ढला हुआ लगता है। जो एक हिप्नोटिस्ट के लिए आवश्यक है।

तीसरा आसन –

दोनों हाथों की उंगलियों को एक दूसरे में इस तरह फंसाइये कि हथेलियां अन्दर की तरफ वक्ष के निकट रहें। धीरे-धीरे सांस भरिये, बांहों को सीधा आगे की ओर तानिये, ऐसा करते हुए हथेलियां बाहर की ओर रहें। सांस छोड़ते हुए हाथों को पूर्व स्थिति में लाइये, ताकि हथेलियां सहजता से वक्ष पर टिकी रहें। यह प्रक्रम कम से कम 20 बार दोहरायें।

इस आसन को करने से वक्ष स्थल सुदृढ़ और आकर्षक बनता है, यह आसन साधक के अन्तर्मन और बाह्यमन का सामञ्जस्य बनाये रखने में सहयोग प्रदान करता है।

चौथा आसन —

वीरासन में बैठकर, सिर को आगे-पीछे करें। आगे होते हुए सांस भरिये तथा पीछे होते हुए सांस छोड़िये। यह क्रम 30 बार दोहरायें।

इस आसन से साधक की वाणी शुद्ध होती है, यदि वह स्पाण्डिलाइटिस के दर्द से परेशान है, तो नियमित रूप से 10 बार करने से वह इस दर्द से छुटकारा पा जाता है।

पांचवां आसन —

दोनों एड़ियों को साथ रखते हुए नीचे झुकिये और सीधे बैठिए, होठों को सिकोड़कर इस प्रकार बनाइये जैसे सीटी बजा रहे हों, इस प्रकार से सांस को तेजी से बाहर निकालते हुए आगे को झुकिये, सिर को फर्श पर टिका दीजिये। सिर उठाते हुए सांस धीरे-धीरे भरें। यह क्रम तब तक करें जब तक चेहरा लाल न हो जाए।

इस आसन को करने से कफ, पित्त आदि दोष समाप्त होता है। शरीर को पूर्णतः शुद्ध वायु मिलती है, जिससे सारा शरीर चुम्बकीय शक्ति से युक्त हो जाता है।

छठा आसन —

दोनों पावों को मोड़ कर एड़ियों को नितम्ब के नीचे दबाइये। सिर, कन्धे, नितम्ब एक सीध में रहें, हथेलियों को जाघों के ऊपर रख कर निम्न मंत्र का 5 मिनट तक मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ ऐं ऐं ॐ ।।

इस आसन से पेट सम्बन्धी बीमारियां नष्ट होती हैं।

सातवां आसन —

पद्मासन में बैठ कर कमर एकदम सीधी रखें, करीब एक मीटर की दूरी पर आंखों के समानान्तर दीपक या मोमबत्ती रखें। बिना पलक झपकाये उसकी ज्वाला को देखें। आंखो में जब जलन होने लगे, तो आंखों को दोनों हथेलियों से ढक कर कुछ देर आराम कर लें, यह क्रम कम से कम 5 बार दोहरायें। इस प्रक्रम से दृष्टि संस्थान शुद्ध होता है। इससे एकाग्रता बढ़ती है और इच्छाशक्ति मजबूत होती है। नेत्रो में सम्मोहक शक्ति आती है।

आठवां आसन —

पद्मासन में बैठने के बाद हथेलियों को एड़ियों पर उल्टा कर एक पर एक करके रख लें जिस प्रकार से योगी बैठते हैं। रीढ़ की हड्डी सीधी रखें तथा निम्न मंत्र का पूर्ण एकाग्रता से जप करें —

मंत्र

।। ॐ खं खीं खें नमः ।।

यह आसन अन्तर्मन और बाह्यमन के समायोजन में सहायक है। जिससे साधक अपने माध्यम को सफलतापूर्वक सम्मोहित करने में समर्थ होता है। उसके चेहरे का ओज, तेज और प्रखरता बढ़ती है, उसकी वाणी में गम्भीरता आती है तथा व्यक्तित्व गरिमामय बन जाता है। मस्तिष्क एकाग्रचित्त होने से वह असीम शांति का अनुभव करता है।

यहां वर्णित सभी आसन साधक के व्यक्तित्व को निखारने में अत्यधिक सहयोग प्रदान करते हैं। इन आसनों के लिए नियमित रूप से साधक अपनी दिनचर्या में यदि कुछ समय दे दें, तो उसका दिन ताजगी, स्फूर्ति और उमंग से भरा रहेगा।

पूरे दिन कार्य करने के बाद भी उसके चेहरे पर थकावट का अनुभव नहीं होगा। उसका व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक बन जाता है। उसमें क्षमता आ जाती है अपने आसपास के वातावरण को प्रभावित करने की; उसके मित्रों को उसकी अनुपस्थिति अच्छी नहीं लगती तथा वे उसकी प्रतीक्षा में रहते हैं। वह साधारण नयन-नक्श का होकर भी अत्यधिक चुम्बकीय शक्ति से युक्त बना रहता है। उसके आसपास का वातावरण उल्लसित, उत्साहित, और प्रसन्नता से ओत-प्रोत रहता है।

इन आसनों को अपने जीवन में उतार कर 'आप' अपने आपको पूर्ण रूप से निरोगी और आकर्षक बना लेंगे।
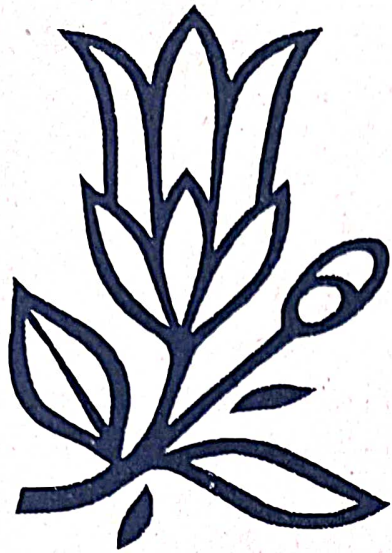
अरमां जब पूरे नहीं होते, दिल खामोश हो जाता है और व्यक्ति उदास, परेशान, चिन्तित रहने लगता है, क्योंकि मन में तो है कुछ पा लेने की अभिलाषा .. और जब वह पूरी नहीं होती, तब जीवन में प्रेम, उल्लास, वैभव, प्रसन्नता भी नहीं रहती ... इच्छित कामनाओं की पूर्ति ही तो वह आनन्दानुभूति है, जिससे मन तृप्ति का अनुभव करता है।

आज 85 प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो इच्छित कामनाओं की पूर्ति नहीं कर पाते, क्योंकि व्यक्ति के पास किसी न किसी चीज का अभाव रहता ही है, यदि उसके

यदि इस प्रयोग को आप करें ही नहीं तो आप जैसा दुर्भाग्यशाली पृथ्वी पर और कोई हो ही नहीं सकता।

— शंकराचार्य

पास धन-वैभव है, तो प्रेम नहीं है; यदि प्रेम है, तो धन नहीं है ... और यदि अन्य सुविधाएं हैं, तो शांति का अभाव है। व्यक्ति चाहता है, कि वह कम से कम समय में ऐसे कार्य करे, जिससे कि शीघ्र से शीघ्र उसके अभावों की पूर्ति हो सके।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य सुखों की प्राप्ति और दुःखों की पूर्णरूप से निवृत्ति है .. और इन दुःखों की निवृत्ति तभी हो सकती है, जब साधना के प्रभाव से हम शुद्ध व दोष रहित हो सकें। इसलिए साधनात्मक शक्ति हमारे जीवन के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है, जिसके बल पर हम बाधाओं को सुगमता से पार करते हुए अपने उद्देश्य की पूर्ति आसानी से कर सकते हैं।

संपूर्यते जीवनमेव सर्वं,
प्रेम्णः प्रपूरेण च वैभवेन।
प्रसन्नतायाः भवति प्रसादः,
शाकम्भरी साधनतामुपैतु।।

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी घटती हैं, जिनका हमें पूर्वानुमान भी नहीं होता, वे अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी। जो कार्य सामान्य मानव अपने प्रत्यनों से नहीं कर सकता, वह साधना की अदृश्य शक्ति के बल पर किया जा सकता है, साधना के बल पर अ ने जीवन के न्यूनताओं को दूर किया जा सकता है। अतः साधना शक्ति सफलता का वह सशक्त माध्यम है, जिससे साधक पूर्ण निष्ठा भाव से मंत्र जप के बल पर, अपने तप के बल पर जो चाहे, जैसा चाहे वैसा कर सकता है।

यदि जीवन में यश, वैभव, प्रतिष्ठा की कमी हो, चेहरे पर तनाव की रेखाएं पड़ गई हों या प्रेम का अभाव हो, तो साधक को चाहिए कि वह इस "शाकम्भरी प्रयोग" को कर अपने जीवन की कमियों को पूरा कर ले।

'शाकम्भरी देवी' अपने आराधक को वह सब कुछ देने में समर्थ हैं, जो उसकी मनोकांक्षा है। यह अत्यंत ही गोपनीय एवं महत्त्वपूर्ण साधना है, जिसे प्रत्येक को, चाहे वह स्त्री हो, पुरुष हो सम्पन्न करना ही चाहिए।

गुरुधाम में ऐसे अनेकों लोग आते हैं, जो अपने जीवन में अनेकों समस्याओं से ग्रस्त हैं, दुःखी हैं, पीड़ित हैं; कष्ट में जीवन जीते-जीते जो मृतप्रायः हो गये हैं और एक आशा की, एक उम्मीद की किरण अपने मन में संजोय हैं, गुरुदेव से मिलने के लिए, कि शायद ऐसा कोई उपाय प्राप्त हो जाए और उनके जीवन में परिवर्तन आ जाए, उनके कष्ट दूर हो सकें, वे अपनी कमियों को न्यूनताओं को, अभावों को दूर कर पायें। अपने भाग्य का रोना रोते हुए, जब वे गुरुदेव से मिल कर वापिस लौटते हैं, तो उनका चेहरा एक सुन्दर मुस्कान से दमक रहा होता है, क्योंकि उन्हें कोई न कोई उपाय (साधना) गुरुदेव दे ही देते हैं, जिसे पाकर उनके चेहरे पर प्रसन्नता व्याप्त हो जाती है।

ऐसे ही कुछ व्यक्ति, जिनके चेहरे मुरझाये हुए, नीरस, जड़वत जैसे अब कुछ शेष रहा ही न हो जीवन में, जो अपनी ही लाश को अपने ही कंधे पर ढोये चले जा रहे हों, गुरुदेव से मिले; उनकी परेशानियों और दुःखों के कारण को जानकर, उनकी समस्याओं के समाधान के लिए गुरुदेव ने उन्हें "शाकम्भरी प्रयोग" सम्पन्न कराया।

एक दिन के इस प्रयोग ने आश्चर्यजनक परिणाम दिये और ऐसा लगा, मानो उनके मृतवत शरीर में किसी ने प्राण फूंक दिये हों ... जब वे साधक दोबारा गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु गुरुधाम पहुंचे, तो उनका रोम-रोम उनकी सफलता का परिचय देता प्रतीत हो रहा था .. उन्हें देखकर यह नहीं लगता था, कि वे वही हैं जो कुछ दिनों पहले गुरुदेव से मिलने आये थे ... अब उनके जीवन में खुशियां ही खुशियां थीं, मानो धधकते अंगारों पर बसंत ने पांव रख दिये हों। सूखा, बेजान सा जीवन जैसे पतझड़ के बाद सावन का मौसम आया

हो, ऐसा ही लग रहा था ... पहले से भी अधिक दृढ़ता, विश्वास, श्रद्धा और प्रेम झलक रहा था उनके चेहरों से ... उन्हें देखकर तो यही लग रहा था, कि उन्होंने जीवन में जो चाहा, वह सब कुछ मिल गया हो।

हर कार्य की पूर्ति हर साधना से नहीं की जा सकती, यदि ओज, बल व निर्भयता प्राप्त करनी हो, तो हनुमान साधना। सौन्दर्य प्राप्त करना हो तो अप्सरा साधना। बुद्धि, ज्ञान प्राप्ति हो तो सरस्वती साधना। धन प्राप्त करना हो तो लक्ष्मी साधना .. हर साधना का अपना एक अलग विशिष्ट महत्त्व है, जिस व्यक्ति की जैसी समस्या होती है, उसी के आधार पर ही गुरुदेव शीघ्र फलदायी एवं अचूक प्रभावकारी साधना रूपी माला को उसके गले में पहिना देते हैं ...

और साधना का तो मतलब ही यह है कि जो चाहें, वह प्राप्त हो जाय, आवश्यकता है – धैर्य, विश्वास और आस्था की। जब तक मंत्र जप के प्रति पूर्ण एकनिष्ठता का भाव नहीं होगा, तब तक आप अपने आप को वहीं खड़ा पायेंगे, जहां से आपने चलना प्रारम्भ किया है।

जब वे साधक गुरुदेव से मिले, तो गुरुदेव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, कि यह शाकम्भरी प्रयोग जो आप लोगों ने सम्पन्न किया, वह अत्यन्त ही दिव्य एवं गुह्य प्रयोग है और जो पहली बार ही आपको सम्पन्न करवाया है, जिससे कि इसका प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर, आप इसकी प्रामाणिकता का अनुभव कर सकें।

गुरुदेव के द्वारा बताई गई हर साधना, हर क्रिया अपने-आप में महत्त्वपूर्ण है, जीवनोपयोगी है, पूर्णता प्रदायक है।

समय-समय पर साधक की आवश्यकता के अनुसार ही गुरुदेव उन्हें भिन्न-भिन्न प्रयोग सम्पन्न करवाते रहते हैं तथा उसे कुछ ही लोगों तक सीमित न रखकर, प्रामाणिक रूप में समाज के सामने पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट कर, जन कल्याण का कार्य करते हैं। शाकम्भरी प्रयोग ऐसा ही अद्वितीय प्रयोग है, जिससे साधक अपने जीवन की न्यूनताओं को दूर कर अपने जीवन में प्रेम, वैभव और प्रसन्नता को हमेशा के लिए स्थापित कर सकेंगे।

प्रयोग विधि :

1. प्राणश्चेतना युक्त **'शाकम्भरी यंत्र'** तथा **'सौख्य गुटिका'** को साधना हेतु प्रयुक्त किया जाता है।
2. इस प्रयोग को करने से पूर्व पूजा स्थान को स्वच्छ करें।
3. पीली धोती और गुरु मंत्र से अनुप्राणित चादर को ओढ़ लें, पीले आसन का प्रयोग करें।
4. यह प्रयोग 20/1/96 को करें अथवा किसी भी माह की **अमावस्या** को भी कर सकते हैं।
5. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
6. एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर अपनी बायीं तरफ जल से भरा कलश स्थापित कर दें तथा उस पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित करें।
7. फिर तांबे की प्लेट में पुष्प से आसन बनाकर उस पर यंत्र स्थापित कर दें तथा यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें।
8. फिर गुटिका को यंत्र के ऊपर रख दें और उसका भी कुंकुम, अक्षत से पूजन करें।
9. फिर 10 मिनट तक गुरु मंत्र-जप करें और शाकम्भरी मंत्र का एक घण्टे तक जप करें –

   मंत्र

   ।। ॐ श्रीं शाकम्भर्यै फट् ।।

10. मंत्र जप के पश्चात फिर एक बार 10 मिनट तक गुरु मंत्र जप करें, ऐसा इसलिए कि गुरु ही समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाले हैं।
11. मंत्र जप समाप्त करने के पश्चात् उस गुटिका को गले में धारण कर लें और ठीक पन्द्रह दिन बाद उस यंत्र एवं गुटिका को नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस एक दिवसीय प्रयोग की सफलता तो साधक के चेहरे से खुद ब खुद झलकने लगेगी, क्योंकि यह प्रयोग समस्त जीवन को प्रेम, वैभव और प्रसन्नता से लबालब आपूरित कर देने वाला है, जो कि सरल एवं सफलता प्रदान करने वाला अचूक प्रयोग है; पत्रिका के इन पन्नों पर प्रकाशित होने के बाद से कोई भी प्रयोग गोपनीय नहीं रहा, क्योंकि गुरुदेव अपने ज्ञान को शिष्यों में उड़ेल देना चाहते हैं। इसीलिए समयानुसार वे इन साधना पुष्पों से साधकों का जीवन वसंतमय, उत्सवमय, प्रेममय, आनन्दमय बना देना चाहते हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर– 280/-

गोपनीय साधना का एक अनछुआ पृष्ठ

अब कोई भी साधक अपना स्वयं का भाग्य लिख सकता है

और जो चाहे, जिस प्रकार से चाहे जितनी ऊंचाई पर पहुंचना चाहे पहुंच सकता है

यदि तुम चाहो तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हो ... पर यदि तुम चाहो तो! इसलिए जब तक तुम्हारे मन में किसी वस्तु के प्रति चाह उत्पन्न नहीं होगी, तब तक तुम उसे प्राप्त भी नहीं कर सकते ... क्योंकि चाह ही दृढ़ निश्चयी होने का साहस प्रदान करती है ... संकल्पबद्ध होने की शक्ति प्रदान करती है। 'विवेकानन्द' के कथनानुसार – भारतीय अपनी इस संकल्प शक्ति को भूलते जा रहे हैं, इसीलिए गुलामी का दुःख भोग रहे हैं, क्योंकि वे अपने-आप को कुछ भी करने में असमर्थ पाते हैं – हम क्या कर सकते हैं जैसे नकरात्मक चिन्तन से वे संकल्पहीन होते जा रहे हैं। यह नकरात्मक चिन्तन और संकल्पहीनता ही हमारे अन्दर निराशावाद को जन्म देती है और हमें सफलता से परे कर देती है।

तुम यह भूल चुके हो, कि भीष्म जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ पुरुषों की परम्परा में तुम्हारा जन्म हुआ है। गंगा को पृथ्वी पर उतारने वाले राजा भगीरथ जैसे दृढ़ निश्चयी का रक्त तुम में बह रहा है। समुद्र को भी पी जाने वाले अगस्त्य ऋषि के तुम वंशज हो। श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे अवतारी पुरुषों

की भूमि पर, जहां देवता भी जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं, वहां जन्मे हो तुम ... फिर भी दीन-हीन हो, ऐसा क्यों?

क्योंकि तुम अपना आत्मविश्वास खो बैठे हो, संकल्प शक्ति खो बैठे हो ... आत्मा की अमरता का ... दिव्य ज्ञान का ... परम निर्भयता का जो संदेश ऋषियों ने दिया, उसे भूल बैठे हो ... तभी तो है तुम्हें वह दु:ख, वह वेदना, वह छटपटाहाट, वह पीड़ा, वह कष्ट, जिसने तुम्हारे दुर्भाग्य का निर्माण किया है।

''बीती ताहि बिसार देहु, आगे की सुधि लेहु''

जो बीत चुका है, उसे भूल जाना ही उचित है और आगे क्या करना है, यह सोचना परम आवश्यक है। सबसे पहले तो अपने अन्दर से दीनता के विचारों को तिलांजलि देनी होगी और **अपने भीतर प्रसन्नता और प्रफुल्लता के भाव को भरना होगा, क्योंकि वही ''जीवनी शक्ति'' तुम्हारी है, जिससे तुम्हें साहस, बल सब कुछ प्राप्त होता है, जो तुम्हारे मन को प्रोत्साहित कर तुम्हें आगें बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है, तुम्हारे अन्दर आत्म विश्वास को बनाये रखती है और संकल्पबद्ध होने की दृढ़ता प्रदान करती है।**

बड़े-बड़े ऋषि, योगी, यति और मुनि इसी के बल पर महान हुए, कुछ भी करने में सक्षम हो सके और तुम भी ऐसा कर सकते हो। दृढ़ निश्चियी बनकर, अपने दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकते हो, यहां तक कि विधाता की लिखी लकीरों को भी बदल सकते हो; परन्तु तब, जब तुम्हारे भीतर इस सकारात्मक चिन्तन का आविर्भाव होगा, कि मैं चाहूं तो कुछ भी कर सकता हूं, जब यह भाव उत्पन्न हो जायेगा, तो उसे पूरा करने की सामर्थ्य भी स्वत: प्राप्त हो जायेगी, जरूरत है थोड़े संकल्प और विवेक से काम लेने की और भाग्य परिवर्तित प्रयोग को सिद्ध कर लेने की।

तभी तो कुछ ही क्षणों में बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त हो सकेगी और तुम परिपूर्ण हो जाओगे, क्योंकि यह प्रयोग ऐसा ही दीप स्तम्भ है, जो तुम्हारे जीवन की घनघोर कालिमा को दूर करने में सहायक है, जिसे सिद्ध करने पर साधक स्वयं अपना भाग्य लिख सकता है।

ऐसा अद्‌भुत, गोपनीय और सर्वश्रेष्ठ की संज्ञा से विभूषित है यह दिव्य प्रयोग जो दिव्यता की, श्रेष्ठता की, उच्चता की भाव भूमि का निर्माण करने में सहायक है।

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका का तो उद्देश्य ही यह है कि वह इस भौतिकता से लिप्त अंधकारयुक्त वातावरण में अध्यात्म की लौ जला सके, जिससे कि पूर्वजों के गोपनीय तथ्यों की पुष्टि व ज्ञान का अभ्युदय हो सके, उनके द्वारा किया गया परिश्रम, जो कि किसी समाज के लिए नहीं, पूरे विश्व के लिए एक महत्त्वपूर्ण देन है; उस चेतना को, उस धारणा को, उस तप को, उस बल को पुन: जाग्रत कर विश्व में क्रांति लाई जा सके, जिससे पशु भावना, नकारात्मक दृष्टिकोण भय आदि का शमन किया जा सके और आशावाद व सकारात्मक दृष्टिकोण को पुन: स्थापित किया जा सके।

हमारे पूर्वज भी तो मानव शरीर लेकर ही पैदा हुए थे, वे हमारी ही तरह थे, ऐसा कुछ अलग सा उनका शरीर नहीं था, जिसके बल पर वे सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ हो सकें, अपने अटूट परिश्रम व लगन से जीवन को चैलेंज के साथ जीया है और सामान्य मानव से अद्वितीय पुरुष बन बैठे ... तो फिर तुम क्यों नहीं कर सकते?

तुम भी इस गोपनीय विद्या के बल पर अद्वितीय पुरुष बन सकते हो और जो चाहो, जिस प्रकार से चाहो, जितनी ऊंचाई पर पहुंचना चाहो, पहुंच सकते हो; आवश्यकता है, इस सिद्धि को प्राप्त कर लेने की और यह दिखा देने की, कि **विधाता ने चाहे हमारे भाग्य में दरिद्रता, ऋण, पुत्रहीनता और दुर्भाग्य लिखा हो, पर हम इस प्रयोग से अपने भाग्य को मन चाहे तरीके से लिखने में समर्थ हो सकेंगे ... और यही इस प्रयोग का वास्तविक अर्थ भी है, जो इसके नाम से उद्‌भाषित होता है।**

पत्रिका परिवार ऐसे ही गोपनीय तथ्यों की खोज में निरंतर संलग्न है; इस प्रयोग से सम्बन्धित जानकारी हमें हरिद्वार में औघड़ बाबा से प्राप्त हुई, जो अपने जीवन के 120 वर्ष पूरे कर चुके हैं और आज भी साधना में संलग्न हैं। साधना की सफलता के रहस्यों को स्पष्ट करते हुए ही उन्होंने इस गोपनीय प्रयोग के रहस्य को हमारे सामने उद्घाटित किया, जो कि भाग्य निर्माण करने तथा विधाता के लिखे को भी मिटा देने की क्षमता से ओत-प्रोत है। इस प्रयोग के संदर्भ उन्हीं के शब्दों पर आधारित हैं, जिसे ज्यों का त्यों यहां प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने बताया, कि इस गोपनीय प्रयोग की जानकारी उन्हें एक हस्तलिखित ग्रन्थ द्वारा प्राप्त हुई थी।

औघड़ बाबा का तेजस्वी मुख मंडल जो कि साधना के तेज से प्रदीप्त था; गेरुआ रंग के वस्त्र को धारण किये हुए हर क्षण साधनारत, उच्चकोटि के योगी के दर्शन करने

का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ और सबसे महत्त्वपूर्ण हैं वे गोपनीय तथ्य जो हमारे सामने स्पष्ट हुए, वे आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर स्वरूप होंगे।

साधना विहित ज्ञान को प्राप्त कर हमने इस प्रयोग का निरीक्षण किया और सत्य की कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही यह साधना की विधि तुम्हारे सामने स्पष्ट की जा रही है .... तुम इसे कितना समझ पाते हो, जीवन में कितना उतार पाते हो, यह तो तुम पर ही निर्भर करता है, क्योंकि तुम्हारी चाह, लगन, तुम्हारी निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास से ही तुम्हारे सौभाग्य का उदय होगा, जो तुम्हें सफलता की बुलन्दियों तक पहुंचाने में सहायक होगा, जो तुम्हारे जीवन की एक आश्चर्यजनक अप्रतिम घटना ही कही जा सकती है, जो घटेगी सर्वथा पहली बार ... और जो तुम्हारे हाथों में भाग्य लिखने की कलम पकड़ा देगा ... जिससे तुम अपना ही नहीं युग का निर्माण कर महापुरुष और युग पुरुष की श्रेणी में स्थान प्राप्त कर सकोगे, जो तुम्हारे जीवन की सार्थकता होगी और श्रेष्ठ उपलब्धि भी।

प्रयोग :

1. प्राण प्रतिष्ठित '**भाग्योदय यंत्र**' और '**भाग्यवर्धिनी माला**' इस प्रयोग हेतु आवश्यक है।
2. 26/1/96 को यह साधना प्रारम्भ करें अथवा किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाले **सोमवार** को यह प्रयोग प्रारम्भ करें।
3. प्रातः 5.35 से 9.00 के मध्य इसे प्रारम्भ करें।
4. यह प्रयोग तीन दिन का है।
5. साधक को चाहिए कि वह सात्विक भाव से युक्त होकर शांतमय बना हुआ, प्रातः स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त हो जाय।
6. साधना कक्ष में पीला आसन बिछा कर अपनी इच्छानुसार सफेद या पीली धोती पहिन कर गुरु पीताम्बर ओढ़ ले।
7. साधना कक्ष में अपने सामने एक चौकी बिछाकर यंत्र और माला को रख दे।
8. इसके बाद पानी भरे लोटे को अपने दोनों हाथों में लेकर खड़ा हो जाये और निम्न श्लोक का उच्चारण करते जल में वरुण शक्ति का आवाहन करे —

ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि
वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।।

9. फिर उसी आसन पर खड़े होकर इस मंत्र का दस बार जप करे —

मंत्र— ।। ॐ देवत्वाय दिव्याय नमः ।।

10. इसके बाद साधक बैठ जाए, फिर उस लोटे के जल से अपने-आप को पवित्र करे तथा सभी सामग्री पर भी पवित्र जल के छींटे दे।
11. इसके बाद निम्न मंत्र बोलकर तीन बार आचमन करे—

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः।
ॐ क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः।

12. **भूत उत्सारण** — आचमन के बाद किसी भी साधना में विघ्न निवारण हेतु भूत उत्सारण अवश्य करना चाहिए। अपने बायें हाथ में जल या चावल लेकर दाहिने हाथ से ढक दे तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करके विभिन्न दिशाओं में छिड़के —

अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
ॐ प्राच्यै नमः - पूर्व दिशा में।
ॐ प्रतीच्यै नमः - पश्चिम दिशा में।
ॐ उदीच्यै नमः - उत्तर दिशा में।
ॐ अवाच्यै नमः - दक्षिण दिशा में।
ॐ ऊर्ध्वाय नमः - ऊपर (आकाश) में।
ॐ पातालाय नमः - नीचे (भूमि) में।

13. भाग्योदय यंत्र को जल से स्नान करा दे तथा उसे अपने सामने किसी प्लेट पर (जो स्टील या तांबे का हो) स्थापित करे। इसके बाद पूरे पूरे यंत्र को कुंकुम से रंग दे तथा उस यंत्र के कुंकुम से अपना भी तिलक करे। उसके बाद माला को दोनों हाथों में लेकर निम्न मंत्र पढ़े—

ॐ माले माले महामाले सर्व शक्ति समन्विते।
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्ताः तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

14. फिर निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप पंजों के बल आसन पर खड़े होकर करें—

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं सर्वभाग्योदयं सिद्धये फट्।।

मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् अगले दिन यंत्र और माला को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

साधनी सामग्री न्यौछावर— 380/-

आप अपना बना लें किसी को भी

के द्वारा

क्योंकि इस प्रयोग का प्रभाव खाली जाता ही नहीं

वर्तमान युग में आधुनिक बने रहने की भाग दौड़ और प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेने की आकांक्षा प्रत्येक की दिली ख्वाहिश है, अतः आप सभी के लिए आवश्यक है, कि आपके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति आप से प्रभावित हो।

आपकी आंखों में, आपके चेहरे पर और आपके व्यक्तित्व में हो ऐसा आकर्षण कि सामने वाला व्यक्ति चाहे वह पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, अधिकारी या नौकर कोई भी हो आपकी बात न सिर्फ मान ले, अपितु आपकी आज्ञा को पूरा करने के लिए आतुर हो ... और यह तभी सम्भव हो सकता है जब आप पूर्ण सम्मोहक व्यक्तित्व के स्वामी हों।

ऐसा ही व्यक्तित्व तो प्राप्त होता है, इस गुह्य साधनात्मक क्रिया से –

प्रयोग शत्रु शान्ति के लिए –

शत्रु तो हर युग में पैदा होते हैं और मिटते हैं, ऐसा कोई नहीं जिसका कोई शत्रु न हो, किसी का एक शत्रु है, तो किसी के अनेकों।

शत्रुओं के रहते सुख पूर्वक जीवनयापन करना एक कठिन कार्य है। जब तक शत्रु भय बना रहता है, व्यक्ति उन्नति की ओर प्रवृत्त हो ही नहीं सकता।

क्योंकि पग-पग पर बाधायें, अड़चनें उसके मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती रहती हैं; जिनके कारण उसके सुखी जीवन में एक भूकम्प सा आ जाता है और सारा जीवन अस्त-व्यस्त सा हो जाता है।

चारों ओर अशांति, दुःख, पीड़ा, कलह, ईर्ष्या, द्वेष का वातावरण, निर्मित होने से उसका जीवन नरक तुल्य हो जाता है। परन्तु जो साहसी होते हैं, वीर होते हैं, बलवान होते हैं, वे इन दुःखों से भागते नहीं हैं अपितु उनका डटकर सामना करते हैं। भागते तो कायर हैं, जिनमें पौरुष नहीं होता, क्योंकि शक्तिहीन व्यक्ति जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर पाते।

कायर मानसिकता जीवन को एक क्षण में ही नष्ट कर सकती है, इसीलिए जब तक मनुष्य अपने धैर्य और वीरता का परिचय देता रहता है, तब तक वह सही अर्थों में मनुष्य है, यदि मनुष्य के अन्दर से धैर्य और वीरता समाप्त हो जायेगी, तब उसके पास शेष कुछ भी नहीं बचेगा।

"वार्ताली सम्मोहन प्रयोग" ऐसा ही अद्वितीय प्रयोग है, जो शत्रुता के भाव को तथा जीवन में घोर शत्रु को शान्त कर अनुकूल वातावरण का निर्माण कर देता है।

प्रयोग अधिकारी की अनुकूलता के लिए –

यह प्रयोग अधिकारी को अपने अनुकूल बनाने का श्रेष्ठ उपाय है। लम्बी छुट्टी लेनी हो, बार-बार किसी अन्य समस्या की वजह से दफ्तर में तनाव रहने से काम समय पर न हो पाता हो, प्रमोशन करवाना हो और वह भी अपनी इच्छानुसार तो यह प्रयोग अद्वितीय सिद्ध होगा।

प्रेमी या प्रेमिका को मनोनुकूल बनाने के लिए –

कई बार प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों में किन्हीं कारणोंवश दरार पड़ जाती है, और वे एक दूसरे के विरोधी हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में वे एक दूसरे का मुंह भी देखना पसन्द नहीं करते।

यदि यह सम्बन्ध जो मन का, आत्मा का, बन्धन होता है, वह यदि जुड़ नहीं पाये, तो बहुत अधिक कष्ट होता है, अजीब सी बेचैनी होने लगती है, न कुछ खाने की इच्छा होती है, न कहीं आने-जाने की और न ही किसी से बोलने की, ऐसी दयनीय स्थिति को समाप्त करने के लिए उपयोगी है यह प्रयोग; जिसे करने के बाद वह प्रणय निवेदन स्वीकार कर लेगा और हृदय की धड़कन बन जायेगा, उसे हमेशा अपने मनोनुकूल बनाये रखने के लिए, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है।

प्रयोग पति या पत्नी के लिए –

पति-पत्नी का सम्बन्ध तो एक सामाजिक बन्धन होता है और भारतीय मान्यतानुसार जन्मों- जन्मों का बन्धन होता है। यदि यह सम्बन्ध माधुर्य युक्त बना रहे, तो गृहस्थ जीवन स्वर्ग तुल्य हो जाता है और यदि आये दिन की खटपट होती रहे, कलह, लड़ाई-झगड़े और तनाव हों, तो गृहस्थ जीवन नरक तुल्य हो जाता है।

घर में सुख, शांति, मधुरता का वातावरण स्थायी बना रह सके, इसके लिए यह प्रयोग विशेष फलदायी है।

स्वामीभक्त नौकर के लिए –

आज कल के युवक-युवतियां अति व्यस्त होने के कारण अपने घरबार की पूरी तरह से देखभाल नहीं कर पाते, इसीलिए आज हर घर में एक या दो नौकर तो आपको देखने को मिल ही जायेंगे। आज का जीवन ही नौकरों पर आधारित हो गया है; परन्तु यह निर्भरता उन्हें कभी मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रहने देती, उनके मन में बराबर यह चिन्तन चलता रहता है, कि कहीं नौकर धोखा न दे जाय, चोरी न करे . . . हर समय कोई न कोई आशंका बनी ही रहती है, पर यदि वार्ताली सम्मोहन प्रयोग कर लिया जाय, तो घर के नौकर पर विश्वास करना सहज हो सकता है, क्योंकि धीरे-धीरे उसमें स्वतः ही ऐसी भावना पनपने लग जायेगी, कि मुझे अपने मलिक को धोखा नहीं देना चाहिए और वह स्वामीभक्त बन जायेगा, फिर न तो कोई छल हो सकता है और न ही कोई स्वार्थ प्रेरित कार्य, मात्र सेवा भाव ही रहता है।

जन समुदाय या भीड़ के लिए –

कभी आप किसी सभा या सम्मेलन आदि में जायें, जहां सैकड़ों की तादात में लोग खड़े हों, ऐसे में यदि भीड़ में सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना हो, यदि आप चाहते हैं, कि आपके व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित हो आपकी ही बात का समर्थन करें, आप ही की बात को सुनें और महत्त्व दें तथा आपको देखकर बंध सा जायें, तो यह आपके जीवन की श्रेष्ठता होगी, क्योंकि जन साधारण या भीड़ को आकर्षित करना कोई आसान बात नहीं है। यदि वोट लेना हो, इलेक्शन में जीतना हो, कथा-वांचन करना हो, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें, जिससे शीघ्र ही सामने वाले व्यक्ति आपकी बात से सहमत हो जायेंगे।

उपरोक्त बातों से यह पता चलता है, कि वह वार्ताली सम्मोहन प्रयोग एक तीक्ष्ण एवं विलक्षणकारी श्रेष्ठ अद्वितीय प्रयोग है, जो कि निजी जीवन को सुरक्षित करता है।

प्रयोग विधि :

1. **'वार्ताली यंत्र'** एवं **'सम्मोहनी गुटिका'** जो कि मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हो, आवश्यक होती है।
2. यह रात्रिकालीन प्रयोग है, जिसे **रात्रि 8.00 बजे से 12 बजे** के मध्य कभी भी प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. यह प्रयोग एक दिवसीय है, जिसे 30/1/96 या किसी भी **मंगलवार** के दिन सम्पन्न कर सकते हैं।
4. इस प्रयोग के लिए पीली धोती और गुरुनामी चादर ओढ़ कर ही पूजा स्थान में बैठें।
5. पीले आसन का प्रयोग करें तथा उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
6. किसी लकड़ी की चौकी पर एक पीले रंग का नया वस्त्र बिछा दें, उस पर तांबे की एक प्लेट में वार्ताली यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर रख दें। कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें; साथ में गुरु चित्र अवश्य रखें और उनका भी पूजन करें।
7. फिर हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए संकल्प लें और जल को जमीन पर छोड़ दें।
8. मुट्ठी में 'सम्मोहनी गुटिका' को बन्द कर लें, फिर अपने शत्रु का नाम या अन्य कोई इच्छा जिसके लिए आप प्रयोग सम्पन्न कर रहे हैं, बोलें और उस गुटिका को एक चावल की ढेरी पर यंत्र के ठीक सामने रख दें।
9. इसके बाद गुरु मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।
10. फिर यंत्र एवं गुटिका को दोनों हाथों से ढक कर 20 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें –

    मंत्र

    ।। ॐ वं वार्ताली सम्मोहनाय वं फट् ।।

11. फिर उस यंत्र एवं गुटिका को वापिस पूर्व स्थान पर ही रख दें और पुनः गुरु मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।
12. मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् यंत्र एवं गुटिका को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

तीक्ष्ण प्रभावकारी प्रयोग होने से यह विशेष लाभदायक सिद्ध होगा ही उनके लिए जो इस प्रयोग को श्रद्धा और विश्वास से सम्पन्न करेंगे।

साधना सामग्री न्यौछावर– 321/-

नवीनतम प्रकाशन . . .

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूज्यपाद गुरुदेव
''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''
द्वारा आशीर्वाद युक्त अनमोल ग्रंथ
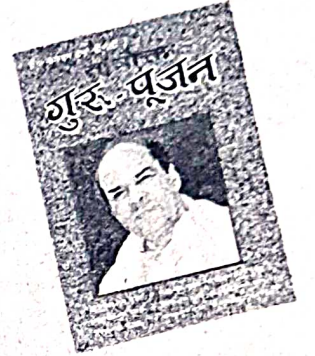
महाकाली साधना	15/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	15/-
धनवर्षिणी तारा	15/-
प्रत्यक्ष-हनुमान सिद्धि	15/-
मातंगी साधना	15/-
दीक्षा संस्कार	15/-
सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ-विधान	15/-
आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र	30/-
तांत्रोक्त-गुरु पूजन	30/-
स्वर्णिम साधना सूत्र	40/-
निखिलेश्वरानन्द चिन्तन	40/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-
सिद्धाश्रम का योगी	40/-

नोट : ३१ दिसम्बर १९९५ तक सभी कृतियां एक साथ मंगाने पर डाक व्यय माफ

सम्पर्क : **सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034 फोन:011-7182248, फेक्स:011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन: 0291-32209,फेक्स:0291-32010

योगीराज निखिलेश्वरानन्द जी के जीवन का एक अविस्मरणीय पृष्ठ
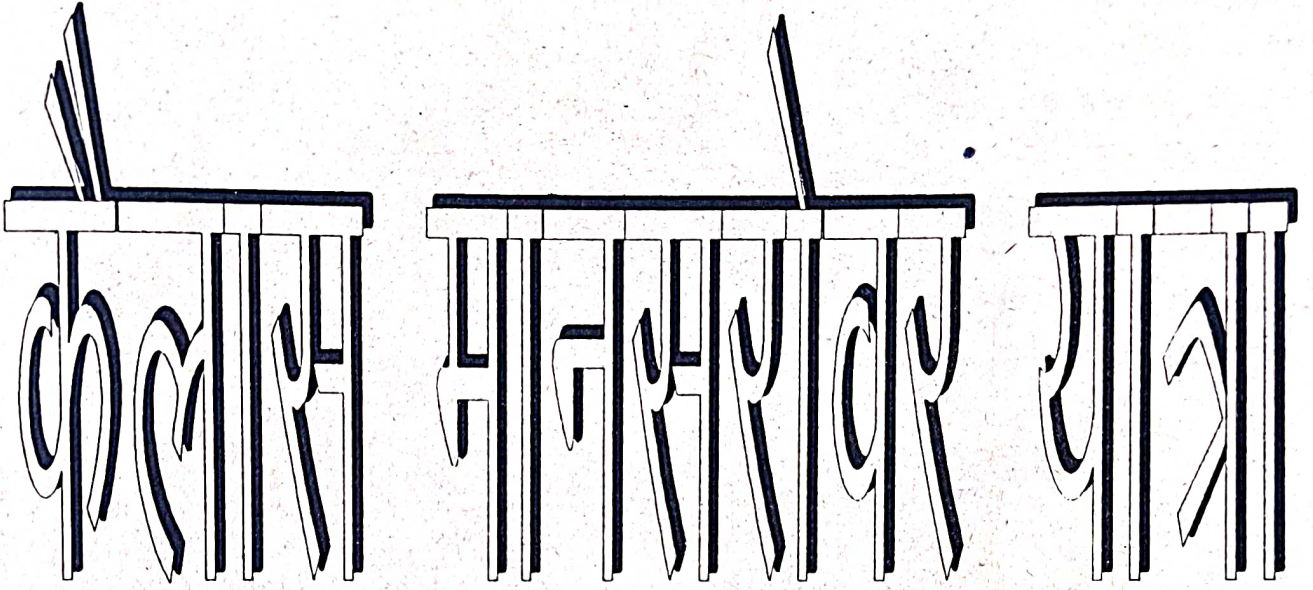
स्कन्द पुराण के अनुसार, काशी में सम्पूर्ण पूजन के फल से ज्यादा जीवन का सौभाग्य है, शिवलोक हिमालय के बारे में चिंतन करना; यदि देवताओं की आयु के सौ वर्ष भी मुझे मिल जायें, तो उस हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन करने में असमर्थ हूं। जिस प्रकार से सूर्य की प्रथम किरण ओस की बूंद को सुखा देती है, ठीक उसी प्रकार से हिमालय के दर्शन करने से पाप व दोष नष्ट हो जाते हैं।

यही बात हिमालयवत् पूज्य गुरुदेव के बारे में कही जाय, तो अतिशयोक्ति न होगी। समस्त संन्यासी पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद को साधना के क्षेत्र में समस्त सिद्धियों का पर्याय मानते हैं। यदि पूज्य गुरुदेव के जीवन का कोई अविस्मरणीय पृष्ठ जानने का सौभाग्य उदय हो जाय, तो यह कोटि-कोटि पुण्यों का फल ही होता है।

एक बार बात ही बात में मैंने अत्यधिक विनयवत् निवेदन कर उनके जीवन के अविस्मरणीय किसी पृष्ठ को जानने की प्रार्थना की, तो वे एक क्षण को शायद पुनः उसी काल में चले गये, जहां से उन्होंने यह यात्रा प्रारम्भ की। **उन्होंने मुझे बताया — उनके जीवन का अविस्मरणीय**

पृष्ठ है— 'कैलाश-मानसरोवर की यात्रा', क्योंकि कई जन्मों के पुण्यों के उदय होने पर ही व्यक्ति कैलाश-मानसरोवर की यात्रा करता है।

वैसे तो मैंने वायुमार्ग द्वारा कई बार उस जगह की यात्रा की है, परन्तु पैदल रास्तों से वहां एक बार ही गया हूं। वहां तक पहुंचने के लिए कई रास्ते हैं—

★ जम्मू-कश्मीर से लद्दाख होते हुए भी जाया जा सकता है।
★ हिमाचल प्रदेश से भी रास्ता है।
★ उत्तराखण्ड से भी रास्ता है वहां तक जाने के लिए।

उन्होंने बताया, कि वहां के दुर्गम रास्तों पर जाने के लिए आत्म बल की जरूरत है, क्योंकि रास्ते में वातावरण में विभिन्न परिवर्तन होते रहते हैं, जिसका व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

वहां चारों तरफ देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, कि प्रकृति- सुन्दरी ने अपने सौन्दर्य को निखार दिया है; उनके श्रीमुख से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा, कि मानो मैं स्वयं पूज्य गुरुदेव के साथ वहां की यात्रा कर रहा हूं। वास्तव में वह जीवन का अप्रतिम सौभाग्य होगा, जब हम कैलाश-मानसरोवर की यात्रा कर पायेंगे।

जिन्होंने उच्चतम साधनात्मक भावभूमि को स्पर्श किया है, वे ही लोग उन स्थानों को देख पाते हैं।

कैलाश-मानसरोवर तक की यात्रा का वर्णन करते हुए पूज्य गुरुदेव प्रायः खो-से जाते थे, मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे वे उस समय वहां की मनोरम प्रकृति में ही विचरण कर रहे हों।

अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, कि वे उत्तराखण्ड के रास्ते से गए, जो बरेली से बनवासा होते हुए तवाघाट की ओर से वहां तक पहुंचता है, मार्ग का वर्णन पूछने पर उन्होंने बताया— मैं बरेली से बनवासा गया, वहां पर शारदा नदी के किनारों का दृश्य अति सुरम्य है। यहां से ही प्रकृति अपने सौन्दर्य से रिझाने लगती है। आगे **चम्पावट की ओर जाते हुए फूलों के खेत मिलते हैं, ऐसा लगता है, कि प्रकृति अपनी सघन केशराशि को पुष्प-वेणियों से सुसज्जित कर पूर्ण श्रृंगार युक्त हो यहां बैठी है, हिमाच्छादित पर्वत श्रृंग पर बादल ऐसे लगते हैं, जैसे उन्होंने पर्वतों के शिखर को अपने गौर बाहुपाश में आलिंगन बद्ध कर लिया है।**
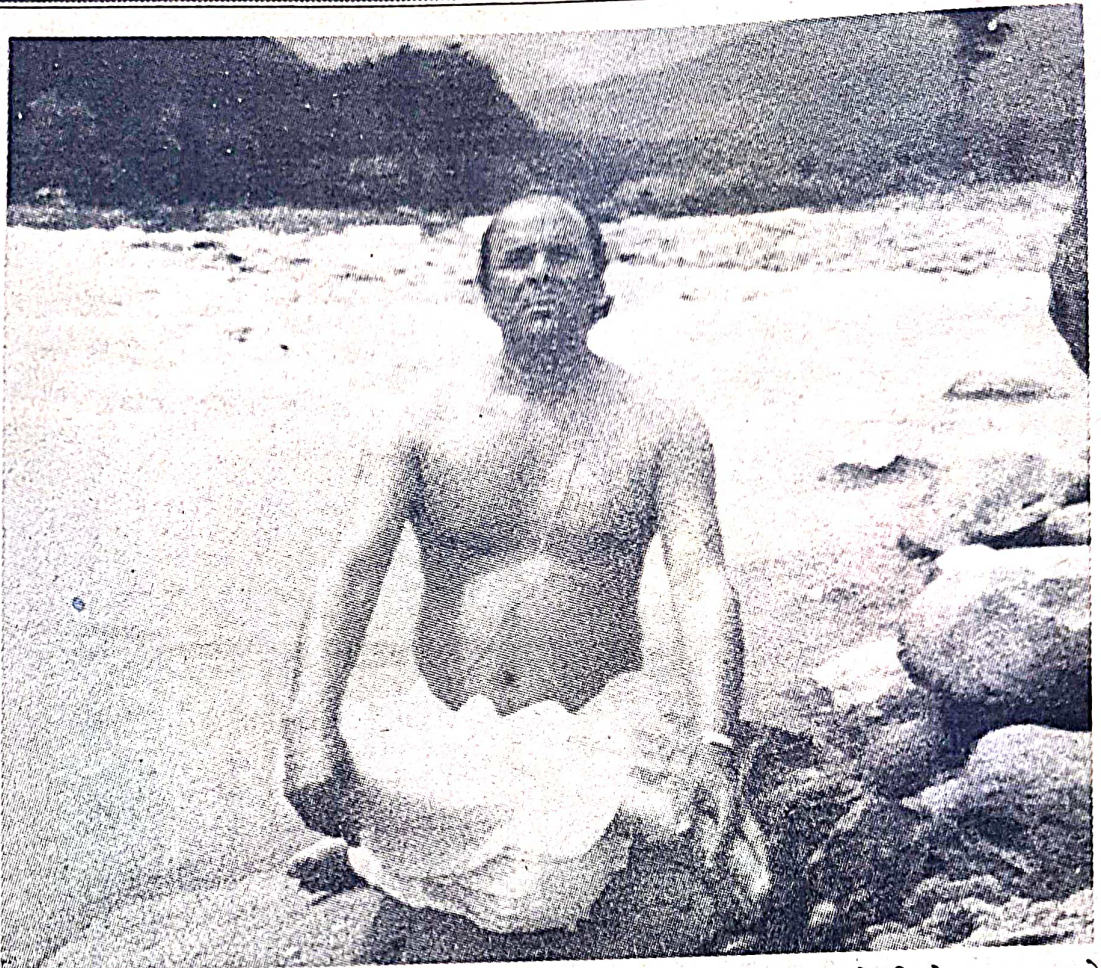
पंचचूली के शिखर से देखने से ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे हिमालय की बाहों में स्वर्ग सुन्दरी निश्चिंत होकर उपस्थित है।

चम्पावट कुमाऊं के प्रसिद्ध देवता 'गोलदेव' की जन्मस्थली है। चम्पावट से लोहाघाट जाते समय रास्ते की मिट्टी लाल रंग की है, जिसके बारे में कहा जाता है, कि यहां पर 'भगवान श्रीकृष्ण' और 'बाण' की लड़ाई हुई थी, जिससे चारों ओर लहू फैल गया था, अतः वहां की मिट्टी लाल है।

लोहाघाटी में एक रात व्यतीत करने के बाद अगले दिन वहां से तवाघाट की यात्रा आरम्भ की। यहां से कैलाश-मानसरोवर 230 किमी. दूर है। तवाघाट से लिपूलेख पहुंचने में करीब 8-10 दिन लग जाते हैं।

उन्होंने बताया कि यहां से रास्ता अत्यधिक दुर्गम हो जाता है, इसलिए 20-30 किमी. ही व्यक्ति प्रतिदिन चल पाता है। लोहाघाट से आगे चल कर तवाघाट दो दिन विश्राम करने के बाद वहां से व्यास घाटी के लिए मैंने चलना आरम्भ किया। व्यास घाटी व्यास ऋषि के नाम पर आधारित है। यहां पर अभी भी कई प्राकृतिक गुफाएं हैं, जिनमें आज भी संन्यासी साधना करने के लिए आकर ठहरते हैं।

व्यास घाटी से आगे बढ़ते हुए 'मंगशा धुरा' और 'लामपियांग' नामक स्थान आता है, इस स्थान की ऊंचाई करीबन 16,750 फीट है, इन स्थानों से कैलाश पर्वत स्पष्ट दिखाई देता है। यहां से आगे बढ़ने पर रास्ते में 'नारायण आश्रम' आता है, यह आश्रम 'श्री नारायण स्वामी जी' का है। इस आश्रम में मानसरोवर के यात्रियों को निःशुल्क भोजन व कम्बल दिये जाते हैं, जिससे वे अपनी यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें।

'सिरखा' व्यास के लोगों का पहला गांव है, इसकी चढ़ाई अत्यन्त कठिन है। यहां से आगे 'जिपथी' गांव पड़ता है, इस गांव से आगे का रास्ता दुर्गम होता जाता है। जिपथी से 'मलीपा' गांव पहुंचने के लिए 12 से भी अधिक घंटे चलना पड़ता है। जिपथी से मलीपा के बीच का रास्ता अत्यन्त रमणीय है, अनेक मन को बांधने वाले दृश्य हैं, वहां प्रकृति ने पूरे रास्ते में प्रत्येक वस्तु को अत्यन्त सौन्दर्य के साथ संवारा है, बारिश के दिनों में आसमान में जब इन्द्रधनुष बनता है, तब वहां के लोग कहते हैं, कि परियां नृत्य के माध्यम से अपने सौन्दर्य को प्रकट कर रही हैं, वास्तव में वहां की आभा को देखकर कुछ ऐसा ही लगता है।

'बुद्धि गांव' से 'चिहालेख' की पहाड़ियां पर चढ़ने पर प्रकृति का सौन्दर्य अलमस्त करने वाला है, यहां पहाड़ियां फूलों से ढकी हुई हैं, जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है, कि वास्तव में देवत्व साकार रूप में विराजमान है; यहां पर शिव-पार्वती का एक मन्दिर है, मन्दिर के आस-पास के सौन्दर्य को देखकर एहसास होता है, कि वे हर क्षण यहां विचरण कर रहे हैं। **यहां की वादियों के सौन्दर्य को देखकर कोई भी व्यक्ति प्रेम में आकण्ठ डूब जाए, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।**

चिहालेख से आगे की ओर जाने पर 'गर्बयांग' आता है। यह गांव यात्रा में आने वाला भारत का आखिरी गांव पड़ता है। गर्बयांग से 'गंजी' जाने के लिए वहां का रास्ता वहीं के एक जानकार व्यक्ति ने दिखाया। वहां के रास्ते दुर्गम होने के साथ-साथ अत्यधिक कठिन भी हो जाते हैं, क्योंकि अत्यधिक ऊंचाई पर होने के कारण ऑक्सीजन की कमी होती है, अतः सांस लेने में कठिनाई होती है। वहां से

किसी भी अनजान व्यक्ति का मानसरोवर पहुंचना अत्यन्त कठिन है। यह रास्ता साधारणतः वहां के निवासियों को ही ज्ञात है, वे लोग अत्यन्त ही सरल स्वभाव के और मददगार भी होते हैं। गंजी से 'जनशंकर रेंज' शुरु होती है।

गंजी से 'कुथी' होते हुए 'जलीकांग' पहुंचे, जैसे-जैसे यात्रा आगे की ओर बढ़ रही थी, हर क्षण मानसरोवर की निकटता का एहसास होता जा रहा था और उतना ही मन में उसके दर्शन की अभिलाषा बढ़ती जा रही थी। कभी-कभी अत्यधिक दुर्गम चढ़ाई और कठिनाई के रास्तों को पार करते हुए मैं हताश होने लगता था, लेकिन फिर भी कैलाश का आकर्षण, उसको देखने की ललक मुझे निरन्तर गतिशील बना रही थी आगे बढ़ने के लिए। जलीकांग जहां से 'लामपियांग धुरा' और 'मंगसा धुरा' मिलते हैं, लामपियांग धुरा जाते समय रास्ते में एक छोटी सी झील पड़ती है, जिसे देखने पर ऐसा लगता है, कि मानसरोवर अपने लघु रूप में यहां पर उपस्थित हो गया हो।

कैलाश-मानसरोवर के इस लघु रूप के देखने के बाद मन में थकान की जगह एक उमंग, एक पुलकन ने ले लिया। अब मैं इस स्थान को देखकर मन में उस कैलाश-मानसरोवर की भव्यता और पवित्रता की कल्पना करने लगा और उत्साहित हो तीव्र गति से आगे बढ़ने का प्रयत्न करने लगा। **यहां से आगे बढ़ने पर पग-पग पर मुझे हर क्षण यह अहसास हो रहा था, कि मैं भगवान शिव के निकट से निकटस्थ होता जा रहा हूं। प्रत्येक क्षण उनका चिन्तन, उनके सामीप्य का एहसास हो रहा था।**

गर्बयांग से आगे बढ़ने पर 'लिपूलेख' आता है, इन दोनों के बीच की दूरी 32 किमी. है। लिपूलेख बहुत ही पवित्र और निर्मल स्थान है और मानसरोवर के यात्रियों के मध्य बहुत ही प्रसिद्ध स्थल भी है। यह जगह साधनात्मक दृष्टि से भी अति उत्तम है, यहां पर कई जगह साधना करते हुए संन्यासी प्रायः मिल जाते हैं। यहां से आगे बढ़ने पर रास्ता अत्यधिक खतरनाक हो जाता है। यहीं पर संसार का सबसे ऊंचा स्थल 'पुलमोनेरी ओडिमा' आता है। यहां से आगे बढ़ते हुए यात्रियों को अपनी चाल की गति में परिवर्तन लाना पड़ता है, अत्यधिक सावधानीपूर्वक और धीरे-धीरे चढ़ाई चढ़नी पड़ती है।

उन्होंने बताया, कि रास्ता अत्यधिक दुर्गम होने के साथ-साथ वातावरण के परिवर्तन से व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बहुत ही प्रतिकूल असर पड़ता है। लिपूलेख से 17 किमी. चलने पर पहला तिब्बती गांव 'तालकोट' आता है, यहां पर भी यात्रियों की जरूरत का अधिकतर सामान उपलब्ध हो जाता है। वातावरण में परिवर्तन के कारण मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया, जिसके कारण मेरी यात्रा रुक सी गई और तालकोट पहुंचने पर दो दिनों तक वहां रुका। वहां के लोगों को वहां के वातावरण के अनुसार ही अनेकों औषधियों का ज्ञान होता है, जिसे वे वहां आने वाले यात्रियों की थकान उतारने में प्रयुक्त करते हैं। यहां पर 'सिगलिंग गोम्पा' का प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर है। यहां से मानसरोवर तक की लगभग तीन दिनों तक

की यात्रा शेष रह जाती है।

कैलाश मानसरोवर के प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए तालकोट से 'तोया' और तोया से 'गुरला पास' की कठिन और दुर्गम यात्रा करते हुए मार्ग की कठिनाइयां अपना एहसास नहीं दे पातीं, क्योंकि कैलाश-मानसरोवर का हृदय सम्मोहक दृश्य पग-पग पर उपस्थित दिखाई देता है। कैलाश पर्वत के शुभ्र हिम मण्डित पर्वत शिखर को देख कर ऐसा लग रहा था, मानो कैलाश ने श्वेत वस्त्र धारण कर लिए हैं। कैलाश विश्व का सबसे सुन्दर स्थल है। सम्पूर्ण मानसरोवर को देखने पर मानस में देवलोक की संस्कृति साकार उपस्थित हो जाती है।

मानसरोवर पृथ्वी तल से लगभग 4990 मी. की ऊंचाई पर है। इस झील की 325 वर्ग किमी. में फैली हुई परिधि अपने आप में अद्वितीय सौन्दर्यमय वातावरण का सृजन करती है। मानसरोवर की परिक्रमा में चार से पांच दिन तक लगते हैं।

मानसरोवर की पश्चिमी तरफ 'राक्षसताल' है। यह राक्षसताल 'गंगा चूह' नाम के मार्ग से मानसरोवर से जुड़ा हुआ है। इस मार्ग में तीन गरम जल स्रोत हैं।

राक्षसताल के बारे में कहा जाता है, कि रावण ने यहां बैठ कर भगवान कैलाश की तपस्या की थी, जिसके कारण वह अपने जीवन में उच्चता प्राप्त करने में समर्थ हुआ। तिब्बती भाषा में रावण की लंका के कारण इसे 'लंगक लासो' कहा जाता है। यह ताल करीबन 125 किमी. में फैला हुआ है और 150 फीट गहरा है।

चार विशेष नदियां वहां से निकलती हैं— सिंधु, सतलज, करनाली और ब्रह्मपुत्र। यहां पर तीन प्रजाति के हंस विचरण करते हैं। आर्य, यवन, कम्बोल, किरत, हूण और अन्य कई जातियों के लोग यहां रहते हैं।

हिन्दू धर्म में कैलाश पर्वत को भगवान शिव का लोक माना जाता है। भगवान शिव को पहाड़ों का देवता मानते हैं, इसलिए हिमालय सम्पूर्ण देवी-देवताओं की स्थापना से युक्त है, क्योंकि भगवान शिव के अधिकतर मंदिर पहाड़ों पर ही हैं।

मानसरोवर के पास ही गौरी कुण्ड है। पूज्य गुरुदेव ने बताया, कि वह स्थान साधनात्मक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। वहां का पानी पूरे वर्ष भर जमा रहता है और केवल कुछ दिनों के लिए ही पिघलता है। उन दिनों में मानसरोवर के हंस गौरी कुण्ड में विचरण करने आते हैं और उच्चकोटि के संन्यासी और तांत्रिक भी वहां आकर विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न करते हैं।

गुरुदेव ने बताया, कि उन्होंने भी वहां पर विशिष्ट मंत्रों द्वारा भगवान शिव की साधना की थी। गौरी कुण्ड प्रत्येक शिव साधना करने वाले साधक के लिए अनन्य महत्त्व रखता है।

गुरुदेव ने बताया, कि अत्यन्त पवित्र अध्यात्म के आश्रय-स्थल 'सिद्धाश्रम' का रास्ता भी वहीं से है। सिद्धाश्रम से भी संन्यासी और योगी उन दिनों वहां उच्चकोटि की साधनाएं करने आते हैं।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा में अनेक ऐसे चैतन्य और जाग्रत स्थान आते हैं, जो अभी तक लुप्तप्राय हैं और स्वयं कैलाश के आसपास के क्षेत्र में भी ऐसे कई विशिष्ट स्थान हैं, जहां केवल उच्चकोटि के योगी ही जा सकते हैं, क्योंकि ये सभी क्षेत्र मंत्र बद्ध हैं, जिन्हे सामान्य मनुष्य देख ही नहीं सकता।

पूज्यश्री के द्वारा कैलाश-मानसरोवर यात्रा का वर्णन सुनकर मेरे मन में दबी लालसा बलवती हो कर गुरुदेव के समक्ष ही प्रकट हो गई। मेरी विनयवत् इच्छा को सुनकर पूज्य गुरुदेव ने शक्तिपात क्रिया के द्वारा 'दूर दृश्य दर्शन प्रयोग' सम्पन्न कर मुझे भी कैलाश-मानसरोवर के दर्शन का सौभाग्य प्रदान किया। इस सौभाग्य को प्राप्त कर मैं कृतार्थ हो गया।

— योगीराज विजय लक्ष्म्यैश्वरानंद

ये अद्वितीय दीक्षाएं

जिसे प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है

लक्ष्य भेद दीक्षा	आत्म ज्ञान दीक्षा
ध्यान सिद्धि दीक्षा	वैवाहिक योग दीक्षा
अभीष्ट सिद्धि दीक्षा	ब्रह्म दर्शन सिद्धि दीक्षा
महालक्ष्मी दीक्षा	त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	नागेश दीक्षा
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	साधना सिद्धि दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा	सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा
बगलामुखी दीक्षा	हनुमान सिद्धि दीक्षा
मनोवांछित गर्भ धारण दीक्षा	मंगली दोष निवारण दीक्षा
आत्म-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा	मन:शान्ति दीक्षा
सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ति दीक्षा	आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा

अनिन्द्य सौन्दर्य एवं पौरुष के लिए उर्वशी प्रयोग

जो पुरुष को पौरुषत्व एवं स्त्रियों को सौन्दर्य प्रदान करती ही है।
जो प्रियतमा के रूप में हर क्षण साथ रहती है।
जो अद्वितीय है और पहली ही बार में सिद्ध होने वाली साधना है।
जिसे इन्द्र ने स्वयं सिद्ध कर जीवन की पूर्णता प्राप्त की थी।
एक बार आप आजमा कर तो देखिये न!
अद्भुत सौन्दर्ययुक्त माधुर्य और प्रेम से लबालब दुर्लभ प्रयोग ...

उर्वशी प्रयोग।

यौवन की आभा से उद्दीप्त, कमनीय कोमल काया, बेत की तरह लचकदार, केसर मिश्रित दुग्ध सा गौर वर्ण, घटाओं सी लहराती खुली केश-राशि, प्रत्येक अंग-प्रत्यंग सांचे में ढला और मुख मण्डल पर अपूर्व तेजस्विता। रक्त वर्णीय परिधान व ललाट पर लाल बिन्दी ... रूप और सौन्दर्य की अद्भुत आधार शिला है वह

षोडश वर्षीय उर्वशी।

एक अनोखा सौन्दर्य ..... जिसे देखते ही रग-रग में तूफान सा मचल उठे .... सौन्दर्य से भी अधिक है उसकी मादकता और मन को लुभा लेने की कला .... इन्द्र की सभा की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना ... जिसे हौले से छू देने पर संगीत अपने आप ही झंकृत होने लगता है ... बेसुध करने की सीमायें तोड़ डालता है ... यौवन का नृत्य ... आंखों में कहीं गहरा समा जाने वाला ... मूक आमंत्रण लिए ... संगीत की स्वर लहरी जैसा ही ढला है उसका मांसल बदन ... देह की गुलाबी रंगत ... रेशम से भी कोमल ... अनार के दाने सी गठी हुई सुन्दर दन्त पंक्तियां ... नाभि जिसे देखते ही सुध-बुध खो बैठे हर कोई ... भान ही न रहे उसे देह का ... होंठ ऐसे मानो एक के ऊपर एक गुलाब की पंखुड़ियों के समान उत्तेजक गुलाबीपन लिए यौवन की मधुरिमा .. अमृत वर्षा से सराबोर कर देने वाली हो ...

मानो चुरा ली हो चांदनी की आभा ... जो उसके यौवन से छिटक-छिटक कर गिरती है ... पलकों और बरौनियों के बीच से झांकती ... कुछ लजाती, शरमाती ... तो दूसरी ओर प्रबल आग्रह भी ... सम्पूर्ण सौन्दर्य के खजाने से लबालब भरी हुई ... हर रंग से रंगी ... अत्यंत मन मोहक सुगन्ध से आप्लावित कर देने वाली ... सागर की लहरों सी लहंराती, बलखाती ... रंग, यौवन और मादकता का ऐसा संगम कहीं और देखा ही नहीं, मन को छू लेने वाली कलात्मकता और प्रेम का मधुर मिलन ... सम्पूर्ण सौन्दर्य का खजाना अपने में समेटे हुए है यह।

जिसे पाने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं, एक सौ आठ अप्सराओं में से सर्वश्रेष्ठ, जिसके घुंघरुओं की झनकार से देवता, यक्ष, किन्नर सभी के प्राण अटके रह जाते हैं; कौन नहीं पाना चाहेगा, ऐसी सौन्दर्य रूपा उर्वशी को ... जिसका नाम सुनते ही मन में एक हलचल सी मच जाती है, उसे देख लेने के लिए मन बेचैन हो उठता है।

और फिर हमारे पूर्वजों विश्वामित्र, गौतम, अत्रि, कणाद यहां तक कि भगवान श्रीकृष्ण आदि ने भी इसे प्रियारूपेण सिद्ध कर जीवन की श्रेष्ठता और सफलता प्राप्त की थी।

ऐसा अनछुआ सौन्दर्य ... कहीं छूने से मैला न हो जाय ... रेशम सी नाजुकता, यौवन की लालिमा से परिपूर्ण ... सौन्दर्य के खजाने से लबालब भरी ... हर रंग को अपने आप में समेटे हुए ... उद्दीप्त यौवना उर्वशी ... जिसके घुंघरुओं की झंकार से प्राण अटके रह जायें और दिल धड़कना बंद कर दे ... यही तो है वह मादकता जो मन को लुभा लेने वाली है।

उर्वशी अप्सरा प्रियारूपेण जहां पुरुषों को पौरुषत्व प्रदान करती है, वहीं स्त्रियों को अद्वितीय सौन्दर्य प्रदान करती है, जिसे इंद्र ने स्वयं सिद्ध कर जीवन की पूर्णता प्राप्त की। हर स्त्री व पुरुष सौन्दर्य प्राप्त करने के लिए उत्सुक एवं लालायित रहता ही है, क्योंकि सौन्दर्य के बिना उमंग भरे जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

जहां उर्वशी साधना पुरुष को पौरुषता, कर्मठता और प्रवलता प्रदान करती है, वहीं स्त्रियों को सौन्दर्य और कोमलता भी प्रदान करती ही है, क्योंकि हर स्त्री व पुरुष सौन्दर्य प्रेमी है, हरेक चाहता है कि वह युवा और आकर्षक बना रह सके, उसके शरीर से यौवन की आभा स्पष्ट छलकती हुई सी इधर-उधर बिखरकर औरों के मन को लुभा लेने वाली हो, जिसे देखकर व्यक्ति कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध सा खड़ा रह जाय ... एकटक उसकी आंखें इस सौन्दर्य को निहारने लगें, मानों कोई सौन्दर्य का झरना उसके शरीर से उमड़-घुमड़ कर किसी को भी सराबोर कर देने की कला जान गया हो, जिसकी गहराई में वह डूबता ही चला जाय.....

सभी तो सौन्दर्य से लबालब हो जाना चाहते हैं। ठीक अप्सरा की तरह ही ... जिसे कला आती है रोक लेने की, जिसे देखते ही दिल धड़कना बंद कर दे। हर स्त्री का यह सपना होता है, कि वह अप्सरा की तरह ही सौन्दर्यशीला हो ... आंखों का आकर्षण, होठों का रसीलापन, लम्बे बाल और उन्नत उरोज हों, उसकी सुन्दर पुष्ट जंघायें और हंसिनी के समान ही चाल हो, चेहरा चन्द्रमा के समान शीतल, सौन्दर्य युक्त, आकर्षण युक्त हो, आंखें खंजन पंक्षी के समान चञ्चल

जो कवियों की पंक्तियों में भी न स्पष्ट हो सकी ... ऐसी सौन्दर्यशीला ... जिसे देख कोई भी बेकाबू हो तोड़ डाले सीमाओं के बन्धन को ... ऐसा अद्वितीय प्रयोग जो अपने ही रूप में ढाल दे और कर दे पूर्ण शरीर का कायाकल्प।

प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए सौन्दर्य की प्राप्ति हेतु अद्भुत् ... आश्चर्यजनक एवं अद्वितीय प्रयोग ...

सौन्दर्य और सिद्धि का पूरक वह उद्दाम यौवन ...

और अपने आप में समेट लेने वाली हों, आवाज वीणा की झंकार के समान मधुर तथा पूरा शरीर स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक व पुष्ट हो।

जितना महत्त्व नारी सौन्दर्य का है, उतना ही पुरुष सौन्दर्य का भी है — भरापूरा लम्बा कद, पुष्ट कंधे, उन्नत ललाट, लम्बी बाहें, चौड़ा वक्षस्थल और साथ ही दृढ़ता, पौरुष और साहस का समन्वय, एक ऐसा सौन्दर्य जिसे देखकर सुन्दरियां ठगी सी रह जायें।

.... और यह प्रयोग ऐसा ही प्रभावोत्पादक, अचूक फलदायक सिद्ध होगा, जिसे हजारों लोगों ने आजमाया है और सत्य की कसौटी पर कस कर यह प्रमाणित हो चुका है ... तभी तो पत्रिका के माध्यम से विश्व को प्रदान किया जा रहा है।

उर्वशी प्रयोग पूर्ण कायाकल्प प्रयोग है, जिसके माध्यम से चिर युवा बना जा सकता है, रति व कामदेव की तरह ही देह यष्टि प्राप्त की जा सकती है। ''कायाकल्प'' अर्थात काया को परिवर्तित कर देना ... और यह गोपनीय प्रयोग विधि ऐसी ही चमत्कारिक एवं आश्चर्य चकित कर देने वाली है, जिसमें शरीर की जर्जरता के साथ-साथ मन की जड़ता को भी समाप्त कर देने की शक्ति समाहित है।

यह प्रयोग अत्यन्त ही उपयोगी, दुर्लभ एवं गोपनीय है, जिसके लिए योगी-संन्यासी, यतियों ने अनेकों कष्ट सहन किये, जंगलों की खाक छानी, साधु-संन्यासियों की सेवा की ... जो आपको इतनी सरलता व सुगमता से इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त हो रहा है, जिसे प्राप्त करके उन्होंने अपने सौभाग्य को सराहा; जिसके माध्यम से उन्होंने निर्धनता को सम्पन्नता में, बुढ़ापे को यौवन में बदलने के साथ-साथ समस्त सांसारिक सुख, वैभव, विलास और सम्पूर्ण आनन्द को भी प्राप्त कर लिया। यह तो सर्वश्रेष्ठ साधनाओं में से एक है, जिसे सिद्ध कर व्यक्ति नारकीय जीवन को त्याग कर पूर्ण आनन्द प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।

नेपाल के एक पुस्तकालय से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थ से ही हमें इस प्रयोग की गोपनीय विधि व इससे प्राप्त लाभों का वर्णन मिला, जिसकी प्रामाणिकता को परख करके ही इसे पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है।

1. इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए **'उर्वशी माल्य'** और **'उर्वशी यंत्र'** की आवश्यकता होती है।
2. यह साधना 17/1/96 या किसी भी **शुक्रवार** के दिन प्रारम्भ कर सकते हैं।
3. तीन दिवसीय यह प्रयोग रात्रिकालीन है।
4. साधक सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर पूजा गृह में धूप व अगरबत्ती लगा कर वातावरण को मधुर और सुगन्धमय बनायें।
5. पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
6. तेल या घी का दीपक प्रज्वलित करें।
7. सामने उर्वशी यंत्र स्थापित करें तथा अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर माला स्थापित कर दें।
8. फिर उर्वशी अप्सरा का ध्यान करें, साधक जिस रूप में उसे पाना चाहते हैं, मन ही मन प्रार्थना कर उसके उसी स्वरूप का चिन्तन कर ध्यान करें।
9. इसके बाद यंत्र व माला का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप व गुलाब के पुष्पों से पूजन करें।
10. इसके बाद उर्वशी माला से नित्य 21 माला निम्न मंत्र का जप करें —

मंत्र

।। ॐ सं सौन्दर्य सिद्धये स्वाहा।।

11. मंत्र जप के पश्चात् समस्त सामग्री को चौथे दिन किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

यह प्रयोग सिद्धि प्रदायक है, सिद्धि का अर्थ है - समस्त भौतिक सुखों की प्राप्ति, यौवन, सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति।

साधना सामग्री—न्यौछावर— 375/-

का जादू गुरु मो पै कीन्हो

हे गुरुदेव! जब मैंने पहली बार आप को प्रवचन करते देखा, तो मैं अत्यन्त मंत्रमुग्ध होकर आपको देखता रह गया, आपके श्रीमुख से मेरी नजरें हटती ही नहीं थी, ऐसा लगता था कोई चुम्बकीय शक्ति बराबर मुझे आपकी ओर देखने के लिये विवश कर रही है, मैं चाह कर भी अपना ध्यान नहीं हटा पा रहा था। आपकी मधुर वाणी मेरे अन्तस को हौले-हौले से भिगो रही थी और मैं सम्मोहित सा सब कुछ सुन कर भी कुछ नहीं सुन पा रहा था, क्योंकि एक पागलपन सा, एक नशा सा मेरे ऊपर छाता जा रहा था ...

अहले खिरद क्या जाने दिल को,
इसकी यह मजबूरी है।
इश्क में पागल-सा होना,
शायद बहुत जरूरी है।

मुझे तो अपनी अवस्था सम्मोहित सी लगने लगी थी, जब मैं दूर खड़ा आपको मंच की ओर जाते हुए देख रहा था, तो मन में एक अभिलाषा होने लगी, कि मेरे गुरुदेव कब अपनी कृपा दृष्टि मुझ पर डालेंगे; कब उनकी दृष्टि मुझ पर आवेगी ... और यह सोच ही आंसू बन आंखों से प्रवहित होने लगे ... और आप अचानक अपनी स्नेहिल दृष्टि मुझ पर डालते हुए स्टेज की ओर चले गये।

आपका उस मंच पर बैठना और मेरी तरफ निगाहेकरम करना ... यूं लगा, कि जैसे आप वहां पर बैठे हुए तो थे, लेकिन अपनी दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के अन्तस में उतर रहे हों और सभी तो आप से आंखों ही आंखों में बात कर अपने दिल की बात कह डालते हैं, भरी सभा के बीच में ही ...

उनसे जब दिल की बात होती है;
बज्म में कायनात होती है,
लब को महसूस तक नहीं होता,
आंखों आंखों में बात होती है।

आपके चारों ओर प्रकाशित आभामण्डल उस वातावरण को आलोकित करता रहता है। आपके वहां विराजते ही वहां की वायु में एक प्रकार की दिव्य सुंगध प्रवाहित होने लगती है, और वही सुगंध सबको आनंद के सागर में अवगाहन करा कर मदमस्त कर देती है, आप्लावित कर देती है, खुमारी से भर देती है। यही तो है वह खुमारी की आलम का नशा जो बांध देती है आप से और व्यक्ति रुक ही नहीं पाता है आप से दूर जा कर, तभी तो चाहे कुछ भी हो जाए वह बार-बार आप तक आ ही जाता है ....

रोके जमाना चाहे रोके खुदाई
हमको आना पड़ेगा।

जब तक मैं आप से दूर रहा, मैंने यही एहसास किया कि आपका चिंतन भी स्वयं में इतना जाग्रत होता है, कि किसी अन्य की जरूरत का एहसास नहीं होता, कितना समय व्यतीत हो जाता है, कुछ पता नहीं पड़ता; क्योंकि हर क्षण यह प्रतीत होता है, कि जैसे आप स्वयं साक्षात् रूप में मेरे साथ हैं और मैं अकेला रह कर भी कभी अकेला नहीं होता हूं, क्योंकि-

हर घड़ी तेरे प्यार का साया,
रहता है मेरे साथ गुरुवर।

हे गुरुदेव! जब मैं आपकी साक्षात् उपस्थिति से अलग होकर घर गया, तभी तो मैंने यह जाना, कि आपके सान्निध्य का आनंद कितना अद्वितीय है . . . और यहां, जहां इस देह से संबंध रखने वाले लोग रहते हैं, यहां आकर एक क्षण के लिये भी आपको विस्मृत नहीं कर पाया। ऐसा अनुभव होता है, कि मेरे प्राणों की शक्ति, मेरे प्राणों का आधार तो वहीं छूट गया है और मैं अत्यन्त व्यथित हो जाता हूं ... और आपके प्रवचनों का स्मरण करता हुआ मैं सारे कर्त्तव्यों का निर्वाह तो करता रहता हूं, लेकिन हर क्षण आपकी याद में डूबा रहता हूं, सोचता रहता हूं, कि यह मुझे क्या हो रहा है? क्या करूं, हृदय को कौन समझा सकता है, क्योंकि इसे तो बस यही आशा है, कि अभी मेरे प्रभु आयेंगे और मैं उनकी एक झलक प्राप्त कर सकूंगा, उनको अपने नजदीक अनुभव कर सकूंगा। तड़पता रहता हूं हर-पल आपकी निकटता के लिए, क्योंकि सिर्फ और सिर्फ एक बार ही तो आपने मुझे भरपूर निगाहों से देखा था और उस एक नजर ने ही तो ....

हर एक नजर ये काम करती भी नहीं,
हर एक निगाह यूं उतरती भी नहीं।
सदके तेरे देखने के जालिम दिल पर,
पड़ती है वो चोट जो उभरती ही नहीं।

मैं एक चकोर की भांति रहने लगा हूं, जो न कभी चन्द्रमा से मिला, लेकिन फिर भी उसकी ओर देखता हुआ हर क्षण उसकी प्रतीक्षा करता रहता है; किसी का भी ध्यान नहीं रहता, न तो मुझे भूख लगती है, न प्यास, हर क्षण ऐसा लगता है अगर मैं शीघ्र आपसे नहीं मिला तो मेरे प्राण निकल जायेंगे, मैं स्वयं में रह ही नहीं पा रहा, पूरे दिन किसी न किसी माध्यम से आप मेरे हृदय में अपनी याद को जाग्रत कर ही देते हैं ... और मैं आपके साथ बिताये हुए क्षणों में खो जाता हूं ....

वो बीते दिन याद हैं, वो पल छिन याद हैं।
गुजारे तेरे संग जो, रंगे हैं तेरे रंग जो।

... और आपके सिवाय कुछ भी ध्यान नहीं रहता और पूरा दिन, पूरी रात यूं ही व्यतीत हो जाती है –

शबे 'फिराक' उठे दिल में और भी कुछ दर्द,
कहूं मैं कैसे तेरी याद हर पल आई।

जब इन क्षणों से वापस यर्थाथ के धरातल पर आता हूं तो सामने घर-परिवार के लोग दिखाते हैं, फिर हृदय पुकार उठता है – गुरुदेव! यह क्या हो गया है, मैं कहां आ गया, मैं अब यहां नहीं रह सकता। प्राण निकलते हुए से लगते हैं, हृदय वेदना, चुभन और असीम दर्द से भर जाता है; गुरुदेव! यह कैसी तड़प है, कैसा सम्मोहन है। ऐसा लगता है, कि आप सब कुछ समझते हुए भी नासमझ बने हुए हैं, जानते हुए भी अनजान हैं और आपकी यही अदा मुझे हर क्षण मुझसे ही दूर करती जा रही है ... और खुद से दूर होकर बहुत बेचैन-सा हो गया हूं, इसलिए तो दर-बदर तलाश करता फिर रहा हूं और आज अचानक ही मेरी तलाश पूरी होती हुई दिख रही है, क्योंकि मुझे पता चल गया है, कि

तुझे पा के खुद को मैं पाऊंगा
कि तुझी में खोया हुआ हूं मैं।
ये तेरी तलाश है इसलिए
कि मुझे है अपनी ही जुस्तजू।

गुरुदेव! आपकी उपस्थिति मात्र से ही नीरस वातावरण में सरसता आ जाती है, उद्विग्नतापूर्ण माहौल में शांति का स्थापन हो जाता है, आपके आगमन से मादक सुगंध से आपूरित हो जाता है पूरा वातावरण। पेड़, पत्ते, फूल सभी अपने सौन्दर्य को बिखेर देना चाहते हैं आपके स्वागत में, प्रकृति नवीनतम श्रृंगार धारण कर हर कदम पर अपने आपको बिछा देना चाहती है, यह स्थिति तो प्रकृति की है, आपके शिष्यों की भी ठीक यही स्थिति रहती है, आपके आगमन के संकेत से कोई भी साधक अपनी साधना में स्वयं को एकाग्र नहीं कर पाता, उसकी आंखें उस रास्ते पर जा टिकती हैं, जिस रास्ते से आपके आने की उम्मीद रहती है ...

. . . और आपके आगमन की प्रतीक्षा करते समय एक-एक क्षण एक-एक युग की उपस्थिति का आभास देता है और इस स्थिति को देखकर, मेरा यह सोचना अनुचित नहीं है, कि सब कुछ आपके ही हाथ में हैं ...

तू न चाहे तो तुझे पा के भी नाकाम रहें,
तू जो चाहे तो ग़मे-हिज्र भी आसां हो जाए।

आप से ही प्रसन्नता है, आनंद है, आह्लाद है प्रकृति में बहारों की मुस्कराहट भी उधर ही दिखती है, जिधर से आप गुजरते हैं –

सांस लेती है वो ज़मीन 'फिराक'
जिस पे तुम नाज़ से गुज़रते हो।

एहसास होता है उस क्षण, कि वास्तव में आपके बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है, वास्तव में हम सौभाग्यशाली हैं, कि हमें आप जैसे गुरु मिले, जिन्होंने हमें हमारे जीवन का लक्ष्य बताया और समझाया कि जीवन क्या है? मुस्कराहट, प्रेम और जीवन की पूर्णता भी बताई, न सिर्फ आध्यात्मिक वरन् भौतिक भी। आपकी उपस्थिति के एहसास मात्र से ही जब हमारे निर्जीव पड़ी देह में प्राणों का संचार हो जाता है, उसकी अभिव्यक्ति शब्दों के द्वारा सम्भव ही नहीं है, क्योंकि –

तुम मुखातिब भी हो, करीब भी हो,
तुम को देखूं कि तुम से बात करूं।

हम आपको पाकर यह एहसास कर रहे हैं, कि जीवन में आप (गुरु) न होते तो जीवन का अर्थ ही नहीं रहता, शास्त्रों में, वेदों में यदि गुरु की महिमा वर्णित है, तो वह भी अधूरी ही है, क्योंकि गुरु का क्या महत्त्व है, यह तो एहसास होता है उसे पाकर, इसका भाव लेखन तो सम्भव ही नहीं है, आपकी सामीप्यता प्राप्त हो, तो सिद्धाश्रम की प्राप्ति भी तुच्छ हो जाती है, नगण्य-सी हो जाती है, फिर तो हे गुरुदेव! यदि मैं यह कहूं, तो अतिशयोक्ति नहीं है, कि –

नींद न आवै, भूख न लागत,
तोरे बिन निकसत प्राण।
का जादू गुरु मो पै कीन्हो,
तू ही जीव जहान।।

– अज्ञात

कपूर की तरह ही उड़ जाते हैं संकट, भय, बाधा, कष्ट, पीड़ा, अभाव और दारिद्र्य . . .
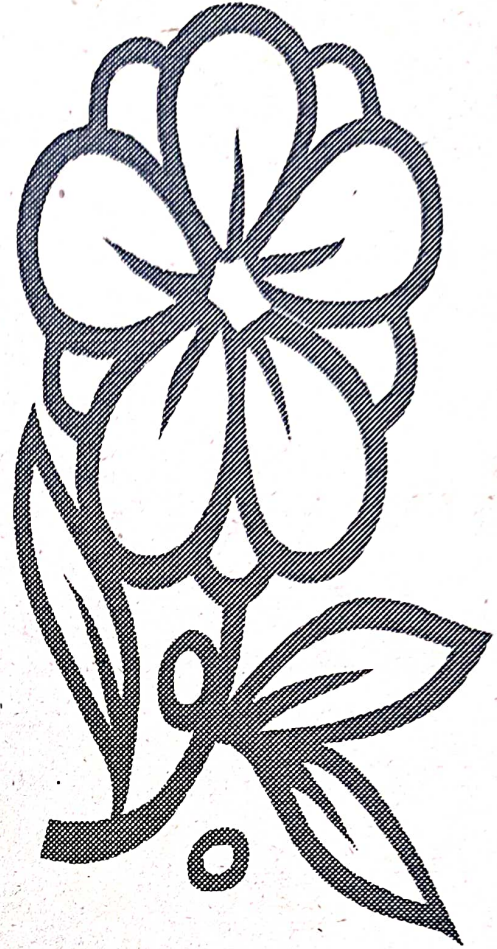
जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी सुख-दु:ख, आनन्द-विषाद, जन्म-मृत्यु के चक्रव्यूह में बंधा है, जहां पल में प्रसन्नता का आवेग है, तो रुदन के क्षण भी; पर जो इन क्षणों को पूर्णता के साथ जी लेता है, जो अपने कष्टों का, पीड़ा का, अभावों का और दारिद्र्य का मुकाबला बड़े ही हिम्मत,जोश और मस्ती के साथ कर लेता है, वही पूर्ण मानव कहलाता है।

मनुष्य होना कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है, पर मनुष्य बनना, मुसीबतों से जूझते हुए, बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ जाना, अपने जीवन को अधोगामी से ऊर्ध्वगामी बना देना, नर से नारायण बना देना ही जीवन की श्रेष्ठता है।

प्रत्येक के जीवन में दु:ख आते हैं, संकट आते हैं, क्योंकि संकट दस्तक देकर मनुष्य के जीवन में नहीं आता, वह तो अचानक ही आ जाता है, ऐसी स्थिति में मनुष्य दुविधाग्रस्त हो जाता है। जीवन तो पल-प्रतिपल संकटों से घिरा हुआ है ही, परन्तु इन संकटों का निवारण कर लेने की क्षमता प्रत्येक में नहीं होती, ये संकट तो मनुष्य को स्वयं ही झेलने पड़ते हैं, क्योंकि संकट के समय सभी रिश्तेदार, बन्धु-बान्धव यहां तक कि पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री भी काम नहीं आते, ये सब तो सुख के साथी हैं और दु:ख में तो अपने भी पराये ही हो जाते हैं; वस्तुत: मनुष्य को स्वयं ही जूझना पड़ता है।

हमारे ऋषि, हमारे पूर्वज इस तथ्य को पहले से ही जानते थे, कि आने वाली पीढ़ी, आने वाला युग ऐसा होगा, इसीलिए उन्होंने अपने अजस्त्र ज्ञान के प्रवाह से कुछ ऐसे तथ्य स्पष्ट किये, जिससे लाभ उठाकर मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है, अद्वितीयता प्राप्त कर सकता है, दिव्यता प्राप्त कर सकता है।

घोर संक्रमण के इस काल में मानव दिग्भ्रमित हो जाता है, जिनमें संघर्ष करने की क्षमता नहीं होती, जो चुनौतियों से विचलित हो जाते हैं, वे ही हारते हैं . . . और जब ऐसा होता है, तो उनमें जीने की ललक, लालसा नहीं

संकष्टी साधना

जो पूरे वर्ष को सुरभित, सुगंधित एवं माधुर्य से ओत-प्रोत कर देती है।

रह जाती . . . परन्तु तुम्हें तो अपने परिवार और समाज को त्याज्य नहीं करना है, क्योंकि पलायन करना कायरता है, तुम्हें तो उनके बीच रहकर प्रसन्नता और मस्ती के साथ उन चुनौतियों, उन संकटों का सामना करना है और अपनी हार को विजय में बदल देना है।

जीवन में तो बाधाएं आयेंगी ही और यह तो जीवन का एक सौभाग्य ही है, कि तुम्हें बार-बार अपने आपको परखने का मौका मिल जाता है, इस प्रकार की स्थिति आने पर तुम अपने आपको तौल सकते हो, कि तुम में विपत्तियों का सामना करने का कितना दमखम है अथवा आकस्मिक घटित घटनाओं को झेलने की कितनी अधिक क्षमता है।

तुम्हें तो पलायन की अपेक्षा मुस्कराकर खड़े होना है, विपत्तियों से घबराकर विचलित होने की अपेक्षा अपने आप को जीवन्त और सजग बनाये रखना है, यही तुम्हारी कसौटी है और यही तुम्हारी कर्मशाला का पहला अभ्यास होगा, जब तुम कुछ कर सकने में सक्षम हो सकोगे।

पर कभी-कभी ऐसा लगता है, कि तुम मानसिक रूप से कुंद होते जा रहे हो और तुम्हारी मानसिकता पर ये समस्याएं हावी होती जा रही हैं, इसीलिए तुम अपने आपको अशक्त और अक्षम पाते हो, तुम्हें तो अपनी मानसिक वृत्तियों को समेट कर वीर बनना है और मन में यह विश्वास पैदा करना है, कि मैं जो चाहूं कर सकता हूं, यहां तक कि अपने प्रारब्ध को भी बदल सकता हूं, मैं साधना सम्पन्न कर जीवन को पूर्णता दे सकता हूं।

तुम्हें पुरुषार्थी बनना है और पुरुषार्थ के द्वारा ही अपने रास्ते का निर्माण करना है। विपत्तियों का सामना कर निर्विकार भाव से आगे बढ़ते चले जाना है। इस प्रकार का रास्ता सौभाग्यशाली ही प्राप्त कर सकते हैं . . . जब तुम साधना के मार्ग पर बढ़ोगे, तो तुम्हारे जीवन का अंधकार पक्ष उजाले पक्ष में परिवर्तित हो जायेगा; मानो काले बादल छंट जाने के बाद भोर का स्वर्णिम प्रभात विजय-माला लिये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हो।

जीवन में तीन प्रकार के संकट ही मानव को संत्रस्त एवं विक्षिप्त कर देते हैं—

1. भौतिक 2. दैहिक 3. दैविक

भौतिक —जो मनुष्य को मानसिक संताप से पीड़ित कर देते हैं, जैसे —

1. सुयोग्य पति या पत्नी का न मिलना।
2. योग्य पुत्र या पुत्री का न होना।
3. धन का अभाव।
4. नौकरी न मिलना।

5. अशांत वातावरण होना।
6. व्यापार में वृद्धि न होना।
7. शत्रु बाधा।

दैहिक संकट — दैहिक का अर्थ है, देह से सम्बन्धित दु:ख जैसे—

1. सर्प दंश 2. एक्सिडेंट हो जाना 3. रोग ग्रस्त हो जाना 4. अंग-भंग हो जाना 5. पागलपन 6. जर्जरता आना 7. पशुभय

दैविक संकट —दैविक का अर्थ है, पराजगत से सम्बन्धित बाधाएं, जिनके पीछे बहुत ही सूक्ष्म कारण छिपे होते हैं, जैसे—

1. भूत प्रेत बाधा 2. पितृ दोष 3. गृह बाधा 4. ग्रह दोष 5. अकाल मृत्यु 6. आकस्मिक दुर्घटना 7. तंत्र बाधा दोष 8. देव रुष्टता।

अब प्रश्न उठता यह है, कि क्या इसका कोई विकल्प है? क्या ऐसा कोई उपाय है, जिसके द्वारा इन संकटों से बचा जा सके और पूर्ण आनन्दमय, रसमय जीवन जी सकें।

इन बाधाओं, विपत्तियों से मनुष्य को आगाह किया जा सकता है और इन पर विजय भी प्राप्त की जा सकती है; मनुष्य में यदि धैर्य, दृढ़ता, उत्साह, चेतना और बल है तो। उच्चकोटि के ऋषियों और संन्यासियों ने इन संकटों के आघात से बचने के लिए ही "संकष्टी साधना" को अपने जीवन में विशेष महत्त्व दिया । इन भौतिक, दैहिक और दैविक प्रकोपों से निजात पाने का एकमात्र क्षण है, "संकष्टी पर्व" पूरे वर्षभर में मात्र एक दिन ऐसा अवश्य आता है, जब व्यक्ति उस क्षण की महत्ता को पहिचान कर, अपने जीवन में आये संकट को दूर कर नीरसता के जीवन का त्याग कर सकता है।

यदि इस पर्व पर साधक "संकष्टी साधना" को सम्पन्न कर ले, तो वह उसके लिए एक सौभाग्यदायक क्षण होगा, क्योंकि संकष्टी साधना एक ऐसा सशक्त और सक्षम माध्यम है, जिसके द्वारा जीवन में आई रुकावटों को, आपदाओं और विपदाओं को दूर किया जा सकता है, प्रत्येक शुभ कार्य को सफलता प्रदान की जा सकती है और एक सफल गृहस्थ जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

साधना विधि :

1. जीवन में उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होने तथा संकटों का हरण करने वाला है मंत्र सिद्ध चैतन्य '**संकष्टी यंत्र**' और बाधा निवारण हेतु '**पूर्णा माला**'।
2. यह एक दिवसीय साधना 9/1/96 को की जायेगी अथवा किसी भी बुधवार को इसे सम्पन्न कर सकते हैं।
3. यह साधना प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में 5 से 8 बजे के मध्य सम्पन्न करें।
4. इसमें पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
5. स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें व पीले आसन का ही प्रयाग करें।
6. सबसे पहले बाजोट पर नया सफेद आसन बिछा कर गुरु चित्र को स्थापित करें तथा गुरु पूजन सम्पन्न करें, फिर भगवान गणपति का स्मरण करें।
7. फिर एक तांबे की प्लेट पर 'स्वस्तिक' का चिन्ह बना दें तथा यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्थापित कर दें।
8. फिर यंत्र का कुंकुम, अक्षत व पुष्प से पूर्ण भक्ति भावना से पूजन करें।
9. पूर्णा माला से निम्न मंत्र का 21 माला जप करें—

मंत्र

।।ॐ ऐं क्लीं सर्व संकटनाशाय क्लीं ऐं फट्।।

10. मंत्र जप के पश्चात् उपरोक्त मंत्र से 29 बार आहुति दे कर छोटा सा हवन करें और हवन सामग्री के साथ काली मिर्च, काली सरसों और लौंग को मिला लें, जिससे कि साधक के जीवन में आने वाले भौतिक, दैहिक व दैविक संकटों की निवृत्ति हो सके।
11. फिर यंत्र के आगे हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक नमन करें और हो सके, तो गुरुदेव से फोन पर या अन्य किसी भी माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर आशीर्वाद प्राप्त करें।
12. पूजन सामग्री यंत्र एवं माला को बाजोट पर बिछे कपड़े में ही लपेट कर एक माह के पश्चात् किसी नदी या कुंए में प्रवाहित कर दें।
13. पूरे साधना काल में दीपक प्रज्वलित रहना चाहिए।

यह साधना वास्तव में समस्त विघ्नों की नाशक है, जो मानव जीवन के भौतिक, दैहिक व दैविक सभी प्रकार के परितापों से मुक्ति प्रदान करने वाली साधना है।

न्यौछावर— 260/-
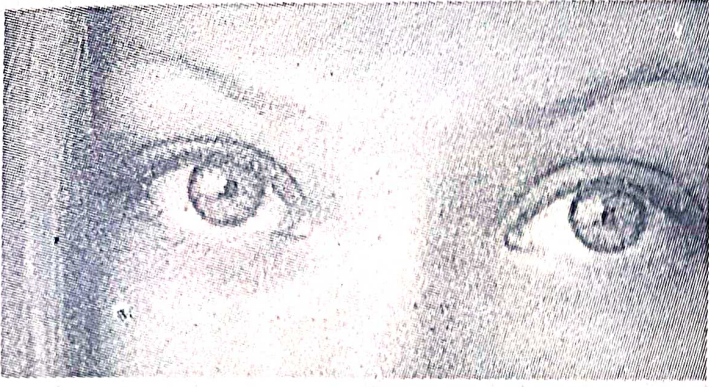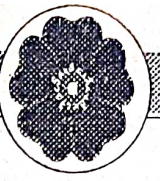
1. इस बार दिल्ली के मध्य राजा गार्डन चौक में "**नवरात्रि साधना शिविर**" अत्यधिक सफल रहा और हजारों-हजारों लोगों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस संबंध में लोगों के अनुभव लिखे पत्र इतने अधिक आये कि पूरा प्रांगण भर गया।

2. यह पहली बार हुआ कि सम्पूर्ण भारतवर्ष से आये हुए साधकों द्वारा रात भर लक्ष्मी-पूजन सम्पन्न होता रहा और लगभग सभी ने भगवती लक्ष्मी के अति विशिष्ट जाज्वल्यमान बिम्बात्मक दर्शन किये और साथ ही 24 अक्टूबर को सूर्य ग्रहण के अवसर पर उन्होंने दुर्लभ साधनाएं सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त की।

3. पिछले दिनों पूरे भारतवर्ष में समाचार फैला कि "**गणपति दुग्ध पान कर रहे हैं**" और ऐसा इस पीढ़ी ने पहली बार अनुभव किया, इसका स्पष्ट उत्तर आज तक वैज्ञानिकों के पास नहीं है। इन पृष्ठों में हम प्रतिवर्ष उस दिन का उल्लेख कर देंगे जिस दिन ऐसी चमत्कारी घटनाएं घटेंगी और '**सिद्धाश्रम साधक परिवार**' इस बात के लिए कृत संकल्प है, कि हम सिद्धाश्रम से अनुनय-विनय कर प्रत्येक वर्ष विज्ञान पर ज्ञान को प्रभावी करते हुए इस प्रकार की क्रिया सम्पन्न करायें।

4. इसी प्रकार **11 नवम्बर 96** को **मंत्रों के माध्यम से पूरे भारतवर्ष की मूर्तियों का कद बढ़ायेंगे,** जिसका उत्तर भी विज्ञान के पास नहीं होगा और अधिकतर शिविरों में पूज्य गुरुदेव समय मिलने पर कोई ऐसा कार्यक्रम, कोई ऐसी घटना घटित करेंगे, जिसको देख कर साधक तो स्तम्भित रहेंगे ही, लाख सिर पटकने के बावजूद भी विज्ञान के पास उन घटित घटनाओं को सुलझाने का कोई रास्ता नहीं होगा।

5. सिद्धाश्रम इस बात के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है, कि सन् 1996 से सन् 2000 तक हर बार साधना के माध्यम से विज्ञान को चुनौती – विनम्रता के साथ चुनौती – देने का सफल और भरसक प्रयत्न करेगा।

6. अभी से मध्य-प्रदेश की घटनाओं से भरे पत्र आने लग गये हैं, जैसा कि अक्टूबर के अंक में बताया था, कि **जनवरी 96 के अंक में मध्य-प्रदेश की गतिविधियां, फरवरी में बिहार की गतिविधियां प्रकाशित की जायेंगी, इसी प्रकार मार्च में 'उत्तर-प्रदेश की गतिविधियां प्रकाशित करेंगे।** उत्तर-प्रदेश के साधक अपने द्वारा और आस-पास में होने वाले संस्थागत उन्नति तथा स्थानीय संस्था द्वारा जन कल्याण के कार्यों का लेखा-जोखा फोटो सहित **31/1/96** तक दिल्ली के पते पर **गुरुधाम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली – 34** (इस संबंध में अक्टूबर के अंक में विस्तार से कार्यक्रम विवरण "**आंखिन देखी**" स्तम्भ में प्रकाशित है) भिजवा दें।

इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।

जीवन में पहली बार आपके लिए

इस मास का

श्रेष्ठतम उपहार

प्रत्येक शिष्य साधक और अध्येता को,
जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,
सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त

एक अद्वितीय उपहार

सम्मोहन-वशीकरण
गोपनीय यंत्र

(केवल आपके लिए)

आप क्या करें—

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें. . . अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजनों का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 360/- रुपये दो वर्षीय पत्रिका सदस्यता शुल्क + 30/- रुपये वी.पी.पी. चार्ज इस प्रकार मात्र 390/- की वी.पी.पी. से **''सम्मोहन-वशीकरण गोपनीय यंत्र''** भेज देंगे, और यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी.पी.पी. छूटने पर आपके दोनों मित्रों को अगले महीने से एक-एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर रसीद भेज दी जायेगी।

नोट : इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।

(मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रारम्भिक पृष्ठों पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

मेष : यह माह आपके लिए सामान्य ही रहेगा। सहयोगियों से कटुता बनी ही रहेगी। प्रत्येक प्रकार के वाद-विवाद में संयम बरतें। जीवन साथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। अधिकारी वर्ग आपके पक्ष में रहेंगे। राज्यपक्ष आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध होगा। प्रेम प्रसंगों से दूर रहें। मांगलिक कार्यों के योग प्रबल। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। संतान की ओर से अनुकूलता रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। यात्रा योग सामान्य।

वृषभ : आपका अपना रुका हुआ कार्य पूरा होगा तथा आपके सहयोग से किसी मित्र का भी रुका हुआ कार्य पूरा होगा। धार्मिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। आर्थिक दृष्टि से यह माह कमजोर रहेगा। कारोबारी मामलों में शिथिलता न बरतें। कला जगत के व्यक्ति मानसिक तनाव का अनुभव करेंगे। चिकित्सा व्ययभार में वृद्धि होगी। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें।

मिथुन : जो कार्य हाथ में लिया है, पहले उसे पूरा करें। मित्रों से अनबन होने की स्थिति में शांति बरतें। शत्रु आपके पक्ष में होने का प्रयास करेंगे। अधिकारी वर्ग आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। लम्बी यात्रा का योग प्रबल। यात्रा कष्टकर होगी। आर्थिक दृष्टि से तनाव रहेगा। दो लाभ-तीन खर्च होंगे। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल एवं लाभप्रद सिद्ध होगा। अदालती मामलों में अनुकूलता के योग बनेंगे। मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी।

कर्क : सहयोगियों एवं संबंधियों से किसी भी प्रकार के सहयोग की आशा करना व्यर्थ। चले आ रहे लम्बे तनाव से राहत मिलेगी। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। संतान पक्ष की ओर से चिंता रहेगी। समाज में प्रतिष्ठा बनाये रखें। कारोबारी मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। साझेदारी के मामलों में लापरवाही न बरतें। नये अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। नये कार्यों के प्रति जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रु से सावधान रहें।

सिंह : जो कार्य आप करना चाहते हैं, उसे सूझबूझ के साथ करें। स्थानान्तरण के योग बनेंगे। अधिकारियों से मेल-मिलाप बनाकर चलें। सहकर्मियों से अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में अनुकूलता रहेगी। अदालती मामलों को लेकर सतर्कता बरतें। बड़े क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। घरेलू मामलों को लेकर तनाव समाप्त होगा। व्यापारिक विस्तार हेतु यात्रा योग। यात्रा में सावधानी बरतें। प्रेम प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी। स्वयं के परिश्रम से स्थिति में सुधार होगा।

कन्या : व्यर्थ के धन व्यय से बचें। स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें, खानपान पर विशेष ध्यान दें। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग नहीं। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। मित्रों का सहयोग कम ही मिलेगा। शत्रु की ओर से सावधानी बरतें। कारोबारी मामलों में सुधार होगा। पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। दाम्पत्य सुख में अनुकूलता रहेगी। प्रेम प्रसंगों के मामलों में सतर्क रहें। प्रेम विवाह सामान्य रहेगा।

तुला : किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में सावधानी बरतें। आकस्मिक संकट से तनाव होगा। आर्थिक व्यय बढ़ेंगे। स्वास्थ्य को लेकर भी खिन्नता रहेगी। सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। मित्रों के व्यवहार में अनुकूलता रहेगी। संतान की ओर से चिंतासूचक समाचार प्राप्त होंगे। जिन कार्यों को आपने हाथ में ले रखा है, पहले उन्हें पूरा करें। धार्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग। सड़क पर वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें।

वृश्चिक : समय सामान्य ही चल रहा है, अतः प्रत्येक मामलों में सतर्कता बरतें। आकस्मिक आर्थिक संकट से तनाव होगा। जमीन-जायदाद को लेकर चला आ रहा संकट गहरायेगा। जीवन साथी से अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न बरतें। कला जगत के व्यक्ति अपने कार्यों में अनुकूलता प्राप्त करेंगे।

धनु : कारोबारी मामलों में शिथिलता न बरतें। साझेदारी में अनबन होने से चिंता रहेगी। संतान की ओर से प्रतिकूलता प्राप्त होगी। वहीं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। रुका हुआ कार्य होने से प्रसन्नता होगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। साधनात्मक दृष्टि से यह माह विशेष सफलतादायक सिद्ध होगा। यात्रा में सावधानी बरतें। अधिकारी वर्ग आपके अनुकूल सिद्ध होगा। राजकार्यों की उपेक्षा न करें।

मकर : नये कार्यों को लेकर उतावली न करें। जो कार्य हाथ में ले रखे हैं, पहले उन्हें पूरा करें, लाभ होगा। पारिवारिक मामलों में व्यस्तता रहेगी। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाकर चलें। मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। भावावेश में आकर कोई गलत निर्णय न लें, पछतावा होगा। आवास परिवर्तन के योग बनेंगे। क्रय-विक्रय में हानि होने की संभावना।

कुंभ : किया वायदा निभाने में अड़चनें आयेंगी। किसी भी प्रकार का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। स्वयं के परिश्रम से ही अनुकूलता प्राप्त होगी। जो कार्य आप करना चाहते हैं, करें; लाभ होगा। स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। मित्रों के साथ छोड़ जाने से परेशानी होगी। नये सम्पर्क भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। पुराने अनुबंधों पर लाभ होगा। मांगलिक कार्यों के योग प्रबल। समाज में प्रतिष्ठा की हानि होगी।

मीन : नवीन कारोबार के मामलों में निर्णय सूझबूझ के साथ लें। इंटरव्यू में सफलता संदिग्ध। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। अधिकारी वर्ग आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। आर्थिक दृष्टि से यह माह कमजोर ही रहेगा। सीमित लाभ - अधिक खर्च की स्थिति बनेगी। अस्वास्थता से आर्थिक व्ययभार बढ़ेगा। दाम्पत्य सुख में प्रतिकूलता रहेगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

तिथि	पक्ष	पर्व
02/12/95	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष11	मोक्षदा एकादशी
05/12/95	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष 14	पिशाच मोचन श्राद्ध
06/12/95	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष 15	पूर्णिमा व्रत
10/12/95	पौष कृष्ण पक्ष 03	रवि पुष्य योग
15/12/95	पौष कृष्ण पक्ष 08	कालाष्टमी
18/12/95	पौष कृष्ण पक्ष 11	सफला एकादशी
21/12/95	पौष कृष्ण पक्ष 14	पितृकार्ये अमावस्या
22/12/95	पौष कृष्ण पक्ष 30	देवकार्ये अमावस्या
25/12/95	पौष शुक्ल पक्ष 04	सर्वार्थ सिद्धि योग
28/12/95	पौष शुक्ल पक्ष 07	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
01/01/96	पौष शुक्ल पक्ष 11	पुत्रदा एकादशी
05/01/96	पौष शुक्ल पक्ष 15	शाकम्भरी जयन्ती
9/01/96	माघ कृष्ण पक्ष 03	संकष्ट चतुर्थी
15/01/96	माघ कृष्ण पक्ष 09	मकर संक्रान्ति
20/01/96	माघ कृष्ण पक्ष 30	मौनी अमावस्या
24/01/96	माघ शुक्ल पक्ष 05	वसन्त पञ्चमी
26/01/96	माघ शुक्ल पक्ष 07	सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग
31/01/96	माघ शुक्ल पक्ष 11	जया एकादशी

अपनों से अपनी बात . . .

- अधिकतर साधकों और शिष्यों ने टेलीफोन और पत्रों से हमें सुझाया है, कि स्थान-स्थान पर गुरुदेव की पुस्तकों और कैसेट्स की प्रदर्शनी लगाई जाए, जिससे कि उनको सुविधा रहे। **संस्था ऐसी ही व्यवस्था 'जनवरी 1996' से करने जा रही है। सबसे पहले मध्य-प्रदेश में 1 महीने तक यह 'सिद्धाश्रम रथ' घूमेगा,** इसलिए मध्य-प्रदेश के निवासी हमें इस सम्बन्ध में सूचना दें, कि वे अपने किन-किन शहरों में ऐसी प्रदर्शनी आयोजित करने का विचार रख रहे हैं।

- कई साधकों ने आग्रह किया है, कि गुरुदेव प्रत्येक महीने में एक दिन हमारे शहर मे आयें और एक दिवसीय शिविर का आयोजन करें। इसमें सिर्फ एक हॉल किराये पर लेना पड़ता है, इसके अलावा साधकों के लिए भोजन, आवास आदि देने की आवश्यकता नहीं होती। इस एक दिवसीय शिविर में एक साधना और दीक्षाएं सम्पन्न होती हैं। जो साधक दिल्ली या जोधपुर आने में असमर्थ होते हैं, वे भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इसमें केवल गुरुदेव के आने-जाने के लिए (स्थानीय शिविर व्यवस्थापक द्वारा) व्यय देने की आवश्यकता होती है। यह सुझाव सिद्धाश्रम साधक परिवार के विचाराधीन है और अनुकूल सुझाव है। इसमें महीने का कोई एक दिन निर्धारित कर लिया जाता है।

- जापान सरकार के निमंत्रण पर पूज्य गुरुदेव सम्भवत: जनवरी के अंतिम तीन दिन ''टोक्यो'' (जापान की राजधानी) में होंगे। जहां त्रि दिवसीय सेमिनार में वे अध्यक्ष होंगे और इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में **''विश्व शांति''** और **''ऑकल्ट सांइस''** पर गुरुदेव के सारगर्भित प्रवचन होंगे। इसमें 80 से भी ज्यादा देशों के विद्वान भाग लेंगे।

- जनवरी में ही **''श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर''** का भूमि पूजन और भव्य मंदिर निर्माण कार्य **''संस्था''** प्रारम्भ करने जा रही है और जल्दी ही निर्मित हो कर, यह उत्तर और दक्षिण की समन्वय शैली का दुर्लभ मंदिर सिद्ध होगा। तेजी के साथ कार्य सम्पन्न कर इस मंदिर को पूर्णता देने का प्रयास किया जा रहा है।

- हमारी सम्पत्ति तो शिष्य और साधक हैं, और प्रत्येक शिष्य और साधक — मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि हर एक शिष्य और साधक यथासम्भव ज्यादा से ज्यादा धनराशि बैंक ड्रॉफ्ट या मनीऑर्डर के द्वारा **''डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली फाउण्डेशन इंटरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट सोसाइटी''** जोधपुर के पते पर भेजें, जो कि बिना किसी स्वार्थ, इच्छा, आकांक्षा या दबाव के हो। किसी व्यक्ति विशेष के नाम से धनराशि नहीं भेजें, चेक स्वीकार्य नहीं होगा।

- माह नवम्बर में पेज 72 पर **'त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग'** की तारीख 08 अक्टूबर साधक शरद गोस्वामी को व्यक्तिगत साधना के लिए बतायी गयी थी, जो गलती से 28 अक्टूबर छप गयी है। पेज 69 पर **''शारदीय नवरात्रि''** के स्थान पर **''चैत्र नवरात्रि''** छप गया है, कृपया उसे सुधार कर पढें। पाठकों को इससे हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।

- जनवरी का महीना **'नव-वर्ष' 'उपहार महीना'** के रूप में सिद्धाश्रम साधक परिवार मना रहा है, अत: प्रत्येक व्यक्ति निश्चित रूप से 20 प्राचीन पत्रिका 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' की मंगा कर, नि:शुल्क वितरण करें और इतने ही मेम्बर बना कर पत्रिका परिवार की सदस्य संख्या बढ़ावें।

- **चलते-चलते. . .**

इस शताब्दी के अद्वितीय सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुछ दुर्लभ यंत्र सिद्धाश्रम से एक योगी के द्वारा प्राप्त हुए हैं, जो पूज्य गुरुदेव की कृपा से ही सम्भव हो सके हैं। **''दिव्य तेजस्वी सिद्धाश्रम यंत्र''** ये यंत्र उसको नि:शुल्क दिया जायेगा, जो 31 जनवरी 1996 तक पांच नये पत्रिका सदस्य बनाने का संकल्प ले कर पांचों सदस्यों का पूरा पता एक कागज पर लिख कर जोधपुर के पते पर भेजेगा। 996/- की वी.पी.पी. से यह यंत्र आप के पास भेज दिया जायेगा और वी.पी.पी. छूटने पर पांचों व्यक्तियों को पत्रिका का सदस्य बना लिया जायेगा, पर प्रथम सौ प्राप्त पत्रों पर ही यह उपहार देने की व्यवस्था है।

दिनांक : 14-15-16-17 फरवरी 1996

शिविर स्थल : टाउन हाल मैदान, मैदागिन, वाराणसी

: विशेष प्रयोग :

शिविर शुल्क : 660/-

- स्वर्ण प्रदायक कुबेर प्रयोग
- शिवप्रिया अप्सरा प्रत्यक्ष प्रयोग
- भूत भविष्य द्रष्टव्य सिद्धि प्रयोग
- महामृत्युञ्जय शिव खप्पर प्रयोग
- शत्रु संहारक काल भैरव प्रयोग
- भूत वशीकरण प्रयोग

शिवरात्रि को चारों वेदों से युक्त भगवान शिव का रुद्राभिषेक

इसके अलावा 108 प्रकार की दीक्षाओं में से प्रत्येक मनोवांछित दीक्षा सम्पन्न कराई जायेगी।

-: आयोजक :-

डॉ0 एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हॉल, रिकाबगंज, फैजाबाद (उ.प्र.), फोन : 0527-(घर) 812595, (ऑफिस) 814052

श्री एस. के. मिश्रा, 317, मधवापुर, इलाहाबाद, फोन : 0532-661551

श्री वेदप्रकाश, नई बस्ती, वाराणसी, फोन : 385759 ● श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, फोन : 343131 ● सुश्री निकिता श्रीवास्तव ● श्री दीनानाथ यादव, फोन : 386044 ● श्री रामनारायण यादव, फोन : 335445 ● डॉ. श्रीमती सरोज शुक्ला ● श्री श्यामराज यादव ● श्री चन्द पाण्डेय ● श्री अशोक माली, फोन : 05414-24174

रजिस्ट्रेशन नं0 55791/93 A.H.W. पोस्टल-डी. एल. नं0 19052/93

दीक्षामनुचरेत् सुधीः

जीवन की उच्च स्थिति को प्राप्त करने के लिए यथावसर दीक्षा लेना ही बुद्धिमत्ता है. . . .
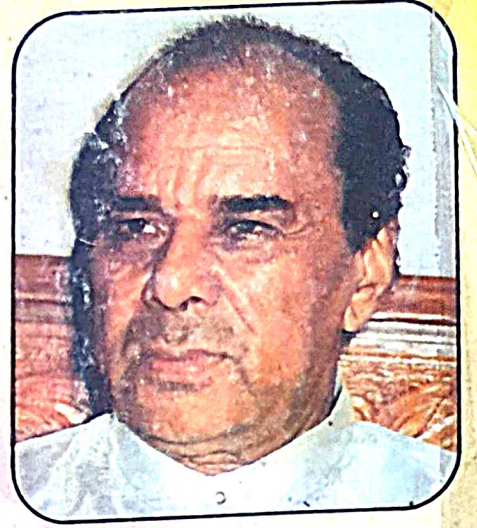
जनवरी माह में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

दिनाङ्क : 11 से 14 जनवरी 1996

11.01.96 गणपति साधना दिवस
12.01.96 महालक्ष्मी सिद्धि दिवस
13.01.96 सौभाग्य प्राप्ति दिवस
14.01.96 मनोकामना सिद्धि दिवस

और इन दिनों में भी

दिनाङ्क : 25 से 28 जनवरी 1996

25.01.96 गृहस्थ सुख प्राप्ति प्रयोग
26.01.96 व्यापार वृद्धि प्रयोग
27.01.96 हनुमान सिद्धि दिवस
28.01.96 तंत्र बाधा निवारण दिवस

दुर्लभ दीक्षाएं

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, भैरव दीक्षा, राजयोग दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, आत्म ज्ञान दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, लक्ष्य भेद दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा, वैवाहिक योग दीक्षा, तंत्र सिद्धि दीक्षा, ध्यान सिद्धि दीक्षा, अभीष्ट सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा

अब जोधपुर में भी दीक्षा कार्यक्रम

4.5.6.7 जनवरी 1996

इन दिवसों में पूज्य गुरुदेव जोधपुर में रहेंगे व विशेष दीक्षा प्रदान करेंगे. . . इच्छुक साधक उपरोक्त दिवसों पर जोधपुर पहुंच कर मिल सकते हैं और विशेष दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209

306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34
फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

नोट : 4 से 7 जनवरी को जोधपुर में तथा 11से 14 और 25 से 28 जनवरी को दिल्ली में पूज्य गुरुदेव दीक्षा प्रदान करेंगे।

अंक -12 वर्ष -15